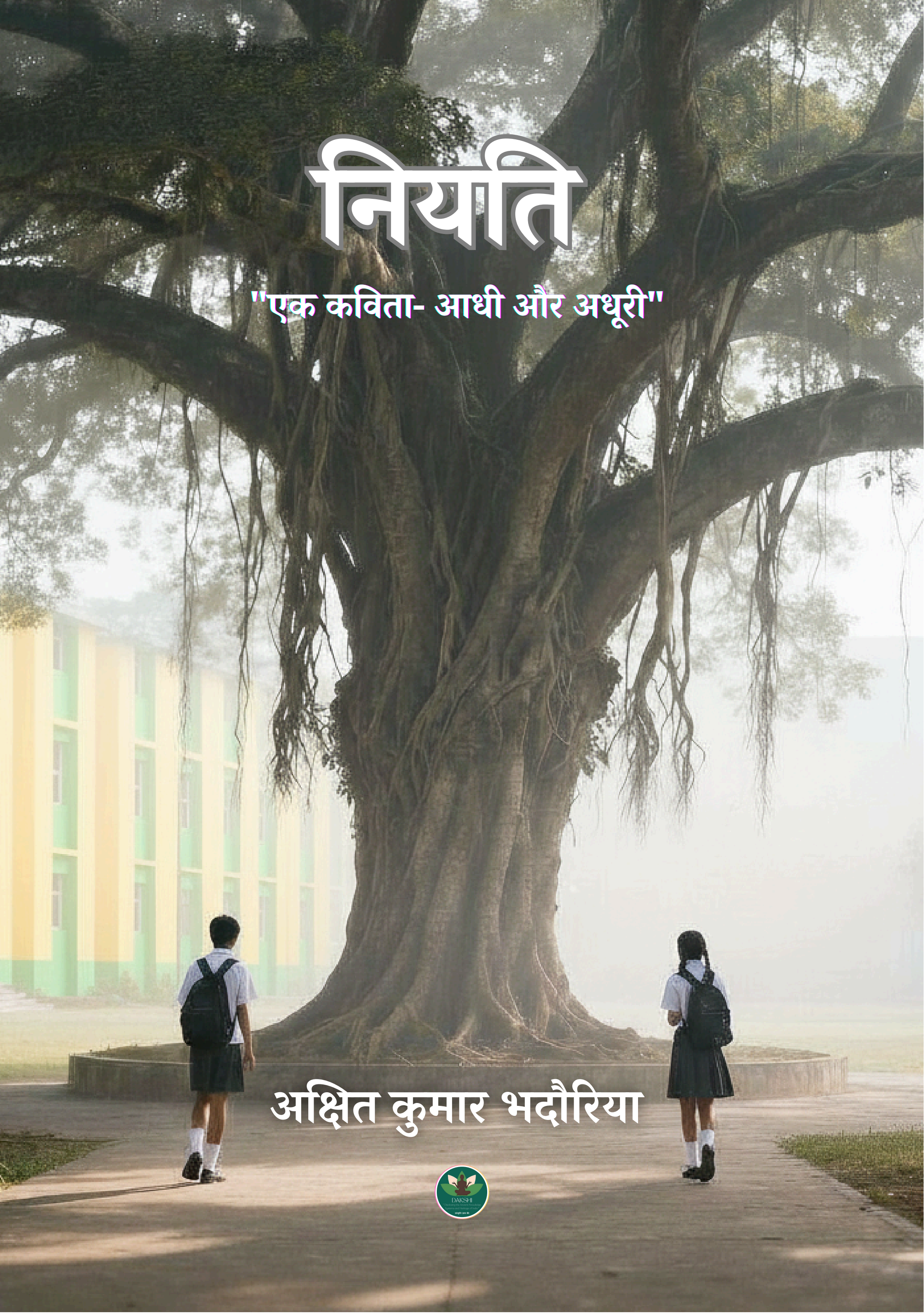

नियति

"एक कविता- आधी और अधूरी"

अक्षित कुमार भदौरिया

नियति

"एक कविता- आधी और अधूरी"

अक्षित कुमार भदौरिया

© सर्वाधिकार दाक्षी ट्रस्ट

"प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी भाग (पूर्ण अथवा आंशिक) का पुन:प्रकाशन, कॉपी, स्कैन, पुनः प्राप्त करने की सम्भावना वाली व्यवस्था में संग्रह, रिकार्डिंग अथवा किसी भी अन्य रूप में अथवा किसी भी साधन से, इलैक्ट्रॉनिक और मैकॅनिकल साधनों सहित परन्तु केवल इन साधनों तक ही सीमित नहीं और भी किसी अन्य साधन से अग्रसह करना, प्रतिबन्धित है।"

प्रथम संस्करण - नवंबर २०२५

प्रकाशकः

दाक्षी प्रकाशन; दाक्षी साहित्य परिषद्
दाक्षी ट्रस्ट का प्रकाशन विभाग, द्वारका सेक्टर २३ ब, नई दिल्ली, ११००७७
भारत टेली: +९१ ७०४२२६२२८९
ई-मेल: dakshimovement108@gmail.com
वेब साईट: www.dakshimovement.in

ISBN: 978-93-343-8606-6

राम ॐ शिव

सभी प्रेम करने
वालों को समर्पित

पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति
(प्रभु के काव्य को देखो, न मरता है न कभी पुराना होता है ।)
- अथर्ववेद

शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्
(शब्द और अर्थ का समन्वय काव्य है।)
- भामह

संक्षेपात् वाक्यमिष्टार्थव्यवच्छिन्ना, पदावली काव्यम्
(संक्षेप से जो वाक्य होता है, उसका नाम काव्य है।)
- अग्नि पुराण

शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली
(इष्ट अर्थ से युक्त पदावली ही काव्य शरीर है।)
- दंडी

काव्य शब्दोयं गुणलंकार संस्कृतयोः शब्दार्थयोर्वर्तते
(गुण और अलंकार से युक्त शब्दार्थ को काव्य कहते है।)
- आचार्य वामन

गुणवदलङ्कृतंच काव्यम्
(गुणों और अलंकारों से युक्त वाक्य का नाम काव्य है।)
- राजशेखर

अनुक्रम

प्रस्तावना	1.
अध्याय 1:- प्रेम की एक अनोखी कविता	3.
अध्याय 2:- फ़ोन नंबर	10.
अध्याय 3:- हाउस कार्य	16.
अध्याय 4:- ट्रुथ एंड डेयर	24.
अध्याय 5:- वीडियो कॉल	27.
अध्याय 6:- बारह दिसंबर की बारिश	32.
अध्याय 7:- ट्राइमैक्स	37.
अध्याय 8:- हमेशा देर कर देता हूं	41.
अध्याय 9:- प्रेम और दर्शन	45.
अध्याय 10:- एक अनार सौ बीमार	51.
अध्याय 11:- म्यूज़िक क्लास	55.
अध्याय 12:- खिड़की	60.
अध्याय 13:- तीसरा पक्ष	70.
अध्याय 14:- चौराहा महाज्ञानी है	75.
अध्याय 15:- पहला प्रेम	79.
अध्याय 16:- घर लौटना	85.
अध्याय 17:- नेति नेति	90.
अध्याय 18:- महामारी	94.

प्रस्तावना

छात्र जब विद्यालय में होता है तो उसके विचार बन रहे होते हैं, वह अपने भविष्य की कल्पनाओं में होता है और एक राह को खोज रहा होता है। नियति; एक ऐसी प्रेम कहानी है जिसमें युवक और युवती में प्रेम होते हुए भी प्रेम दिखाई नहीं देता, वह अपने यथार्थ को नकारते रहते हैं। ये कहानी से अधिक एक कविता है, जिसमें असंख्य संभावनाएं हैं ऐसे संभावनाएं जिनका पूर्ण होने पर संशय है फिर भी उनके प्रति उतनी ही निष्ठा से कार्य किया जाता है।

नीर और नियति का प्रेम संघर्ष, परिस्थिति प्रतिकूलता, परीक्षाओं और सामाजिक बंधनों से भरा हुआ है। इसलिए ये कविता रूपी कहानी सिर्फ़ एक प्रेम कथा न होते हुए प्रेम दर्शन का एक वृतांत बन जाती है जहां दोनों नेति नेति के सिद्धांत का सहारा लिए बढ़ते जा रहे हैं और ढूंढना चाह थे हैं अपने प्रेम रूपी ब्रह्म को जहां पहुंच वह हो सकें सच्चिदानंद स्वरूप। इस कहानी में आपको लोक जीवन, विद्यालय का निस्वार्थ प्रेम, सामाजिक विवेचना, प्रेम का दर्शन और भवसागर से भरे व्यक्तित्वों का दर्शन होगा। लेखक का कार्य है लिखना, उसकी समीक्षा करना उसका कार्य नहीं इसलिए ये कहानी भी प्रेम का लेखन है जिसकी समीक्षा पूरा प्रेमी वर्ग करेगा। स्कूल, कॉलेज, खाली कमरा, सड़कों और सुनसान छत पर घटित इस कहानी में यथार्थ भी है और यथार्थ से आदर्श तक पहुंचने की यात्रा भी, प्रेम आदर्श है प्रक्रिया यथार्थ।

नेति नेति का अर्थ है न इति न इति सो इन्हीं दो शब्दों से मिलकर बनता है नियति, इन शब्दों में बहाव है, वही बहाव जो जल में होता है सो उसी बाहर के कारण नियति को धारण करने वाले व्यक्तित्व का नाम पड़ा नीर। नीर और नियति अद्वैत के मुख्य सिद्धांत नेति नेति के सहारे ही अपने प्रेम की इस कहानी रूपी कविता को रच रहे थे या कहूं तो ये उनके उन संचित कर्मों का परिणाम था जो जल न पाए और बन गए उनका प्रारब्ध।

यह वृतांत भले ही इस कश्मकश में हो कि इसे कहानी कहा जाए या कविता। परंतु अगर ये कहानी नियति की है तो निःसंदेह ही इसे उपाधियों की कोई आवश्यकता ही नहीं, क्योंकि अंत में ये सब बन जाना है सच्चिदानंद स्वरूप जिसको चाहें कहानी कहा जाए चाहें कविता वह दोनों ही अवस्थाओं में मुक्त है, ऐसे ही ये प्रेम वृतांत इन उपाधियों से मुक्त है, ये अमर है, ये अमर है। इस लेखन को पूर्ण करने के लिए मैं मुझसे जुड़े हर एक ब्रह्म अंश को धन्यवाद ज्ञापित करता हूं जिनके सहयोग से मैं ये कार्य कर पाया।

- अक्षित कुमार भदौरिया

प्रेम की एक अनोखी कविता

प्रेम कभी एक कहानी नहीं होता वो होता है वास्तविकता में पिरोई हुई एक कविता, जिसका आधार उतना ही है जितना इस पृथ्वी के लिए सूर्य का, जल के लिए उसकी शीतलता का और अग्नि के लिए उसकी ज्वाला का । इसी प्रेम के जंजाल से पनपती है पल भर में हजारों कहानियां परंतु हर कहानी पूरी नहीं हो पाती इसीलिए वो रह जाती है एक कविता जो की वास्तविकता का चोला पहने बैठी है और चूंकि वास्तविकता है, सत्य है तो उसका अंत तो हो ही नहीं सकता इसीलिए वो कहानी की जगह बन जाती है कवि की एक रचनात्मक कविता जिसमें कुछ भी समाप्त नहीं होता न ईर्षा न काम न प्रेम न क्रोध बस भरी होती है प्रेम की असंख्य आशाओं से और निहारती रहती है अपने प्रेम को बिना किसी इच्छा के समर्पण के भाव से ।

ऐसी ही हजारों कहानियां में से एक कहानी या कहें हजारों कहानियों का भाव लिए ये एक कहानी है; कर दी न आपने भी समझने में गलती। हजारों भावों का ये समागम जिसका कोई अंत नहीं वो कहानी नहीं और बन जाती है हजारों के व्यक्तित्व को छूकर आई एक सुंदर कविता।

दरअसल, बात उस समय की है जब ज़माने में तो फोन आ गया था परंतु बच्चों के हांथ में अभी तक नहीं, तो बच्चे फोन के स्थान पर अपनी मस्ती में मग्न रहते थे। न धूप की गर्मी उनका कुछ बिगाड़ सकती थी ना बापू की छड़ी उनको घर में ज़्यादा देर तक बंद करके रख सकती थी, परंतु कहते हैं ना कि समय से सब बदल जाता है, शायद समय सब बदल देता है इसीलिए उसे सबसे शक्तिशाली कहा जाता है।

ऐसे ही समय के फेर ने बहुत कुछ बदल दिया था, अब माता-पिता फोन में व्यस्त हो गए थे और बच्चे प्रेम में । ऐसा नहीं है की फोन आने के बाद से ही प्रेम का चलन शुरू हुआ, प्रेम तो वो भाव है जो ब्रह्मांड के उद्गम के साथ ही इसमें व्याप्त हो गया या कहूं तो पुरुष और प्रकृति के प्रेम रूपी मिलन से ही इस संसार का बीज सृजित हुआ, भारत ने इसे सांख्य की धारा में पिरो समाज के सामने प्रस्तुत किया। परंतु फोन ने प्रेम को एक नया मोड़ दिया, ये टेक्नोलॉजी के अतिरिक्त प्रेम में भी क्रांति के रूप में ही आया।

एक रोज़ की बात है एक छोटे से कमरे में एक कन्या बैठी हुई है, घर छोटा है सो पूरा परिवार एक साथ सो रहा है, रात्रि में चंद्रमा सर के ऊपर तक चढ़ चुका है और वह कन्या सोने के लिए लेट ही रही होती है कि उसके फोन पर देर रात किसी नंबर से आता है एक “hii” । मैसेज की आवाज़ थोड़ी तेज़ सुनाई देती है, परिवार उठ न जाए इसलिए वह हड़बड़ी में जल्दी से फोन उठा लेती है और जो उसने देखा वह आगे आने वाले समय में बदल देगा दो जीवन के भविष्य को । आश्चर्यजनक बात ये नहीं की किसका था ये संदेश, अद्भुत बात ये है की प्रेमी के “hii” भेजते ही प्रेमिका तुंरत उसको उत्तर में ये पूछने की बजाय की कौन है वो? उसका उत्तर आता है......“नीर” ?

नीर उत्तर देता है तुमने मुझे कैसे पहचाना “नियति” ! और यहीं से शुरू होती है ये कहानी रूपी कविता जो की हजारों भावों, प्रेम में परिश्रम का उच्चतम प्रयास, प्रेम के दर्शन और प्रेम की परीक्षाओं से भरी पड़ी है ।

परंतु ये कहानी यहां से शुरू नहीं होती क्योंकि इस वक्त दोनों ही 10 “वि“ कक्षा के छात्र हैं, ये शुरू होती है 9 ‘वि’ कक्षा के नीर और उसी की कक्षा के दूसरे भाग में पढ़ती एक सुंदर कन्या नियति से । नौवीं में आने का बोझ और नए नए बड़े होने की चाह बहुत कुछ बदल देती है ।

हमारे यहां नौवीं में पढ़ाई के बोझ के साथ साथ बच्चे समझदारी का बोझ भी संभालने लगते है । नीर जो की एक शांत स्वभाव के बालक के साथ साथ अपनी कक्षा का कक्षानायक भी था। घर में अपने गुस्से के लिए प्रख्यात नीर, स्कूल में अपने तेज़ बुद्धि और नेतृत्वकौशल के लिए जाना जाता था। यूं तो परंपराओं के प्रति उसका ज्ञान अद्भुत था, एवं उसके व्यक्तित्व में एक भिन्नता हमेशा ही दिखाई देती थी। स्कूल ड्रेस में घूमता वह बालक, अपनी शर्ट की जेब में पूरे सात अलग अलग पेन लगाकर घूमता था, न जाने क्यों वह ऐसा करता होगा, ये प्रश्न मेरे मन में आज तक हिलोरे लेता है।

वह अपनी संस्कृति व धरोहर के लिए प्रसिद्ध शहर ग्वालियर के एक छोटे से विद्यालय में पढ़ाई करता था। कई वर्षों उस विद्यालय में बिताने के बाद अपनी शाख तो बखूबी बैठाई थी उसने । कक्षा नायक होने के कारण सब उसे खडूस और अहंकारी बताया करते थे जो की उसके शांत व्यवहार के कारण भी था, पर असल में जो उसे जानते थे वह उसके असली व्यक्तित्व से परिचित थे कि वह कितना बड़ा दानी व सबकी मदद के लिए तत्पर व्यक्ति था। शायद गांव से आया एक लड़का कितना ही शहर में बोलेगा इसी कारणवश वो खडूस हो गया। उसे विद्यालय से सब कुछ मिला, नौवीं तक वो पढ़ने में भी उच्च था और बाकी सभी कार्यों में भी ।

बस दो चीज से उसको कुछ खास नाता नहीं था स्त्री और प्रेम । क्योंकि शायद परिवार का डर और पढ़ाई से एकाग्रता हट न जाए बस इन्हीं कारणोंवश वो इन दोनों चीज़ों से दूरी बनाकर रखता था । परंतु बदलाव संसार का नियम है, परिवर्तन की एक मात्र स्थिर वस्तु है और बदलाव की जकड़न से इस संसार में कोई नहीं बच सकता तो नीर का व्यक्तित्व कैसे बच जाता । नियति को आए हुए भी दो वर्ष हो गए थे विद्यालय में परंतु आश्चर्य की बात ये है की दो वर्ष तक नीर और नियति एक दूसरे को ढंग से जानते तक नहीं थे बात करना तो दूर की बात है ।

नियति के व्यक्तित्व के आधे घड़े में सौम्यता और आधे घड़े में चंचलता थी वह एक सीधी साधी सी एक कन्या थी जो सबके मन को मोह लेती थी, अधिक बोलना उसे भी न भाता था दो वर्षों तक तो नीर को ही ज्ञात नहीं हुआ था कि वह उसकी ही कक्षा की हिस्सा थी।

नौवीं में पहली बार समय ने अपनी गति को पलटा और नीर के व्यक्तित्व को भी । प्रेम की छाया नीर पर भी पड़ ही चुकी थी । विश्व में ऐसा कोई व्यक्ति न कभी हुआ न शायद कभी हो सकता है जिसपर प्रेम की छाया कभी न कभी ना पड़ी हो । शायद नीर के जीवन में वो पल आ चुका था ।

लोग कहते हैं की जोड़ियां भगवान के घर से बनकर आती हैं पर नीर की जोड़ी पुस्तकालय में बन रही थी । घंटों आस लगाए बैठा रहता था नीर की शायद अब उसकी नियति उसको नियति के दर्शन करा देगी । वो समय आ चुका था, नियति के पुस्तकालय की तरफ अब कदम मुड़ने लगे थे उसका वहां रोज़ का आना जाना शुरू हो गया था चूंकि उसका आना जाना शुरू हुआ तो नीर कहां शांत बैठने वाला था ।

दोनों के कदम अब हर समय पुस्तकालय में आकर ही थमते थे । क्या यही शुरुवात थी नीर और नियति की कहानी रूपी कविता की । नीर के व्यक्तित्व में परिवर्तन आने लगा था और नियति भी उसको कहीं न कहीं भाने लगी थी परंतु उसके मन में भी वही सवाल था जो इस समय आपके मन में है “नियति का क्या”? नियति का व्यक्तित्व जटिलता से भरा है शायद ये नीर को आने वाले समय में पता लगने वाला था की नियति को समझना उससे भी ज्यादा मुश्किल है जितना की हर पुरुष के लिए एक स्त्री को समझना होता है । स्त्री को बेड़ियों में जकड़ा बताया जाता है इस समाज में पर शायद ये समझ पाना बहुत कठिन है की पुरुष की पितृ सता ही उसकी सबसे बड़ी कमजोरी बनकर सामने आती है और अगर वो उसकी कमजोरी है तो उसकी सत्ता कैसे हुई ? नीर अपने प्रेम के धागे से अपनी कहानी को बुनने लगा था कहें तो उसने ढूंढ लिया था अपनी कविता का आधार ।

कवि कभी कविता नहीं लिखता कविता पूर्ण होने के पीछे होते हैं कई आधार । कभी किसी का प्रेम उसकी कविता का आधार बन जाता है कभी किसी की मित्रता तो कभी किसी का द्वेष। शायद नीर के कविता का आधार प्रेम बन चुका था । पुस्तकालय में जिस नीर को पुस्तकें भाया करती थीं अब वह एक नई पुस्तक को निहारने लगा था; प्रेम की पुस्तक ।

नीर प्रेम की धारा में बहने लगा था और उस धारा का नाम था नियति, अब ये धारा धारावाहिक बनेगा कि नहीं ये समय के गर्भ में था। हाव भाव से बिल्कुल ऐसा आभास हो रहा था की दोनों एक दूसरे के प्रेम की तरफ आकर्षित होते जा रहे थे, या शायद हमने बहुत जल्दी कर दी निष्कर्ष निकालने में।

जिस पुस्तकालय में कभी पन्नों की आवाज़ गूंजा करती थी अब वहां बजने लगी थी प्रेम की शहनाई , "कितना आसान होता है ना सपनों में किसी के प्रेम को पा लेना", परंतु हकीकत तो कुछ और ही होती है । ऐसे ही नीर और नियति का प्रेम धीरे धीरे दोस्ती का रूप लेने लगा और वो दोनों मित्र बन गए थे, "सिर्फ मित्र" ।

दोनों में बातचीत शुरू हो गई थी हल्की- फुल्की, मजाक मस्ती तक भी पहुंच गया था माज़रा और धीरे धीरे नीर के मन में भी विचारों की उथल पुथल शुरू होने लगी थी । जब जब व्यक्ति विचारों के जाल में फँसता है तो वह खो बैठता है सोचने समझने की शक्ति और पड़ा होता है बस विचारों के जंजाल में । शायद नीर का हाल भी कुछ ऐसा ही था की वो मित्रता को कुछ अधिक ही समझ रहा था या शायद सही ही समझ रहा था, पुस्तकालय नीर के मन में चल रहे युद्ध का कुरुक्षेत्र बन चुका था।

मित्रता से अधिक का विचार अभी एक ढकोसला मात्र था क्योंकि अगर नियति ने अपनी नियति न बदली होती तो शायद नियति नीर की हो चुकी होती । ढीले प्रेम की डोर से नौवीं बीतती जा रही थी । सब अच्छा था कहें तो ज्यादा ही अच्छा था उस समय के हिसाब से क्योंकि शायद उस प्रेम को आज के प्रेम की तरह चाह नहीं थी किसी शरीर की, अब चूंकि ज़्यादा अच्छा होना भी अच्छा नहीं होता सो ऐसा ही प्रतीत होने लगा था, उस समय के प्रेम की परिभाषा में भिन्नता थी।

उसे तो बस आत्मा चाहिए थी और इसीलिए नीर की तरफ से होता वो प्रेम सच में प्रेम था जिसका स्वभाव एक आत्मीय भाव था ना की शारीरिक आकर्षण । परंतु ये कह पाना मुश्किल है की क्या नियति उस बात को समझती थी ? इसका उत्तर तो कविता के आगे आने वाले भाग में ही मिल पाएगा ।

खेर, ऐसे ही वह मित्रता प्रेम ना होते हुए भी धीरे धीरे विद्यालय की मशहूर प्रेम कहानियों का हिस्सा बनती जा रही थी । शायद अभी ये कह पाना मुश्किल होगा की वो प्रेम कहानी, कहानी बन पाई या सिर्फ कविता बनकर रह गई; " आधी और अधूरी " !!

परंतु कभी कभी कुछ कविताएं ऐसी होती हैं जो कहानियों से कई ज्यादा बड़ी और लंबी होती हैं और वो सीख दे जाती हैं जो बड़ी बड़ी कहानियां में भी नहीं मिलती, क्या पता ये कविता वो काम कर जाए या शायद कृष्ण ने सुन ली तो कहानी बन जाए । पर वो क्या किसी की कहानी बनाएगा जिसकी खुद की कविता भी पूरी नहीं हो पाई ; "पर कहते हैं ना ग्रुप का सबसे अकेला और बिना प्रेम वाला बच्चा सबसे अच्छे प्रेम परामर्श देता है"; क्या पता नीर के लिए कृष्ण वो काम कर दें ।

इसी के साथ पूरी नौवीं ऐसे ही प्रेम की आस लगाए बीत जाती है और बात चीत भी सिर्फ स्कूल तक सीमित रहती है । नीर स्कूल समय से पहले पहुंच जाता था कि शायद इसी बहाने वह नियति के आने का इंतजार भी कर सके या शायद उससे मिलने की अभिलाषा उसे घर पर ज्यादा देर रुकने नहीं देती थी । " प्रेम होता ही ऐसा है और अभी तो प्रेम हुआ भी नहीं था तब ये हाल है तो तब क्या हाल होगा जब प्रेम हो जायेगा या प्रेम को एक नाम मिल जायेगा;
शायद तब ये हाल न हो, क्योंकि "प्रेमी से आपको तब तक दुख मिलता है जब तक वो आपका नहीं हो जाता उसके बाद तो आपकी ईर्षा, आपका क्रोध उसके लिए प्रेम बन जाता है और खत्म हो जाता है आत्मा रूपी प्रेम" ।

इतने सारे परिश्रम के बाद भी नीर विफल रहता है अपने प्रेम को जता पाने में की वो उसको प्रेम करता है। पूरा साल ऐसे ही बीत जाता है पर ऐसा नहीं की वो साल सुखद नहीं रहा । पूरा वर्ष हजारों ऐसी छोटी छोटी खुशियों या कहूं तो कहानियों को बनाकर चला जाता है जिसका अंदेशा सिर्फ नीर लगा सकता है क्योंकि उसने संजोई होती है वो खुशियां अपने रातों के जागरण और दिन की नींद में ।

उन्हीं छोटे छोटे पल के सहारे जो उसने नियति के साथ बिताए होते हैं, वो काट लेता है अपना पूरा वर्ष बिना किसी नोक झोंक के क्योंकि अभी उसको कोई आशा नहीं होती है सामने वाले से की वो भी उसको प्रेम करे परंतु कब तक रह पाता है व्यक्ति प्रेम की रस्सी की एक डोर पकड़कर, आखिर कभी न कभी तो डोर गिर ही जाती है । अब इतना वक्त और इतने विचार उत्पन्न करने के बाद नीर के मन में जागने लगती है आशा, प्रेम की ! क्योंकि शायद नियति भी नीर को वो आभास कराने लगी थी की दोनों एक दूसरे के अच्छे मित्र हैं पर नीर को कहां स्वीकार थी; “मित्रता” !!

इसी सुंदर आभास के साथ नीर और नियति दोनों ही प्रवेश कर जाते हैं दसवीं कक्षा में और यहां से शुरू होता है नीर की नियति का एक नया अध्याय । याद है न आपको वो मैसेज जो नियति के फोन पर आया था ! शायद वही “Hii” आगे चलकर लिखने वाला था एक कविता रूपी कहानी और बदलने वाला था नीर की नियति को या कहें तो नीर और नियति को...........;!!

!! प्रथम अध्याय समाप्त !!

फ़ोन नंबर

“अध्याय बदलने से कहानी नहीं बदलती नियति”; नीर की धीमी सी आवाज़ में बोले गए ये शब्दों का अर्थ क्या था ? ऐसा क्या हुआ दोनों के बीच जो एक नए अध्याय की तरफ़ ले गया कहानी को और क्या था वो अध्याय जो इनकी कहानी में एक मोड़ बनकर आया । अगर ये कहानी होगी तो इसका उत्तर आपको अवश्य मिलेगा पर अगर ये कविता हुई तो शायद रह जायेगी; “आधी और अधूरी” ! बिना किसी उत्तर के । परंतु इतना आसान कहां होता है किसी भी उत्तर का मिलना, उत्तरों के लिए जूझना पड़ता है कुछ अनचाहे सवालों से, मन को प्रश्नों के जंजाल से निकालना कहां होता है इतना आसान !!

पर एक उत्तर के लिए तो नीर भी आस लगाए ही बैठा था की कैसा होगा वो पल जब वो उत्तर आयेगा जो वो सुनना चाहता है । पर क्या उसने वो प्रश्न पूछा उससे जिसके उत्तर की तलाश में उसने एक वर्ष निकाल दिया ? क्या कभी नीर वो प्रश्न पूछ पाएगा या नियति उसकी कहानी में फिर किसी अध्याय को जोड़ देगी और दूर कर देगी नीर की अपनी नियति से ! वो तो अब समय ही बताएगा ।।

मुझे पुस्तकालय का वो दिन याद आता है जब पहली बार नीर ने नियति के नैनों के साथ खेला; बहुत ही अद्भुत दृश्य था वो । नीर नियति को निहार रहा था या कहें तो खो गया था अपने प्रेमिका की मदहोशी में ! प्रेमिका ? पर वो तो मित्र थी ना । हां; यही सवाल पूछता है नीर का मन और यहीं से शुरू हो जाता है नीर के मनों का युद्ध जो की शायद कभी शांत नहीं होगा । “ क्योंकि जब पड़ता है व्यक्ति प्रेम में तो खो बैठता है सोचने समझने की शक्ति और ना वो संभाल पाता है अपने मन में उठे प्रश्न, और यहीं से शायद शुरू हो जाता है व्यक्ति के एकल व्यक्तित्व का पतन ! जब वो अपने बारे में कुछ सोच ही नहीं पाता और ध्यान एकत्रित कर देता सिर्फ प्रेम में” ।

खेर, निहारते निहारते जैसे मेरा मन भटका वैसे ही नीर का मन भी भटक चुका था । दोनों बैठे हुए थे पुस्तकालय की बेंच पर आखों ही आंखों में खेल रहे थे ऐसा लग रहा था पता नहीं कितने पुराने संबंध से बंधे हुए हैं दोनों । ऊपर आखें मिल रहीं थी और नीचे पैर और आस पास बैठे हुए लोगों तक को भनक ना हो रही थी की एक प्रेम प्रसंग उन्हीं के आस पास रचा जा रहा था । "नियति क्या तुम भी मेरे बारे में वही सोच रही हो जो में सोच रहा हूं"? नीर मन ही मन नियति से ये प्रश्न पूंछ बैठता है। "मुझे नहीं पता मैं कुछ सोच नहीं पा रही" नियति का मन ही मन दिया हुआ ये उत्तर शायद प्रेम की पहली सीढ़ी माना जा सकता था।

उसी वक्त नैन को उठाते हुए नीर इशारों ही इशारों में बता देता है की प्रेम की शुरुवात हो चुकी है उसके मन में और शायद इस दृश्य के बाद नियति का मन भी कहीं न कहीं अवश्य विचलित होगा परंतु ये सब कयास भी हो सकते हैं । क्या पता ये कहानी कुछ समय बाद भी कहानी ही रह पाएगी या बन जायेगी एक कविता; “आधी और अधूरी“ !!

नौवीं कक्षा समाप्त हो जाती है और दोनों ही दसवी में प्रवेश कर जाते हैं । बोर्ड्स, उस ज़माने में ये शब्द उपयुक्त होता था किसी भी हंसते खेलते बालक की मुस्कान को दो पल में गायब करने के लिए और शायद ऐसा ही कुछ आभास था भी नीर और नियति दोनों को ही । परंतु नीर प्रेम के जंजाल में तो फस चुका था और उससे निकलना अब उतना ही मुश्किल था जितना की एक मछली के लिए होता है मछवारे के जाल से निकल पाना निःसंदेह ही अब नीर का प्रेम वो मोड़ लेने वाला था जिसका इंतजार नीर कर भी रहा था और नहीं भी ।

उस ज़माने में किसी भी लड़की का फोन नंबर लेना बहुत मुश्किल था और शायद सिर्फ मुश्किल ही नहीं बहुत जोख़िम भरा भी था क्योंकि बहुत कम लोगों पर खुद के फोन हुआ करते थे । नीर ने भी वही कोशिश शुरू कर दी नंबर तो नहीं मिला पर मिल गई नियति की फेसबुक आईडी उस समय फेसबुक का चलन भी ऐसा ही था जैसे कभी खेत के लिए बैलों का हुआ करता था ।

कक्षा की बात चीत अब फोन तक पहुंच चुकी थी । शायद फेसबुक एक नया जरिया था प्रेम को प्रगट करने का तो बात शुरू भी हुई और लंबी चली भी । उस वक्त के कुछ प्रख्यात सवाल हुआ करते थे जो हर प्रेमी अपनी प्रेमिका से पूछना चाहता था की क्या है उसका पसंदीदा रंग, क्या है उसे खाने में पसंद, क्या है उसका सबसे पसंदीदा गाना और क्या उसके लिए सबसे जरूरी है रोना या खाना । बड़े गहमागहमी के बाद नीर को इन प्रश्नों का उत्तर प्राप्त हुआ क्योंकि शायद नियति जैसा कोई नहीं था ।

नीर के हर प्रश्न पर उसका उत्तर आता था " क्यों जानना है, क्या करेगा जानकर" !! अब उसे क्या पता क्या करेगा ये तुम्हारे बारे में जानकर । कई दिनों के बात चीत के बाद कुछ जानकारी नीर को नियति के बारे में मिली एक सबसे अलग जानकारी थी की उसे अंग्रेजी गाने पसंद थे और नीर ठहरा बेचारा अंग्रेजी का धुर विरोधी । इसलिए नहीं की उसकी अंग्रेजी कमजोर थी बल्कि इसलिए कि नियति से भी ज्यादा उस समय अगर उसे किसी चीज से प्रेम था तो वो थी राष्ट्रभक्ति ।

नीर के व्यक्तित्व को यूं समझा जा सकता है की हमेशा स्कूल में अलग और नया दिखने के लिए कुछ ना कुछ करता ही रहता था या कहें शायद नियति की ओर आकर्षण ने उसे ऐसा बना दिया था की कैसे भी पड़े किसी भी कारण से बात हो पर नियति से उसकी बात हो । मुझे याद है जब नीर स्कूल में अपने कोट की जेब में सात पेन लगाकर जाया करता था कुछ शौख के कारण और कुछ प्रेम विवश । नीर के घर पर था एक सुंदर बगीचा और उसमे बड़े सुंदर गुलाब खिला करते थे तो वो रोज गुलाब लेकर आया करता था स्कूल शायद किसी को देने के लिए नहीं बस ऐसे ही । और शायद अब उस गुलाब का हकदार उसको मिल गया था पर क्या वो गुलाब पहुंचा कभी उसके हकदार के पास ? ये तो नियति ही बताएगी नीर की नहीं समय की ।

उस गुलाब ने जो छवि बनाई थी नीर की विद्यालय में वो शायद एक मकसद और पूरा करने वाली थी जिसका जिक्र कहानी या कहें कविता के शुरुवात में हुआ था पर अभी रुकिए अभी समय नहीं आया है उस प्रश्न का उत्तर देने का पर ये गुलाब कांड बहुत खास है इस कहानी में ।

जैसा कि नीर फेसबुक पर वार्तालाप की क्रिया को आगे बढ़ा चुका था और महीनों उसपर बात हो चुकी थी तो अब उसके मन में एक प्रश्न था की क्या नियति उसकी अच्छी दोस्त बन चुकी है ? परंतु उस समय अच्छी दोस्तियां बात चीत से नहीं किसी के पास किसका व्हाट्सएप नंबर है उससे नापी जाती थी पर नीर के पास तो नियति का नंबर था ही नहीं । इस समय नियति का एक मित्र हुआ करता था, आदर्श ! जो की नीर का भी मित्र था पर;" जब बात लड़की की हो तो कौन कहां और कब सुनता है पुराने मित्र की बात "; शायद ऐसा ही कुछ हुआ भी । बहुत कोशिश की नीर ने नियति के नंबर के लिए पर उसे वह नहीं मिला, नियति से सीधे नंबर मांगने की उसकी हिम्मत न थी। नियति के उस दोस्त के पास था उसका नंबर पर ईश्वर प्रेम परीक्षा जो ले रहा था इतनी आसानी से कैसे मिलता नंबर । मुझे आज भी याद है नीर की वो कोशिशें जो उसने सिर्फ एक नंबर के लिए की । चार घंटे की बात चीत हुई फोन पर नीर और आदर्श के बीच । उस समय चार घंटे किसी से फोन पर बात करना एक बहुत बड़ी उपलब्धि हुआ करती थी पर नीर के लिए वो उपलब्धि बिल्कुल नहीं थी । क्योंकि चार घंटे गिड़गिड़ाने के बाद भी आदर्श ने नियति का नंबर नीर को नहीं दिया ।

नीर को नियति का नंबर मिलने का किस्सा इस कहानी का एक और हिस्सा है जो इस कहानी को कहानी नहीं बनाता और छोड़ देता है एक कविता के रूप में, "आधी और अधूरी" । एक रोज़ की बात है, नीर किसी काम से कक्षा में बैठा होता है और निहार रहा होता है अपने मन में नियति की सुंदर सी तस्वीर । इतने में नियति उसी खाली कक्षा में प्रवेश करती है और ये शायद पहली बार ऐसा होता है जब नीर और नियति एक कक्षा में अकेले होते हैं । कहने को तो ये विधाता का दिया हुआ सुंदर मोका था जो उपहार स्वरूप नीर को मिला था पर नीर अपने होश में होता तो कुछ कह पाता न । नीर नियति से पूछता है " तुम यहां कैसे?" नियति का उत्तर जो आया शायद उसकी उम्मीद नहीं की होगी कभी नीर ने; "तुझसे मिलने आई थी" ये शब्द नीर के मन को अंतर्मन तक आभास करा देते हैं की बस हो गया प्रेम । पर इतना आसान होता है क्या प्रेम का मिल जाना , पर कौन समझाए इस मासूम से मन को जो की उसकी हर छोटी बात को प्रेम मान बैठ जाता था ।

कुछ पल दोनों उसी कक्षा में साथ में बैठते है मित्र की भांति बात चीत कर लेते हैं, नीर प्रेम के कटाक्ष बीच बीच में छोड़ता जाता है और उन्हीं से उसे छेड़ता जाता है। कुछ समय बात चीत के बाद दोनों मौन हो जाते हैं।
"क्या तुम सचमें मुझसे मिलने आईं थीं?" नीर ने मन में पूछा।
"हां" नियति ने मन में ही उत्तर दिया।
"क्यों कोई काम था?", नीर ने फिर पूछा।
"मैं क्या सिर्फ़ काम के लिए आती हूं?"
"नहीं नहीं मेरा वो मतलब नहीं था?"
"तो क्या मतलब था?" नियति के चेहरे पर चंचलता झलकती है।
"सच जान नही पाएगी?" नीर ने हल्की सी शर्माहट के साथ कहा!
"मैं सब जानती हूं"! नियति ने उत्तर दिया।
"काश! तू सब जान पाती" नीर के प्रतिउत्तर ने मौन तोड़ दिया।

इसी बीच किसी आकस्मिक कार्य के आ जाने के कारण नियति को उसकी मित्र बुलाने आ जाती है और वह उस कार्य को पूरा करने के लिए चली जाती है, पर छोड़ जाती है अपनी एक वस्तु उसी बेंच पर जिसपर वो बैठी थी । क्या थी ये वस्तु जो नीर की सारी चिंताओं को हर लेती है और उसके जीवन के एक नए अध्याय को शुरू करती है ।

नीर को मिल जाता है नियति का स्कूल आईडी कार्ड जिसमें लिखा होता है नियति का नंबर जिसकी मशक्कत वो इतने दिनो से कर रहा था और वो दस अंक नीर में मन में ऐसे बैठे जाते है जैसे हो करोड़ों की संपति से भरा तिज़ोरी का पासकोड । आखिर बात थी ही ऐसी और यही वो समय था जब उस नंबर की खुशी नीर को सातवें आसमान तक पहुंचा देती है । पर ये नंबर उसका तो होगा नहीं ये सवाल नीर के मन में आता है क्योंकि उस समय उसके पापा का फोन ही इस्तमाल करती थी वो, यही कहकर उसने फेसबुक पर बात करने की ज़िद्द की थी कुछ समय पहले। परंतु ये प्रश्न अभी नीर के लिए नंबर मिलने की खुशी के सामने छोटा दिखाई पड़ रहा था ।

नंबर तो मिल गया अब आगे क्या ? बहुत हफ्ते बीत जाते है पर शायद उस नंबर पर मैसेज करने की हिम्मत नीर में नहीं होती । क्या पता उसके घर में कोई उस मैसेज को देख ले । बड़ी मशक्कत के बाद एक रात आती है और नीर ठान लेता है की आज वो नियति को मैसेज करके रहेगा और उस दिन मध्यरात्रि में नियति के फोन पर एक नया नंबर चमकता है और नंबर के सामने लिखा होता है; "Hii" !! जी हां ! वही संदेश जिसकी बात हम कहानी के शुरुवात से करते आए हैं । क्योंकि शायद ये "hii" बदल देगा नीर और उसकी नियति और जोड़ देगा उसके जीवन में एक नया अध्याय । पर ये संदेश देख कर नियति का उत्तर ये पूछने की बजाय की "आप कौन?" उसका उत्तर ये क्यों आता है........

"नीर".....? ऐसा क्या हुआ था जिसकी वजह से नियति को ये अंदेशा हो चुका था कि ये नीर ही है।

!! दूसरा अध्याय समाप्त !!

हाउस कार्य

आपको वो गुलाब याद है जो नीर हमेशा विद्यालय लेकर जाया करता था । वही गुलाब की तस्वीर नीर के प्रोफाइल फोटो पर लगी हुई थी और जैसे ही नियति वो hii पढ़ती है वो समझ जाती है की ये संदेश नीर ने भेजा है और प्रश्नचिन्ह के साथ पूछती है, नीर ? !! नीर उत्तर स्वरूप, “हां” कह देता है ! “पर तुमने मुझे कैसे पहचाना?” नीर अपनी खुशी भरे मन से ये संदेश भेज देता है । नीर को ये खुशी है की उसके बिना बताए ही नियति ने उसे पहचान लिया, पर सच्चाई तो कुछ और ही है । नियति उत्तर देकर सब बता देती है । पर नीर, “तुम्हें मेरा नंबर कैसे मिला?”, ये प्रश्न पूछें जाने पर नीर चिंतित तो होता है पर मन में हल्की सी मुस्कान भर कर बोलता है, “मैं नहीं बताऊंगा” ! और फिर बार बार पूछने के बाद भी नीर उसका उत्तर नहीं देता । क्या इस प्रश्न का उत्तर नियति को कभी मिल पाएगा। अगर मिल गया तो ये कहानी हो जायेगी और नहीं मिला तो रह जायेगी एक कविता; “ आधी और अधूरी ” !!

नीर प्रेम के बिगुल को फूंक चुका था और अब पूरी आशाओं से नियति के प्रेम की ओर झुक चुका था । ये कहना बिल्कुल आश्चर्यजनक नहीं होगा की उन वर्षों में नीर की एक भी छुट्टी नहीं थी विद्यालय में शायद वो एक भी दिन नियति को बिना देखे नहीं रहना चाहता था । कक्षा एक थी पर भाग अलग थे तो एक साथ बैठने का तो सवाल ही नहीं था पर नीर की कक्षा के सामने ही नियति की कक्षा लगा करती थी । अपनी सबसे कोने वाली बेंच पर नीर बैठ जाता था क्योंकि वहां से उसे बाहर का सब दिखाई देता था और दिखाई देती थी नियति की छवि । उसके मन में नियति के लिए कोई बुरे विचार या अभिलाषा नहीं थी, था तो बस एक आत्मीय प्रेम, अटूट भाव से ।

नियति और नीर कहीं भी एक साथ नहीं रहते थे न वो एक कक्षा में थे ना वो एक कोचिंग में जाते थे और ना वो एक दूसरे के पड़ोसी थे, बाकी की प्रेम कथाओं की तरह । फिर भी ये बंधन इतना बेजोड़ बना कैसे । शायद " व्यक्ति जब आपके पास उपलब्ध होता है ना तब आपको उसकी कद्र नहीं होती, जब वो आपके लिए चौबीस घंटे सातों दिन तत्पर रहे तो आपके लिए उसकी अहमियत कम हो जाती है , शायद आपको लगने लगता है की वो आपको तंग कर रहा है ! पर ऐसा नहीं होता, कभी कभी वो व्यक्ति सच में आपके साथ रहना चाहता है हर पल बिताना चाहता है आपके साथ" और शायद यही वजह है की नीर के लिए नियति का प्रेम और बढ़ता जा रहा था क्योंकि वो कभी उसके आस पास रह ही नहीं पाता था ।

और चाहें वस्तु हो या व्यक्ति जब आपके पास नहीं होता है तो होती है आपको उसकी चाह, पूरे दिल और दिमाग पर सिर्फ वही छाया होता है । ऐसा ही कुछ नीर के साथ भी हो रहा था । नीर विद्यालय में बस हमेशा मौका देखता था की कब वो नियति के साथ वक्त को व्यतीत कर सके ।

एक बार की बात है, जब पहली बार नीर ने नियति के लिए क्लास छोड़ी शायद नीर के व्यक्तित्व के लिए ये बहुत ही अनोखा था । एक जटिल व्यक्तित्व का कठोर लड़का जो की कभी क्लास बंक मारने की सोचता भी नहीं था वो आज क्लास छोड़ कर म्यूजिक क्लास में बैठा हुआ था सिर्फ इसलिए की वो नियति के साथ वक्त व्यतीत कर पाए और निहार पाए उसे कुछ पल और। मज़े की बात तो ये थी की ये क्लास बंक करने की प्रेरणा भी उसे नियति ने ही दी थी और जो बात नियति ने कह दी ऐसा हो सकता है की नीर उसे न माने, छोड़ दी नीर ने वो क्लास । दो घंटे तक भटके उस दिन वो दोनों पूरे विद्यालय में शायद नीर की प्रेम जिंदगी में अभी तक का सबसे हसीन दिन जा रहा था वो । पर क्या ये दिन....... दिनों में बदल पाएगा ? ये तो आने वाला समय ही बताएगा...! अगर उत्तर मिल गया तो ये कहानी बन जायेगी और ना मिला तो रह जायेगी एक कविता, "आधी और अधूरी" !!

जब आप किसी के प्रेम में पड़ते हो तो आप भूल जाते हो की आपके आस पास भी एक समाज रहता है, लोग रहते हैं पर आपको किसी भी व्यक्ति से फर्क नहीं पड़ता उसे बस फर्क पड़ता है तो अपनी प्रेमिका से ।

ऐसा ही कुछ नीर के भी साथ हो रहा था , नीर को नियति के हर हरकत से फर्क पड़ने लगा था वो किसके साथ रहती है क्या करती है सब से और शायद यहीं से परेशानियां चालू हो जाती है । क्योंकि, व्यक्ति प्रेम में पड़ने के बाद उस चीज के कयास तक लगाने लगता है जो शायद न कभी हुई और न कभी हो सकती थी । शायद उसको भय होता है उस व्यक्ति से बिछड़ने का, और ये स्वाभाविक है प्रेम में ।

एक बार जब नीर कक्षा में बैठा होता है तो कक्षा के बाहर देखता है और क्या पाता है की नियति और उसी की कक्षा का एक बालक उसके साथ बड़े मजे से खेल रहा होता है , दोनों बहुत खुश दिखाई पड़ते है पर यही जब बात आती है प्रेम की तो पता लगता है की जो नीर नियति को सदा खुश देखना चाहता था वो पता नहीं उसकी उस दिन की खुशी से क्यों परेशान हो जाता है । ये नियति के खुशी के लिए परेशानी नहीं थी , नीर इसलिए परेशान था की नियति किसी और के साथ खुश थी , आदर्श याद है ना आपको ? बस !!

मुझे याद है की मेरे मित्र नीर की एक बहन हुआ करती थी कक्षा में । एक बार की बात है जन्मदिन था नीर का और नीर बहुत आतुर था उस दिन को खास बनाने के लिए पर नीर जैसे शर्मीले बालक के लिए ये एक बहुत ही कठिन कार्य था । पूरे बीस रुपए की चॉकलेट लेकर आया था नीर नियति के लिए और सिर्फ नियति के लिए! पर उसे देने की हिम्मत तो थी नहीं उसमें सो सुबह आने से लेकर स्कूल की छुट्टी होने तक उस चॉकलेट को नीर ने संभाल के रखा की शायद अब मौका पड़े उसे देने का पर मौका नहीं मिला, तो नीर ने अपनी उसी बहन को वो चॉकलेट थमा दी और बोला की वह उस तक उसे पहुंचा देगी । और ये कार्य उसने पूरा किया भी ।

एक अदभुत बात ये थी की नीर जितना शर्मिला इस मामले में उतना ही विपरीत स्वभाव का था वो एक दम सीधा और सत्य , मुंह पर बोलने वाला परंतु प्रेम में अच्छों अच्छों की बोलती बंद हो जाती है , तो नीर किस खेत की मूली था । मुझे याद है नीर ने मुझे उस रोज बताया था की उसने व्हाट्सएप पर बहुत बात की नियति से जितना वो संदेशों में बोल लेता था शायद उतना अगर सामने से बोल पाता तो ये कहानी अभी तक पूरी हो चुकी होती । पर प्रश्न तो अभी भी यही उठता है की क्या ये कहानी पूरी हो पाएगी, या फिर रह जायेगी एक कविता, “आधी और अधूरी” !!

मुझे याद है नीर मुझे उस रात जब ये कहानी सुना रहा था तो उसने एक दृश्य का ज़िक्र मेरे सामने किया था । नीर और नियति एक ही हाउस में थे, हाउस यानी स्कूल में उस समय विद्यालय के बच्चों को अलग अलग ग्रुप्स में बांट दिया जाता था हमारे विद्यालय में भी ऐसे ही कुछ चार ग्रुप हुआ करते थे जिन्हें हाउस कहा जाता था । वो एकमात्र ऐसी जगह थी जहां नीर और नियति एक साथ थे । मैंने आपको बताया था न, ना उनका कक्षा का भाग एक था ना वो पड़ोसी थे और ना एक कोचिंग पर जाते थे । सिर्फ एक जगह ऐसी थी जहां वो एक साथ थे, वो था उनका हाउस!

फिर क्या जब भी हाउस का कार्य आता दोनों मिल जाते और जितना मज़ा नीर को हाउस का कार्य करने में आता था उतना उसको किसी चीज में नहीं आता था । स्कूल की छुट्टी के बाद तक वो उस कार्य में इतने मग्न हो जाते थे की कभी कभी तो घर तक जाना भूल जाते थे, शायद यही प्रेम था जो नीर नियति से करता था । छोटी छोटी खुशियां उसके लिए जीवनदायनी का कार्य करती थीं । उसकी एक छोटी सी बात से नीर के मुख पर बड़ी सी मुस्कान आ जाया करती थी ।

एक बार उसी हाउस के कार्य के लिए सब बच्चे कक्षा में बैठे हुए थे और वो दृश्य आज भी मैं जब याद करता हूं तो मुझे नीर की वो मुस्कान याद आ जाती है जब वो मुझे ये पल बता रहा था । उनका प्रेम उस समय तक विद्यालय में प्रख्यात प्रेम कहानियों में आ चुका था शायद कहें तो प्रख्यात कविताओं में ? जो भी है समय इसका उत्तर दे ही देगा ।

हुआ यूं कि बच्चे हाउस बोर्ड के लिए चित्र बना रहे थे और उसके लिए चाहिए थे उनको रंग जो की उपर की कक्षा में रखे हुए थे अब नीर को उन्होंने बोला की वो रंग ले आओ अब नीर जाने के लिए तैयार नहीं था , तभी नीर की वो बहन बोलती की “ चले जाओ भैया शायद रंग के साथ साथ भाभी भी मिल जाएं” !

ये पहली दफा था जब किसी ने उसको भाभी कहकर बुलाया था, नीर मन ही मन शरमाया और ऊपर रंग लेने चला गया और मज़े की बात तो ये है की वहां उसे नियति मिल भी गई ।

ये नियति का खेल था या मेरा एक भ्रम पता नहीं पर दृश्य बहुत मजेदार था । वो नियति का हाथ पकड़ता है शायद पहली बार और वो दोनों भागकर नीचे आ जाते हैं सीढ़ियों से । कक्षा में बैठी वो लड़कियों को फिर मौका मिल जाता है नीर का मजाक बनाने का पर शायद उस मजाक में खिल्ली महसूस नहीं होती, महसूस होता है तो बस असीम प्रेम और आत्मीय खुशी जो मन तक को प्रफुल्लित कर देती है ।

नीर को नियति के ना तो शरीर की कोई चाह थी और न किसी अभिलाषा की जैसा की आज के समय के प्रेम में हम अधिकतर तौर पर पाते हैं । परंतु नियति का एक स्पर्श काफी होता था नीर के दिन को यादगार बनाने के लिए , पर जितना मुझे याद है शायद बहुत ही कम ऐसे यादगार दिन थे जिसमें नियति के स्पर्श ने उस दिन को यादगार बना दिया हो । एक रोज़ की बात अवश्य है जब हल्के से नीर के बालों को नियति ने सहलाया था । अब मित्र इतना भी नहीं कर सकते क्या ? मित्रता के आधार पर तो ये ठीक ही था पर नीर के लिए नियति क्या सिर्फ एक मित्र थी ? शायद इतनी कहानी पढ़ने के बाद आपको लगेगा की ये मित्रता तो नहीं ही हो सकती ये तो सिर्फ प्रेम है और इतनी जल्दी निष्कर्ष निकालना भी शायद आपके लिए घातक हो सकता था क्योंकि मैंने पहले ही कहा था की इस कहानी का हर उत्तर समय के गर्भ में है अगर वो उत्तर समय से मिल गया तो कहलाएगी ये कहानी वरना रह जायेगी एक कविता, “आधी और अधूरी” !!

ऐसे ही कई प्रसंगों से भरी होती हैं प्रेम कहानियां पर क्या ये सच में प्रेम कहानी है। व्यक्ति जब भी प्रेम की बात सोचता है वो मन से लेकर तन तक शांत हो जाता है, क्योंकि प्रेम वो आभास है जो व्यक्ति को परिवर्तित करने के लिए पर्याप्त है । अच्छे अच्छे जटिल व्यक्तियों को प्रेम ने कोमल बना दिया और भंग कर दी उनकी हजारों वर्षों की तपस्या तो फिर नीर की नियति में ऐसा क्या था जो वो नियति के प्रेम में नहीं पड़ता । प्रेम व्यक्ति को निर्मल और कोमल बनाता है, मनुष्य बचे रहने के लिए मनुष्यता से समझौते की ये एक आखिरी कड़ी होती है, शायद हम सबको इस आखिरी कड़ी से समझौता नहीं करना चाहिए, मनुष्य को रहे की वो प्रेम करे, जी भर करे चाहें फिर वो कोई वस्तु हो या व्यक्ति या क्यों न वो ईश्वर ही हो परंतु प्रेम जीवन में अत्यंत आवश्यक है क्योंकि मनुष्य बने रहने के लिए क्रूरता से समझौते की ये आखिरी कड़ी है।

और प्रेम करने के लिए ये कतई आवश्यक नहीं होता की उसके पीछे कोई कारण होगा की, जब कोई प्रेमी अपनी प्रेमिका से इज़हार करता है प्रेम का तो प्रेमिका का पहला प्रश्न यही होता है की मुझसे कैसे प्रेम कर सकता है कोई और ये प्रश्न तब और प्रासंगिक हो जाता है जब वो प्रेमिका आपकी मित्र हो । पर यही तो प्रेम है की कोई कारण नहीं अगर प्रेम के पीछे कारण आ जाए तो प्रेम कैसा ?

इसी बिना कारण का प्रेम नीर के मन में था नियति को लेकर। आज भी अगर वो प्रश्न पूछा जायेगा की क्या कारण था नीर को नियति को पसंद करने का तो प्रकृति की शक्तियों से एक ही आवाज़ आयेगी “अगर होता कारण तो क्या होता, प्रेम नहीं फिर वो सौदा होता” ! पर शायद बिना कारण के जब आप कोई चीज करते हो तो उसपर प्रश्नचिन्ह लगता ही रहता है ।

क्योंकि हमें आदत हो गई है हर वस्तु के पीछे कारण देखने की और शायद प्रेम में भी हम वही करते हैं और जब तक प्रेम करने का कोई कारण नहीं बता देते आप समाज को तब तक आपका प्रेम प्रासंगिक नहीं हो सकता और इसी भ्रम के कारण टूट जाते हैं हजारों संबंध, प्रेम कहानियां, और अधूरे रह जाते हैं कई कविताओं के आधार ।

परंतु क्या प्रेम कारण से करना चाहिए ? क्या कारण परिवर्तनशील नहीं होता और अगर कारण परिवर्तित होता रहेगा तो प्रेम कैसे परिवर्तित होने से बचा पाएगा स्वयं को । इससे ये स्पष्ट है की जिसके पीछे कारण होता है वहां पनपने लगती हैं इच्छाएं और आशाएं और जहां ये सब पनपने लगे वहां प्रेम पहुंच जाता है अपने अंतिम चरण में । पर क्या ऐसा संभव है की हम कुछ भी बिना कारण के कर सकते हैं ? शायद नहीं । तो फिर प्रेम बिना कारण के कैसे, प्रेम भी तो आप आपकी इच्छाओं और आशाओं को पूरा करने के लिए करते हैं, अपनी तृष्णा को कारण बना लेते हैं आप प्रेम को, इसके उपरांत आपकी भावनाएं बन जाती हैं आपके प्रेम का वाहन जिसपर विराजमान होकर करना चाहते हैं आप जीवन की सुखद और विवादहीन यात्रा ।

ऐसी ही विवादहीन यात्रा की चाह नीर भी करता रहता था की शायद एक दिन अवश्य ऐसा होगा जो पहले जैसा तो होगा पर मन का होगा । परंतु कहां हो पाता है मन का सदा...! स्वीकार करके बनाना पड़ता है उसे अपने अनुकूल और इसी प्रयास में नीर लग जाता है ।

उस ज़माने में एक प्रचलित खेल हुआ करता है जिसको कहा जाता था ट्रुथ एंड डेयर अलग भाषा में कहें तो इसमें व्यक्ति को या तो पूछें गए प्रश्न का सही उत्तर देना होता था या उसके बदले दिए गए कार्य को करना पड़ता था । ये एक बहुत ही रहस्यमई बात होगी की कौन सच में सच बोल रहा है इसका पता लगाना कितना आसान और मुश्किल न होता होगा । अब आप सोच रहे होंगे की मैं क्यों कर रहा हूं इस खेल की व्याख्या, तो आपकी सहजता के लिए बता दूं कि ये उस ज़माने में रिश्तों को बनाने और बिगाड़ने का कार्य किया करता था ।

कैसे ? एक छोटी सी कहानी के माध्यम से बताने का प्रयास करता हूं, तो हुआ यूं कि कक्षा के सब लोग ये खेल खेल रहे थे तभी आदर्श से प्रश्न पूंछा जाता है की वो अपनी प्रेमिका के इलावा कक्षा में किसे प्रेम भाव से देखता है अब ये प्रश्न चौकाने वाला तो था पर शायद पूंछा इसीलिए गया था क्योंकि कही न कही लोगों को भी भनक थी की वो अपनी प्रेमिका को अंधेरे में रखे हुए है ।

अब आदर्श इस प्रश्न का उत्तर तो देता है शायद मस्ती में पर यथार्थ! उसका उत्तर सिर्फ आपको ही नहीं बल्कि प्रेम की प्रासंगिक कहानियों के नायकों को भी अचंभित करने के लिए पर्याप्त था और वही दिन था जब कई समीकरण और रिश्ते बदले भी और टूटे भी, अब क्या थे वो समीकरण और उनका इस कहानी से क्या लेना देना है ये तो समय ही बताएगा । अगर उत्तर मिल गया तो ये बन जायेगी एक कहानी और नहीं मिला तो रह जायेगी एक कविता, "आधी और अधूरी" !!

जब आदर्श के मुख से उत्तर निकलता है तो सब मज़ाक मस्ती करने लगते हैं जिसका नाम आदर्श लेता है उसे भी कोई खास फर्क नहीं पड़ता है उस उत्तर से। पर वहां दो लोग ऐसे होते हैं जिन्हें ये उत्तर सुनकर असमंजस तो होती ही है पर एक अनैतिक अविचल मुद्रा में स्तब्ध हो जाते हैं । कौन थे वो दो लोग जो इससे आहत थे......??

!! तीसरा अध्याय समाप्त !!

ट्रुथ एंड डेयर

प्रेम की अधिकतम कहानियों में एक नायक होता है एक नायिका होती है एक तीसरा किरदार होता है जो उन दोनों के बीच थर्ड व्हील का काम करता है और उनके रिश्ते को तोड़ देता है और या तो लड़का उस लड़की के साथ चला जाता है या लड़की दूसरे लड़के के साथ । अभी तक इस कहानी को पढ़कर भी कहीं आपको यही न लगे इसलिए आवश्यक है की मैं आपको इससे अवगत करा दूं की ये कहानी नहीं है ये है एक कविता जहां कुछ भी पहले से आंकलन करना आपके लिए घातक भी हो सकता है और अनुचित भी इसलिए आपके मन के इस विचार को त्याग कर ट्रुथ एंड डेयर के खेल का आनंद उठाइए ।

उस ज़माने के इस प्रचलित खेल ने कई बार धमनियों की सांसों को तेज़ और धीमा किया है और नीर के जीवन को तो इस खेल ने मानों सूली पर लटके उस मुर्गे के जैसा कर दिया है जिसकी मृत्यु किए बिना ही उसे आग में झुलसाया जा रहा हो । जैसा कि मैंने आपको बताया की आदर्श के उत्तर ने दो लोगों को स्तब्ध कर दिया; वह दो लोग कुछ कह तो नहीं पाए पर उनकी पीड़ा अवश्य ही उनके चेहरे के भावों से दिखाई दे रही थी । जैसे चंद्रमा की लालिमा वायुमंडल में परिवर्तन होने से खत्म हो जाती है वैसे ही इस खेल के कारण कक्षा के वायुमंडल में जो परिवर्तन आया उससे उन दो मासूम व्यक्तियों की चेहरे की मानों रौनक ही चली गई हो, आपका प्रश्न है न कौन थे वो दो लोग ? तो वह दो लोग कोई और नहीं नीर और आदर्श की प्रेमिका थे । क्योंकि उत्तर में जिसका नाम आदर्श ने लिए था वो थी नीर के हृदय के सबसे निकट का स्थान रखने वाली नियति !

उस उत्तर के बाद खेल तो चलता रहता है पर समाप्त हो जाती हैं नीर की आशाएं, क्योंकि शायद उस एक पल के लिए मानों नीर के हाव भाव पूरे बदल जाते हैं इसलिए नहीं की आदर्श ने ऐसा उत्तर दिया और न इसलिए की उसे नियति पर विश्वास नहीं था परंतु वो प्रेम ही क्या जिसमें आपको असहजता न हो असहजता का यहां अर्थ है इनसिक्योरिटी से जिसे आज के प्रेमियों के समाज में एक बड़े ही हीन भावना से देखा जाने लगा है परंतु उस समय इनसिक्योरिटी का अर्थ बंधन नहीं होता था, होता था तो बस एक असीम भावनाओं और आशाओं से भरा प्रेम । आज कल के समाज में इनसिक्योरिटी जैसे शब्द प्रेम के स्तर को गिराने का काम करते जा रहे हैं परंतु उस समय ये अपने प्रेमी को और आज़ादी देने के काम आया करता था ।

वो प्रेम ही क्या जिसमें बंधन हो; ऐसा ही कहा है न दार्शनिकों ने ! मेरी मानों तो उन्होंने फिर प्रेम किया ही नहीं । "प्रेम का अभाव ही तो है जो एक व्यक्ति को दार्शनिक बनने पर मजबूर कर देता है" शायद जब हम प्रेम में होते हैं तो स्वाभाविक ही हमें आशाएं भी होती हैं और जहां आशाएं हैं वहां इच्छाएं भी उत्पन्न होंगी और क्या कभी ऐसा हुआ है की किसी की सभी इच्छाएं पूरी हुई हों । तो जब इच्छाएं पूरी नहीं होंगी तो उठेगा संताप और उससे उत्पन्न पीड़ा मन को दुख देना प्रारंभ कर देगी शायद इच्छाओं के बढ़ने से आपका नाश न हो इसलिए तो कन्हैया जैसे हजारों दार्शनिकों ने कहा है की आजाद छोड़ दो अपने प्रेम को क्योंकि अगर आज़ादी मिलने के बाद भी आपका पंछी आपके पास रुका रहा तो निःसंदेह ही वह आपसे सच्चा और निष्काम प्रेम करता है ।

इसी भाव को संजोते हुए नीर ने अपने मन को शांत किया और उस बात को वहीं छोड़कर खेल में आगे बढ़ने लगा । अब बोतल का ढक्कन नीर की तरफ घूम उठा और अब बारी थी नीर से प्रश्न पूछने की, बीड़ा उठाया आदर्श ने । उस ज़माने का सबसे स्वाभाविक प्रश्न यही हुआ करता था की इस खेल के माध्यम से हम एक दूसरे की प्रेमिकाओं का पता लगा सकें तो प्रश्न भी कुछ ऐसा ही आया । अब कमरे में शांति थी सब नीर का उत्तर सुनने के लिए आतुर थे, नीर खुश था की उसे ये मौका मिल रहा था उसे अब ये खेल ईश्वर का दिया हुआ एक वरदान प्रतीत हो रहा था ।

शायद पहली बार ये मौका नीर को मिला था की वह खुल के अपने मन की बात को रख पाए, नीर ने अपने मन में सभी शब्दों को पिरोना शुरू कर दिया था की उसे कैसे अपनी बात को प्रगट करना है । परंतु रुकिए ज़रा; मैंने आपको कहा था ना की ये एक कहानी नहीं की नीर से प्रश्न पूछा गया और नीर ने उत्तर दे दिया और एक सुखद समाप्ति हो गई अपितु ये तो है एक कविता हैं जिसका अंत निश्चित नहीं शायद इसीलिए नीर के उत्तर के बिना ये अभी भी है “आधी और अधूरी” ।

सत्य बोलना मानों इस खेल में अपभ्रंश का कार्य करता था, पर कभी कभी ये खेल ही था जो बहुत सी परिस्थितियों को सहज़ और असहज बनाने के लिए पर्याप्त था। वो कहते हैं न "डूबते को तिनके का सहारा" शायद ऐसे ही कई प्रसंग हुए होंगे जो नीर के लिए तिनके का सहारा थे उनमें से ये खेल एक ऐसा ही प्रसंग था। जब भी प्रेम की नाव परिस्थितियों से डगमगाती है, विश्वास रूपी तिनका ही है जो उसे बल देता है। विश्वास एक कांटे के वृक्ष की भांति होता है जो जिसमें पुष्पों की सुगंध भी होती है और कांटों की पीड़ा, हमारी प्राथमिकता क्या होगी ये हमें स्वयं चुनना होता है।

नीर बड़े कठिन विचार विमर्श और मन में उथल पुथल मचाने के बाद ये उत्तर देने ही वाला था की इतनी देर में वहां अध्यापक आ जाते हैं और उनका आगमन मात्र ही हमारे लिए ये इशारा था की ये खेल अब यहां समाप्त होता है । परंतु नीर के उत्तर का क्या ? क्या नीर कभी इस प्रश्न का उत्तर दे पाया या ये राज़ भी समय के गर्भ में दब कर रह जायेगा, इसका उत्तर भी आपको आने वाले समय में अवश्य मिल पाएगा अगर इसका उत्तर आपको मिल गया तो ये कहलाएगी एक कहानी और नहीं मिला तो ये रह जायेगी “एक कविता :- आधी और अधूरी” !

!! चौथा अध्याय समाप्त !!

वीडियो कॉल

नीर और नियति दोनों ही दसवी के छात्र हो चुके थे और अपने बोर्ड्स की तैयारी में लग चुके थे । यूं तो दोनों पढ़ने में होशियार थे परंतु दसवी तक आते आते दोनों की एकाग्रता भंग होती हुई दिखाई पड़ रही थी । नीर और नियति दोनों ही एक ऐसे फ्रेंड सर्कल का हिस्सा बन चुके थे जो पढ़ने में तो होशियार हुआ करते थे परंतु उतनी ही ज्यादा मज़ाक मस्ती में भी । शीत ऋतु के साथ ही परीक्षा का समय निकट आ रहा था और सभी बालकों की मानसिक स्थिति में एक नए परिवर्तन की ओर इशारा कर रहा था । जिस नीर के पास कभी नियति का नंबर तक नहीं हुआ करता था उससे वह घंटों व्हाट्सएप पर बात किया करता था और अगर घर वालों से बच जाए या घर वाले कहीं चले जाएं तो समय निकाल कर कॉल भी कर लिया करता था । दोनों में मानों मित्रता से ज़्यादा बहुत कुछ का आभास हमें दिखाई पड़ रहा था परंतु क्या सचमें ऐसा था या ये बस हमारा भ्रम था ये तो नीर की नियति ही बताएगी ।

दोनों उन दिनों एक ही कोचिंग संस्थान पर जाया करते थे; जी हां पहली बार दोनो एक जगह जाकर मिले यूं तो दोनों के कोचिंग जाने का विषय अलग था तो वह वहां कभी मिल नहीं पाए परंतु एक रास्ता अवश्य खुला था की ऐसी परिस्थितियों का कभी निर्माण हो की वह दोनों कभी वहां मिल पाएं और नीर की वर्षों पुरानी नियति के साथ बेंच पार्टनर बनने की आशा पूरी हो सके, परंतु ऐसा कभी हुआ नहीं । यूं तो नीर और नियति एक ही क्षेत्र में कोचिंग लेने जाया करते थे परंतु दो अलग अलग अध्यापकों के पास । घर से निकलने के क्रम में पहले नीर की कोचिंग पड़ती थी और उसी की दाईं और थोड़ा आगे निकलकर नियति की। क्या नीर और नियति की भेंट कभी इन कोचिंग संस्थानों के माध्यम से हो पाएगी या नहीं ? इसका उत्तर तो अब समय ही बताएगा परंतु इससे जुड़ा एक अद्भुत किस्सा मैं आपको अवश्य सुनाऊंगा ।

आपको लग रहा होगा की अभी तो नीर और नियति के जीवन में सब ठीक चल रहा है परंतु सबसे बड़ा खोट तो इस बात में स्वयं ही है की आपने इस कहानी को नीर और नियति की कहानी समझ लिया है, राजन अभी तो नीर और नियति का मिलन बाकी है तो ये कहानी कैसे हुई ? ये कहानी तो तब होगी जब ये प्रेम दोनों तरफ से स्वीकार किया जायेगा अभी तो न नीर इस अवस्था में आया है की वह अपने प्रेम को समाज के सामने रख पाए न नियति इस अवस्था में है की वह इसे स्वीकार कर पाए या इसपर चिंतन कर पाए; बोर्ड्स हैं न !

यूं तो सर्द हवाएं हमें बिस्तर के अंदर होने पर मजबूर कर देती हैं परंतु एक दिवस की बात है जब दिसंबर की सर्द हवाएं भी नीर की खुशी को जमा नहीं पा रही थीं और नीर के अंदर प्रगट हुई खुशी की उस ज्वाला ने मानों दिसंबर के महीने में ज्येष्ठ सी गर्मी पैदा कर दी हो । क्या कारण था आखिर नीर की उस खुशी का ? मुझे आज भी याद है की नीर ने मुझसे उस दिन घंटों बात करके ये किस्सा साझा किया था की वह उस दिन अत्यंत खुश था; 12 दिसंबर की तारीख थी वो शाम का समय था, सूर्य ढल रहा था और नीर के जीवन में एक नया चंद्रोदय हो रहा था ।

वो दिन विशेष इसलिए था क्योंकि उस दिन पहली बार नियति ने नीर को वीडियो कॉल किया था । आज के समय में तो मानों ये आम बात है परंतु में बात कर रहा हूं उस ज़माने की जब प्रेमी प्रेमिका हांथ में हांथ डालकर भी रोड़ों पर नहीं निकला करते थे और ये तो फिर एक छोटे से शहर की कहानी है या कहूं तो किस्सा है । उस समय किसी लड़की का सामने से वीडियो कॉल आना बड़ी बात हुआ करती थी क्योंकि उस समय तक प्रेमी प्रेमिका भी बमुश्किल वीडियो कॉल पर बात किया करते थे । फिर नियति का वीडियो कॉल क्यों न विशेष होता और अचंभे की बात तो यह है की ये वीडियो कॉल नियति ने कोचिंग के लिए तैयार होते हुए किया ।

नीर का फोन बजता है, उसमें नियति का नाम देख नीर अचंभित हो उठता है।

ये सामान्य कॉल नहीं था;
नीर थोड़ा सा विचार करके फोन उठाता है।
"और क्या कर रहा है" दूसरी तरफ़ से आवाज़ आती है!
"तूने वीडियो कॉल किया है?" नीर ने प्रश्न किया।
"क्या लगता है"; नियति बोली।
"विश्वास नहीं होता" नीर का प्रतिउत्तर आया।
"मुझपर" नियति चंचल हुई।
"अरे नहीं वीडियो कॉल पर" नीर वस्तुतः ये सब वार्तालाप कर ही रहा था कि ज़ोर से कुछ गिरा, क्या था वह....नीर की एकाग्रता!

ये दृश्य नीर के लिए अत्यंत ही सुखद था, वह नियति को निहार रहा था और नियति अपने श्रृंगार में मदमस्त थी । अपनी प्रेमिका को श्रृंगार करते हुए देखना अत्यंत ही सौभाग्य की बात मानी जाती थी फिर अभी तो प्रेमिका जैसे भाव का स्वीकृतिकरण हुआ भी नहीं था उस समय तो ये दृश्य मानों इंद्रपुरी और वैकुंठ की सुंदरता से भी अधिक अलौकिक प्रतीत हो रहा था । नीर लगभग आधे घंटे तक बिना कुछ बोले बस नियति को निहारता गया और नियति भी बिना कुछ बोले वीडियो कॉल चालू रखकर अपना श्रृंगार करती गई । क्या इतना काफी नहीं था ये बताने के लिए की नीर और नियति एक प्रेमी जोड़ा बन चुके हैं ?

शायद नहीं! क्योंकि अगर ये बात यहां सिद्ध हो जाती या नियति का ये कृत्य इस बात को सिद्ध कर देता की वह नीर से प्रेम कर बैठी है तो मेरे इस पुस्तक को लिखने का आधार ही खत्म हो जाता, नीर और नियति प्रेमी जोड़ा बन भी पाएंगे की नहीं इसका उत्तर तो समय के गर्भ में ही है और अगर आपको इसका उत्तर मिल गया तो बन जायेगी ये एक कहानी और नहीं मिला तो रह जायेगी “एक कविता; आधी और अधूरी” !

दोनों अपने अपने कोचिंग जाने के लिए तैयार हो चुके थे और फोन रखने का समय अब निकट आ चुका था । ये एक प्रेम करने वाले के लिए सबसे कठिन समय होता है जब या तो अपने प्रेमी से एक मिलन के बाद बिछड़ना हो या फिर फोन पर बात करके करते उसे बाय कहकर फोन काटना हो । दोनों ही समय हमारे मन में ये ख्याल अवश्य आता है की "अभी न जाओ छोड़कर, की दिल अभी भरा नहीं" ।

परंतु कहते हैं ना की मनुष्य जीवन है ही ऐसा की आशाओं का जबतक नाश न हो जीवन यथार्थ नहीं लगता ऐसे ही अपने मन को मारकर हमें अपने पथ पर निकालना होता है और छोड़ना होता है उन अनगिनत यादों को चाहें वह फोन पर की हुई बातें हों या फिर पार्क में की हुई चर्चाएं । मेरे लिए दोनों ही तब निरर्थक साबित हो जाते हैं जब उनका कोई निष्कर्ष निकलने लगे; कहने का अर्थ है की कुछ बातों का निष्कर्ष न निकले तो ही उन्हें अच्छा माना जाता है और फिर यहां तो बात प्रेम की है, एक ऐसे प्रेम की जिसे स्वयं नियति ने गढ़ा है नियति और नीर के लिए ।

इसी विचार के साथ नीर फोन रख देता है और दोनों अपनी अपनी दिशाओं से एक ही क्षेत्र में पड़ने वाली अपनी अपनी कोचिगों में जाने के लिए घर से निकल जाते हैं । यूं तो 12 दिसंबर का दिन अब नीर कभी नहीं भूलेगा परंतु समाप्त होने के बाद सूरज ढलने के बाद भी ये दिवस अभी अधूरा है क्योंकि इस दिवस में अभी एक और घटना का होना बाकी है जो गौरतलब नीर के जीवन की सबसे सुंदर घटनाओं में से एक है । आखिर वीडियो कॉल कटने के बाद ऐसा क्या हुआ जो बन गया नीर के लिए एक सबक या कहूं तो एक ऐसी घटना जिसने नीर के जीवन को बदल ही दिया ।

नीर और नियति दोनों अपने कोचिंग पर पहुंच चुके थे, यूं तो दोनों में लगभग आधा किलोमीटर का फासला होगा परंतु फैसला इतना सा मानों एक ही दीवार हो, नीर कोचिंग में बैठा हुआ ये विचार कर रहा था कि कब छुट्टी हो और कब वह नियति से पुनः बात कर पाए और सब ठीक रहा तो मिल भी पाए।

एबीसी कोचिंग उसके लिए स्वर्ग सी प्रतीत होती थी, क्योंकि वह यूं तो घर से निकल नहीं पाता था स्कूल और घर के इलावा ये उसका तीसरा ठिकाना हो चुका था, जहां वह घंटों पढ़ाई करते हुए बीता देता था, अब उसके पास पढ़ाई के सिवाय नियति की स्मृतियां भी थीं जिन्हें वह ट्रिग्नोमेट्री के फॉर्मूला में इस्तमाल करने लगा था और निकलने लगा था एक्स का डेरिवेटिव। कोचिंग की छूटी होते ही नीर जल्दी से भाग उठता है, मानों की कहीं दिल्ली जाने की रेल हो, खुद को सबसे बचते बचाते वह उस मोड पर पहुंच जाता है जहां अक्सर वह नियति से टकरा जाता था, क्योंकि दोनों के छूटने का समय एक ही था। उस चौराहे पर घटित हुई घटना आज भी मेरी स्मृति में जीवित है, शायद प्रेम के उच्चतम आदर्शों में से एक मानी जाती थीं इस प्रकार की घटनाएं उस समय।

नीर के जीवन में इस घटना का इतना गहरा असर पड़ा की उसके भावों को इस घटना ने एक नई दिशा दे डाली और मानों ऐसा लगा की भविष्य की कई कल्पनाओं को सत्य साबित करने के लिए प्रथम सीढ़ी को नीर चढ़ चुका है । क्या थी ये घटना ये आपको आने वाले समय में पता चल ही जाएगा परंतु उससे भी अधिक मुख्य बात ये है की ऐसा क्या असर किया इस घटना ने नीर के जीवन पर की उसके भाव ही बदल गए उन भावों का बदलना नियति के लिए अच्छा था या बुरा या नीर के लिए अच्छा था या बुरा इसका उत्तर तो समय के गर्भ में ही है अगर उत्तर मिल गया तो ये बन जायेगी एक कहानी और नहीं मिला तो रह जायेगी “एक कविता, आधी और अधूरी” !

!! पाँचवा अध्याय समाप्त !!

बारह दिसंबर की बारिश

यूं तो दिसंबर का महीना सर्दियों का महीना होता है परंतु ठंड के समय में अगर बारिश हो जाए तो निसंदेह ही वह ठंड को और बढ़ा देती है हुआ भी कुछ ऐसा ही की लगभग चार से पांच दिन तक शहर में खूब बारिश हुई और दिसंबर के महीने में बारिश मतलब अत्यंत घातक। वैसे तो बारिश का कोई समय तय नहीं था तो इसलिए सर्दियों में छतरी ले जाने का तो सवाल ही नहीं उठता । जैसा की मैने आपको बताया की नीर और नियति दोनों ही अपने अपने मार्गों से अपनी अपनी कोचिंग के लिए निकल गए थे और नीर अत्यंत खुश था, खुश क्यों न होता आखिर इतनी लंबी वीडियो कॉल चर्चा जो हुई थी किसको पता था की वो वीडियो कॉल चर्चा के बाद भी आज के दिन में कुछ और बड़ा होने वाला है । दोनों अपनी अपनी कोचिंग खतम करके निकल ही रहे थे की बारिश होना शुरू हो गई ।

ये बारिश कोई आम बारिश नहीं थी इस बारिश ने पुनः बता दिया की लड़कियां क्यों लड़कों से ज़्यादा समझदार होती हैं, क्योंकि जहां नीर छाता लेकर नहीं आया था वहीं नियति अपनी सुंदर सी छतरी लेकर आई थी वैसे तो उनके आने के वक्त बारिश नही हो रही थी परंतु इसी को तो समझदार व्यक्ति की निशानी कहते हैं शायद आज के दिवस में दूसरी बार नीर की समझदारी पर पर्दा डलना तय था ।

दोनों की कोचिंग एक ही वक्त पर खत्म हुई और शाम का समय था और हल्की हल्की बारिश गिरना भी शुरू हो चुकी थी इतने में ही दोनो एक चौराहे पर टकरा गए दोनों के साथ उनके मित्र थे या कहूं तो स्कूल के कॉमन फ्रेंड्स थे । सब हंसते खेलते आगे बढ़ रहे थे सबके पास छतरियां भी थीं केवल नीर को छोड़कर वैसे तो नीर बारिश में असहज महसूस नहीं कर रहा था परंतु इतने में ही नियति के एक स्वर ने उसे असहजता में डाल दिया ।

आप ठीक समझे हैं; नियति ने नीर को अपनी छतरी के अंदर आने का आमंत्रण दिया और फिर क्या दोस्तों की टांग खिचाई शुरू हो गई और नीर थोड़ा सा असहज हो गया और विचारने लगा की वो जाए या नहीं ।

एक छतरी के नीचे एक लड़के और लड़की का होना उस समय बड़े ही सुन्दर अनुभव को दर्शाता था और फिर अगर वो प्रेम करने वाला जोड़ा हो तो बात कुछ और ही थी । यूं तो ये कोई प्रेमी जोड़ा नहीं था परंतु अगर आप अभी भी इनको सिर्फ मित्र मान रहे हैं तो गौरतलब आप शायद सही नहीं हैं। नीर के मन की आशाएं उस वीडियो कॉल के बाद अवश्य ही बढ़ गई थीं जिसपर इस छतरी वाले कृत्य ने संशय के बादलों को और घना कर दिया था और नीर के मन के भावों को और तेज प्रवाहित होने पर मजबूर कर दिया था । नीर की मुंहबोली बहन तनिषा, नियति का मित्र आदर्श समेत उन दोनों के कई मित्रों को साथ लिए वह सब कोचिंग से घर की और प्रस्थान कर रहे थे पर अद्भुत बात ये थी की आज नीर के घर जाने के मार्ग में कुछ बदलाव था ।

नीर और नियति को एक छतरी में चलते देख सभी मित्र उनसे मजाक मस्ती करने लगे थे पर शायद आदर्श के हाव भाव कुछ ठीक महसूस नहीं हो रहे थे आखिर क्यों होते ? जो व्यक्ति नीर के चार घंटे गिड़गिड़ाने के बाद भी नियति का नंबर नहीं दिया था वही नीर आज नियति के साथ एक ही छतरी में चल रहा था और तो और छतरी छोटी होने के कारण कई बार नीर और नियति का स्पर्श तीनों को असहज कर रहा था; नीर नियति और आदर्श को !

अब मार्ग में बदलाव हुआ है तो कहानी में भी अवश्य ही होगा, आखिर वो घड़ी आ ही गई जब शायद नीर के अरमानों को पुष्टि मिलने लगी थी की वो नि:संदेह ही कहीं न कहीं नियति से प्रेम कर बैठा है और नियति की असहजता भी उसके आंकलन को और पुष्ट करती जा रही थी । आखिर प्रेम में गिरे व्यक्ति को उठाना कितना मुश्किल होता है न; सामने वाले के हर छोटे से छोटे कृत्य को वह अपने लिए स्पेशल मानकर उसके प्रेम में और डूब जाता है ।

ऐसा भी तो हो सकता है की नियति ने वो छतरी मात्र नीर को एक मित्र समझ कर दी हो परंतु राजन प्रेम करने वालों को कहां समझ आता है मित्रता और प्रेम में अंतर । मित्रता और प्रेम में पतली डोरी का अंतर है दोनों में ही व्यक्ति खो सा जाता है, अब ये मित्र प्रसंग था या प्रेम प्रसंग ये तो आगे आने वाले समय में ही पता लगेगा ।

धीरे धीरे सड़क पर पड़े पत्थरों को लात मरते हुए वह सभी अपने घर को चले जा रहे थे अब ठंड का मौसम है उपर से बारिश भी है तो भुट्टे खाना तो बनता है न । अब मजे की बात इतनी सी थी की भुट्टे थे चार और लोग थे पांच तो छतरी प्रसंग अब भुट्टा प्रसंग बन चुका था क्योंकि नियति के दांत से कटे भुट्टे का स्वाद नीर को कुछ ज्यादा ही भा रहा था, चलो अच्छा है ! वैसे नीर परंपरा का व्यक्ति अवश्य था किसी का झूठा खाना तो क्या छूता भी नहीं था परंतु नियति ने उसके परंपराओं की नियति ही बदल दी ।

“अक्सर प्रेम के लिए व्यक्ति अपनी सारी आसक्तियों का त्याग कर देता है और पड़ जाता है एक नई आसक्ति में, एक आम मनुष्य के लिए आसक्तियों से मुक्ति पाना आसान नहीं होता परंतु जो मनुष्य प्रेम में आसक्त होते हुए अन्य आसक्तियों का त्याग कर देता है उसे ये ज़माना पागल कहने लगता है, चाहें फिर ईश्वर के प्रेम में भक्त हो या प्रेमिका के प्रेम में प्रेमी दोनों ही ज़माने के लिए निकृष्ट और भांग मनुष्य हैं” ।

"आज अच्छा लगा" नीरा ने धीमी आवाज़ में कहा!
"क्या मतलब" नियति का प्रश्न आया, मानों की उसे कुछ पता ही न हो।
"वीडियो कॉल पर बात करके" नीर ने कहा
"अच्छा" नियति ने भौहें ऊपर करके कहा
"धन्यवाद्, छाता देने के लिए" नीर ने कहा
"मैं थैंक यू बोलना शुरू करूंगी न तो दिक्कत हो जाएगी" नियति ने बड़े हक से उसके धन्यवाद को नकार दिया।
"और बता" नीर ने प्रेमविवश पूछा।
"मैं नहीं बताऊंगी" नियति के इस उत्तर में इतिहास था।
"बोल न" नीर ने दबाव देकर कहा!

प्रश्न क्या था ये किसी को नहीं पता, उत्तर क्या था ये भी नहीं। अक्सर होता है कि दो व्यक्ति किस बारे में बात कर रहे हैं ये बिना स्पष्ट शब्दों में कहे हुए भी उन्हें समझ आ जाता है कि बात हो क्या रही थी है। नीर और नियति की ये वार्ता भी कुछ ऐसी ही थी, जहां प्रश्न न होते हुए भी उत्तर की इच्छा थी, और जहां उत्तर न होते हुए भी उसे "न बताने की ठसक भी थी"।

आखिरकार एक बरसात ने नीर और नियति को लंबे समय तक ऐसी वार्ता करने का मौका दे ही दिया था। प्रकृति तो हमेशा से ही प्रेम की पुजारी रही है, गौर से अगर हम चिंतन करें तो पाएंगे की प्रकृति की हर वस्तु में प्रेम के सिवा और कुछ नहीं तो फिर जिसमें प्रेम की रसधार बहती हो वो प्रकृति आखिर कैसे नीर के प्रेम को अधूरा छोड़ देती । हंसी ठिठोली करते हुए नीर और नियति अपने सभी मित्रों सहित अपने अपने घर के निकट पहुंचने लगे पर अब समय था अपने अपने मार्गों पर जाने का और बिछड़ने का ।

आखिर ये विरह की पीड़ा कभी प्रेमियों को छोड़ेगी भी की नहीं ये तो प्रेमावतार श्री कृष्ण भी नहीं बता सकते हैं, यूं तो कृष्ण ईश्वर थे परंतु विरह की पीड़ा ने तो उनको भी नहीं छोड़ा फिर ये निकृष्ट मनुष्य किस घाट का जल है ।

इसीलिए तो राजन कहते हैं की; विरह मिलन की आस में न हो कभी निराश, दोनों वही कार्य करे जो कार्य करे हे पाश । अर्थात राजन जब जब व्यक्ति किसी से मिलता है तो वह बहुत खुश होता है इसके उपरांत जब वह किसी से बिछड़ता है तो वह निराश हो जाता है । ये मिलना और बिछड़ना भी वही कार्य करते हैं जो कार्य पाश करता है अर्थार्थ दोनों में ही व्यक्ति बंध सा जाता है और बंधन में कभी कभी व्यक्ति निखरता तो कभी कभी अपना गौरव खो बैठता है ।

बड़ी वेदना, संताप, दुःख और पुनः मिलन की खुशी के साथ वह दोनों अपने अपने मार्गों पर चल देते हैं और जिस बात को नीर कहने के लिए विचार करता है वह बात नीर के मन में ही सीमित होकर रह जाती है और वह अपने प्रेम का इज़हार आज भी नियति से नहीं कर पाता है । पर क्या नीर को फिर ऐसा अवसर कभी मिलेगा ? क्या नीर अपने हृदय की बात कभी नियति को कह पाएगा या फिर नियति उसकी कभी हो भी पाएगी या नहीं ? ये सभी प्रश्न मेरे और आपके दोनों के मन में कुछ पृष्ठों तक और चलेंगे अब इन प्रश्नों का उत्तर अगर आपको मिल गया तो ये हो जायेगी एक कहानी और अगर नहीं मिला तो रह जायेगी "एक कविता, आधी और अधूरी"।

!! छठा अध्याय समाप्त !!

ट्राइमैक्स

मानव की एक अनोखी प्रवृत्ति होती है, वह जिससे प्रेम करता है उसकी हर वस्तु बड़े संजोकर रखता है । ये जीवन यादों का मेला ही तो है, परंतु अगर व्यक्ति वस्तुओं की जगह वस्तु देने वाले को भी संभाल पर रख पाता तो निःसंदेह ही इस संसार में खुश रह पाता । अब तो ये बात सार्वभौमिक सत्य की भांति प्रतीत होने लगी है की व्यक्ति को उस वस्तु या व्यक्ति की कद्र नहीं होती जो उसके पास होती है बल्कि वो हमेशा अपनी खोई हुई वस्तु या फिर जो उसके पास नहीं है उस वस्तु या व्यक्ति के बारे में ही सोचता रहता है और इसी विचार के कारण जो उसके पास होता है उससे भी हाथ धो बैठता है, फिर जब ये वस्तु या व्यक्ति भी चली जाती है तो फिर वह पुनः इसके लिए रोना शुरू कर देता है, निःसंदेह ही ये बड़ी मूर्खों वाली बात प्रतीत होती है पर राजन ये सूर्य के तेज़ की भांति ही चमकदार और सत्य है ।

चीज़ों को संजोकर रखने की बात से मुझे नीर से जुड़ी एक कहानी याद आ गई, वैसे तो वेदांत को अपना आदर्श मानने वाला नीर इस भौतिक संसार को मोह माया से युक्त ही मानता था परंतु उसे भी पुरानी चीज़ें संभाल कर रखने का बड़ा शौक था । एक बार की बात है जब नीर और नियति मिडटर्म की परीक्षा देने के लिए बैठे हुए थे और अचानक नीर का पेन खत्म हो जाता है अब प्रकृति की योजना कहेंगे या संयोग जो भी हो परंतु नीर के लिए तो अच्छा ही था की उस दिवस नियति उसके पीछे ही बैठी हुई थी तो वह उसे वो पेन दे देती है पर ये पेन प्रकरण इतना ही मात्र नहीं है ये पेन प्रकरण तो बहुत लंबा जाने वाला था ।

नीर ने पेन छिटका, पेन की स्याही खत्म हो गई थी।
नियति ने देखा और बोली "मैं दूं"!
"अगर है एक्स्ट्रा तो देदे" नीर ने कहा,
"नहीं होता तो पूछती ही नहीं" नियति ने प्रतिउत्तर दिया।
"सबके पास होता है" नीर ने मन में कहा।
"पर सब पूछते नहीं न" नियति ने मन में उत्तर दिया।
"तुमने क्यों पूछा?" नीर ने कहा;
"अपनों से पूछ लिया जाता है"!
मन की वार्ता समाप्त हुई और नीर को पेन मिल गया।

उस ज़माने में महंगे महंगे पेन रखने का मानो क्रेज़ सा हुआ करता था, बच्चे बड़ी शान और शौकत से अपनी अपनी कलमों की प्रदर्शनी सी लगाकर रखा करते थे और नीर भी कम न था उसका पेन प्रेम तो पूरे विद्यालय में प्रख्यात था, यूं तो अपनी शर्ट में लोग एक पेन लगाते थे पर नीर की शर्ट में मानों पांच से सात पेन तो आम हुआ करते थे, हां आपके लिए ये हास्य की बात अवश्य हो सकती है पर शायद नीर की यही हरकतें तो उसे पूरे विद्यालय की जान बनाए हुई थीं ।

इन्हीं महंगे महंगे पेन में उस समय का सबसे प्रख्यात पेन हुआ करता था ट्राइमैक्स, मुझे उम्मीद है ये नाम सुनकर आपके मुख पर अवश्य ही एक हल्की सी मुस्कान आई होगी । यूं तो दो हजार और दो हज़ार दस के दशक का सबसे प्रख्यात पेन माना जाता था ये और दूसरे लोग बड़ी ईर्षा से देखा करते थे उसको जिसके पास ये पेन हुआ करता था । अब ये वही बात हो गई की आमदनी अठन्नी खर्चा रुपैया, ऐसा ही हाल था दसवीं में बच्चों का की कहां से ही वो पेन के शौक़ पूरे कर पाते ।

अब नीर के लिए सौभाग्य की बात ये थी की जो पेन नियति ने नीर को दिया था वो भी ट्राइमैक्स ही था और वो भी ऐसा वैसा नहीं ट्राइमैक्स गोल्ड, अब क्या सोने पर सुहागा सा हो गया था एक तो नियति का दिया हुआ पेन और ऊपर से ट्राइमैक्स गोल्ड । नीर की तो मानों लॉटरी सी लग गई हो, जितनी खुशी उसे ट्राइमैक्स मिलने की न थी उससे ज़्यादा खुशी उसे इस बात की थी की उसके पास नियति की एक बहुमूल्य वस्तु आ गई है, अब एक कवि के लिए तो सबसे बहुमूल्य कलम ही होती है न राजन, तो फिर क्या हर प्रेम करने वाला एक न एक दिन कवि बन ही जाता है? अब क्या नीर भी कवि बनेगा या नहीं ये उत्तर अगर आपको मिल गया तो बन जायेगी ये एक कहानी और नहीं मिला तो रह जायेगी एक कविता, “आधी और अधूरी” ।

ख़ैर नीर का कवि बनना तो समय के गर्भ में है परंतु उसका ट्राइमैक्स प्रेम अब पूरे विद्यालय में प्रख्यात होने लगा था । एक बार की बात है ये ट्राइमैक्स की खबर जब आदर्श को लगी तो उसने नीर से नियति का वो पेन मांगना चाह परंतु नीर अपनी सबसे पसंदीदा याद को ऐसे कैसे दे देता, तो उसने आदर्श को दूसरा ट्राइमैक्स खरीद कर दे दिया परंतु नियति का पेन अपने पास ही रखा ।

दसवी के बोर्ड्स का समय नज़दीक था, सारी तैयारी हो चुकी थी सब परीक्षा के लिए विद्यालय पहुंच चुके थे परीक्षा में बस आधा घंटा शेष था इतने में नीर को ज्ञात होता है की वह नियति का वो पेन घर पर ही भूल आया है, फिर क्या नीर मानों आज वायु से भी तेज़ प्रतीत होता है या कहूं तो सूर्य की गति भी मानों उसके सामने फीकी सी दिखाई पड़ रही हो, जितनी तेज़ी से नीर वो पेन लेने घर भागा था अगर उतनी तेज़ी से उस वर्ष के ओलंपिक्स में भागा होता तो निश्चित ही भारत के लिए स्वर्ण पदक लेकर आता । आखिर प्रेम होता ही ऐसा है की जहां व्यक्ति अपनी सारी निश्चितताओं को पर करके अनिश्चितताओं में प्रवेश कर ही जाता है स्वयं को खो कर दूसरे में मिलने का प्रयास करने लगता है, अपना अच्छा बुरा देखे बिना जब व्यक्ति दूसरे के अच्छे के लिए भरसक प्रयास करने लगता है उसी को प्रेम की उपमा देकर संबंधों में बांध देता है । नीर का नियति के प्रति प्रेम तो मानों पानी का शीतलता से और सूर्य का ऊष्मा से संबंध जैसा प्रतीत होता था ।

नीर अंततः पेन लेकर समय पर परीक्षा भवन में पहुंच ही जाता है, और आपको जानकर हैरानी होगी कि नीर ने बोर्ड की सारी परीक्षाओं में पहला और अंतिम अक्षर नियति के इस ट्राइमैक्स से ही लिखा और मुझे याद है जब मैं नीर से अखरी बार मिला था तो उसने मुझे वो पेन दिखाया था कहने का अर्थ है की नीर ने आज तलक वो पेन संभाल कर रखा है या कहूं तो पेन के रूप में नियति के हस्तरेखाओं को संजोकर रखा है उसकी यादों समेत उसके भावों को उस पेन के माध्यम से अपने पास संजोकर रखा है । नीर ने मुझे एक बार कहा था की अगर वह भविष्य में कभी कवि बना तो निसंदेह ही वह अपनी पहली पुस्तक का पहला अक्षर उसी पेन से उकेरेगा जो नियति ने उसे भेंट स्वरूप तो नही पर दिया अवश्य था । अब नीर नियति के पेन का मान रखने के लिए बोर्ड की परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो सकता है तो निसंदेह ही वह अपने इस वचन को सत्य करने के लिए कवि भी बन ही सकता है, अब नीर कवि बनेगा या नहीं ये तो समय ही बताएगा, अगर आपको उत्तर मिल गया तो ये बन जायेगी एक कहानी और अगर नहीं मिला तो रह जायेगी “एक कविता; आधी और अधूरी” ।

!! सातवाँ अध्याय समाप्त !!

हमेशा देर कर देता हूं

आपको याद है ना बारह दिसंबर का वो दिन, यूं तो नीर के लिए वो उसके जीवन के अभी तक के सबसे अच्छे दिवसों में से एक प्रतीत होता था, आखिर बारिश और प्रेम के नाते को लेकर कवियों ने जो उपमाएं दीं है उसके बाद तो मानों ये दोनों एक दूसरे के पूरक से बन गए हों अब उस दिन तो बारिश भी थी और प्रेम का उबाल भी था तो कहीं न कहीं तो फूटना ही था । यूं तो नीर और नियति बिछड़ चुके थे, अपने अपने रास्ते पर निकल चुके थे परंतु किसने सोचा था की नीर का इस रात नियति को अपने प्रेम का इज़हार न कर पाना उसके जीवन को एक नए रास्ते की तरफ मोड़ देगा ।

नीर अपने घर के रास्ते की तरफ मुड़ जाता है उसके साथ उसके दो दोस्त भी चले जाते हैं, अमीश और पवन । नियति के घर का रास्ता दूसरी ओर जाता था तो वह वहां निकल जाती है उसके साथ भी कुछ लोग थे, नीर की मुंहबोली बहन तनिषा, नियति का मित्र आदर्श और आदर्श का मित्र अनंत । आखिर कौन था ये अनंत जिसके आ जाने मात्र से नीर के प्रेम के उपर संकट की घड़ी मडराने लगी थी, नीर के कुछ कदम आगे बढ़ते ही उस मोड़ पर एक ऐसा कृत्य होता है जिसकी उम्मीद किसी ने नहीं की थी । मानों वो दृश्य देखकर प्रेम पर लिखने वाले सभी कवियों की कलमें टूट जाएं, मानों व्योम से अश्रुओं की धारा प्रवाह हो जाए और मानों मेरे हृदय में लहू की धारा एक अकंपन रूप लेले। ऐसी उपमाओं को भी वशीभूत करता वह दृश्य मानों नीर अगर देखता तो वह अपने प्राणों को वही त्याग देता ।

ऐसा क्या हुआ होगा इसी प्रश्न के उत्तर को खोजने के लिए हमें ये समझना होगा की आखिर हम हमेशा देर क्यों कर देते हैं कुछ भी करने में, अगर हमें किसी से प्रेम है तो बोल क्यों नहीं देते, अगर हमें मित्रता बोझ लगने लगती है तो जता क्यों नहीं देते, अगर हमें कदम बढ़ाना हो तो रोक क्यों लेते हैं, अगर कोई व्यंजन पसंद है तो खा लो ना यार, अगर ज़रूरी है दोस्ती तो मना लो ना यार, मनुष्य की आदत हो गई है देर करने की चाहें फिर कुछ कहना हो, चाहें कुछ करना हो, चाहें जीना हो और चाहें मरना हो। अरे जो होगा देखा जायेगा, अगर देर नहीं करेगा तो क्यों पछताएगा ।

इसी देर करने का परिणाम था की आज नियति के सामने नीर नहीं कोई और घुटनों पर बैठा था । जिस दृश्य को देखकर अकंपन प्रगट हुआ था वह यही दृश्य था, अनंत नियति से अपने प्रेम का इज़हार कर देता है समय स्तब्ध हो जाता है पवन का वेग रुक जाता है और चंद्रमा बादलों में छिप जाता है । ये सब अनायास नहीं हो रहा था न ये सब इसलिए हो रहा था की अनंत ने नियति से प्रेम इज़हार किया था, प्रकृति तो इसलिए शर्मिंदा दी की नियति ने उस प्रेम पुष्प को ग्रहण कर अपने मस्तक से लगा लिया था ।

नियति ने अनंत के उस प्रेम प्रस्ताव को स्वीकृति दे दी थी और उसको स्प्रेम हृदय से लगा लिया था बिल्कुल वैसे ही जैसे नीर अपने मन और हृदय से नियति के विचार को लगाए हुए था पर ये स्वीकृति इतनी सीधी होने के बाद भी संशयों से भरी हुई थी, शायद नियति के पास उस प्रस्ताव को स्वीकार करने के इलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं था, शायद स्त्री के पास पुरुषों की तुलना में कम विकल्प होते हैं। आदर्श का दबाव, बीच सड़क का नाटक और अनंत का गिड़गिड़ाना शायद उन मुख्य कारणों में से होगा कि नीर के प्रति अपना प्रेम भाव रखने वाली नियति को भी गैरविकल्पिक तौर पर अनंत के उस प्रस्ताव को स्वीकारना पड़ गया। अगर ये सिर्फ जबरन था तो निःसंदेह ही ये ज़ल्दी ही खत्म होने वाला था, अब ये खत्म होगा या नीर का स्वप्न टूट जाएगा ये तो समय ही बताएगा, अगर उत्तर मिल गया तो ये हो जाएगी एक कहानी; और नहीं मिला तो रह जाएगी "एक कविता:- आधी और अधूरी "।

संसार में एक ही समय पर कितना कुछ चल रहा होता है की हमें ज्ञात भी नहीं होता, एक की खुशी पल भर में कैसे दूसरे के लिए परेशानी बन जाती है ये क्षणिक मात्र की बात है । जो रात नीर के लिए इतनी यादगार थी जिसके विचार मात्र से वो अपने स्थान पर खुशी से झूम रहा था उसको अंदेशा भी नहीं था की उसकी खुशी क्षण भर की थी । उधर नीर अपने प्रेम प्रस्ताव को पुनः के लिए सजाने लगता है और इधर नियति अनंत की हो चली थी ।

दरअसल ये घटना आकस्मिक नहीं थी, अनंत का नियति के प्रति आकषर्ण पुराना था परंतु उसकी भी नीर की भांति नियति से कुछ भी कहने की हिम्मत न थी। अनंत और आदर्श बहुत ही अच्छे मित्र थे, वो ट्रुथ एंड डेयर का खेल याद है न आपको? उस खेल में नीर, तनीषा, नियति, आदर्श उसकी प्रेमिका के साथ साथ अनंत भी था, और वह वो तीसरा व्यक्ति था जिसको आदर्श के उत्तर से कष्ट पहुंचा था, परंतु मित्र होने के कारण उसने वह मज़ाक में लिया और बात जाने दी। उसी समय उसके और आदर्श के बीच हुई बातचीत में ये निर्धारित होता है कि आदर्श अनंत की मदद करेगा उसका और नियति का संबंध बनवाने में, नियति भोली थी वह आदर्श को अपना सच्चा मित्र मानती थी सो वह उसकी अधिकतम बातों पर विश्वास भी कर लेती थी।

ये इस घटना की पीछे की कहानी थी, नियति का नीर को वीडियो कॉल या छतरी प्रसंग केवल मित्रता का भाव मात्र था? ये प्रश्न नियति और नीर दोनों के लिए ही समझ से बाहर था। सड़क पर ये प्रसंग रचा जा रहा था, तनिषा ये सब देख कर दंग हो जाती है क्योंकि उसने अपने भाई का नियती के प्रति जो प्रेम देखा था वो पल भर में समाप्त हो चुका था, आदर्श अपने आदर्शों को भूल कर नीर के उन अश्रुओं का अपमान करते हुए इस दृश्य का आनंद उठाता है । आदर्श को ये ज्ञात होते हुए भी की नीर नियति से अत्यंत प्रेम करता है वह अनंत को अपने प्रेम का इज़हार करने के लिए उकसाता है और इस पूरे दृश्य को प्रासंगिक बनाने में आदर्श का ही हाथ होता है ।

ये सब हो जाने के बाद सब अपने अपने घर चले जाते हैं, इन चारों के इलावा इस बात से अभी सब अनभिज्ञ थे । विचार करिए जब इस बात का पता नीर को लगेगा तो उसपर क्या बीतेगी वो अपने आप को कैसे संभालेगा और वो क्या निर्णय लेगा । ये सभी प्रश्नों के उत्तर तो समय के गर्भ में है अगर उत्तर मिल गए तो ये बन जायेगी एक कहानी और अगर नहीं मिले तो रह जायेगी एक कविता; “आधी और अधूरी” ।

!! आँठवा अध्याय समाप्त !!

प्रेम और दर्शन

मैं सोचता हूं की कैसा होता वो दृश्य अगर नीर अपने प्रेम की बात नियति को बता देता या नियति के मन का विचार उसकी जुबान बन जाता पर ऐसा नहीं हुआ और एक कहानी के अंदर एक नई कहानी बन गई । कई बार हम चाह कर भी वो अर्जित नहीं कर पाते हैं जो हमारे भाग्य में नहीं होता या शायद ईश्वर हमें वो नहीं देना चाहता इसलिए नहीं की वह हमें दु:ख पहुंचाना चाहता है अपितु इसलिये क्योंकि वो हमसे बेहतर जानता है की हमारे लिए क्या अच्छा है क्या बुरा ।

एक उदाहरण से समझने का प्रयास करें तो सोचिए की मैं किसी से अत्याधिक प्रेम करता हूं या कोई मेरा मित्र है जिसे मैं बहुत मानता हूं पर वो मुझे हमेशा दु:ख पहुंचाता है, उसने हमें इतना रुलाया है जितना किसी ने नहीं तो एक समय ऐसा आएगा की हमारी उससे उम्मीदें ही खत्म हो जाएंगी और शायद वो समय ऐसा होगा जब आप इतने कठोर हो चुके होगे की आपको आपके लक्ष्य तक पहुंचने के लिए जिन परेशानियों का सामना करना होगा वो आप बड़े ही आराम से कर पाओगे ।

ईश्वर का आपको दु:ख देने का अर्थ केवल इतना होता है की वह आपको आपके लक्ष्य तक पहुंचने के लिए कठोर और योग्य बना सके ताकि आप इस संसार की माया में फसकर अपने हृदय की उस ज्वाला को शांत ना कर बैठें जो इस समाज और विश्व के हित के लिए प्रज्वलित की गई थी ।

सभी दर्शन के मानने वालों ने ये कहा कि मनुष्य प्रेम करते समय ये भूल जाता है प्रेम का अर्थ बंधन नहीं है आज़ादी है, प्रेमी को आजाद छोड़ दो उसको जो करना है करने दो फलाना ढिमका। परंतु सत्य तो ये है की एक प्रेमी को दूसरे प्रेमी से होती हैं कई सारी आकांक्षाएं और वह जब पूरी नहीं होती तो निसंदेह ही वह दुःख पहुंचाती हैं । हम सब चाहते हैं की हम जिसे प्रेम करते हैं वह हमारे पास रहे हमारी प्राथमिकता बनकर रहे हमें अपनी प्राथमिकता माने चाहें फिर वह प्रेम हो या फिर मित्रता, मैं इन दोनों में भेद नहीं मानता । परंतु जब हम किसी से चाह रखते हैं तो निसंदेह ही वहां बंधन अपने आप पनपने लगता है तो फिर कैसे प्रेम बिना बंधन के प्रासंगिक हो सकता है ।

प्रेम में ये आवश्यक है की हम अपने प्रेमी को मुक्त छोड़ दें आज़ाद करदें परंतु वो इस तर्ज़ पर संभव नहीं की हमें चाह ही खत्म करनी पड़ जाए अपितु इस बात पर ज़्यादा सटीक बैठता है की हमारा एक दूसरे पर विश्वास इतना अडिग हो की वह बंधन भी किसी आज़ादी से कम न लगे । दो प्रेमी या मित्रों के बीच समझदारी और विश्वास ही किसी बंधन को मुक्ति में परिवर्तित कर सकती है । इसलिए ये कहना कदापि उचित नहीं होगा की चाह को खत्म करके ही प्रेम को मुक्ति के मार्ग पर लाया जा सकता है अपितु ये कहना ज्यादा सही होगा की एक दूसरे के बीच समझ और विश्वास के साथ ही किसी भी संबंध को मुक्तिरूपी बंधन से युक्त बनाया जा सकता है क्योंकि किसी भी रिश्ते से चाह खत्म हो जाए ऐसा प्रासंगिक और धरातल पर उतरता नहीं दिखता है ।

एक उदहारण से समझे तो प्रेम मूर्ति श्री कृष्ण और वात्सल्य मूर्ति राधा के उद्धरण को ले सकते हैं जहां दोनों के बीच में एक निस्वार्थ और निश्छल प्रेम है परंतु वहां चाह भी है, चाह है एक दूसरे के निकट रहने की मिलने की इसीलिए जब कृष्ण मथुरा जाते हैं तो राधा जी उनसे मिलने का विलाप करने लगती हैं अब आप इसे बंधन तो नहीं कहेंगे न, क्योंकि यहां राधा जी का विलाप कृष्ण को कार्य करने के लिए बाध्य नहीं कर रहा अपितु ये विश्वास दिला रहा है की उन्हें जल्द से जल्द ये कार्य करके राधा जी के पास लौटना है । यहां विश्वास और समझदारी ही है जो इस बंधन को बांधने की बजाय दोनों को मुक्ति प्रदान कर रही है ।

हम प्रेम को समझने में निसंदेह ही असमर्थ हैं परंतु जैसा की संतों की वाणी रही है की प्रेम हमेशा निष्काम और निस्वार्थ होना चाहिए कहने का अर्थ है की निष्काम का अर्थ बिना किसी आशा के नहीं है अपितु बिना किसी ऐसी आशा के है जो आपको तो सुख पहुंचाएं परंतु आप जिससे प्रेम करते हैं उसको दुखी निष्काम प्रेम का अर्थ है की आप अगर किसी से कोई आशा रखते भी हैं तो ऐसी आशाएं ही रखें की आप भी खुश रहें और आपका प्रेम करने वाला भी ।

अपने आप को दु:ख में रखकर भी अगर आप अपने प्रेमी को सुख पहुंचा रहे हैं वही प्रेम का असली मर्म बताया गया है ।

प्रेम स्वार्थ रहित होता है उसमें स्वार्थ की गुंजाइश ही नहीं होती इसलिए जिससे भी हम प्रेम करते हैं हम उसके प्रति अपने आप को समर्पित कर देते हैं वही सच्चा प्रेम कहलाता है जहां अगर आशा है भी तो ऐसी जो आपके प्रेमी को ही सुख पहुंचाएं अगर स्वार्थ है भी तो ऐसा जो आपके प्रेमी का ही भला करे कहने का अर्थ है की अगर आप अपने प्रेमी का कुछ बुरा भी कर रहे हो तो इस विचार से कर रहे हो की उसको मेरा ये कृत्य हित ही पहुंचाएगा इस भाव को रखकर ही प्रेम के असली मर्म को समझा जा सकता है जहां आपके बुरे से बुरे कृत्य का उद्देश्य आपके प्रेमी की खुशी और उसकी अच्छाई ही हो न की उसमें आपका स्वार्थ और निकृष्टता हो ।

यूं तो नीर के लिए ये अत्यंत दु:खद था जब अगले प्रातःकाल उसे ये ज्ञात हुआ कि कल रात क्या क्या हुआ था । नीर जब अगले दिन विद्यालय पहुंचता है तो विद्यालय का माहौल ही मानों नीर को ये संकेत दे रहा होता है की कुछ तो विष है इस हवा में इतने में ही तनिषा उसे मिल जाती है और उसे कल रात्रि के विषय में सब कुछ बता देती है । अब क्या ये सुनते ही नीर मानों समझने में असमर्थ था की वो कैसे इस भाव को समझे और व्यक्त करे । उसकी ये असमर्थता भान कर रही थी मानों सरिताओं ने सागर में मिलने से मना कर दिया हो या मानों वसंत में पुष्पों ने खिलने से मना कर दिया हो ।

उसकी हृदय में एक अकंपन सा उठ रहा था परंतु वो क्या ही कर सकता था जब तक वो इस तथ्य को स्वीकार कर पाता उसे नियति और अनंत साथ दिख जाते हैं और फिर क्या हमेशा नियति को निहारते रहने वाला नीर आज न जाने क्यों उसे देख कर नज़रे झुका लेता है मानों वह अपने प्रेम में हार मानकर अपने नजरों को नतमस्तक कर रहा हो, नियति के आवाज़ लगाने पर भी वह बिना कुछ बोले वहां से निकल जाता है और उसी स्थान पर पहुंचता है जहां उसके प्रेम की शुरुवात हुई थी, पुस्तकालय में ।
पुस्तकालय में बैठा बैठा वह विचार करता रहता है की कितना अच्छा होता अगर वह इस स्थान पर आता ही नहीं कितना अच्छा होता अगर वो नियति को पहले ही अपने प्रेम के बारे में बता देता या कितना अच्छा होता अगर वो प्रेम में पड़ता ही नहीं, पर कहते हैं ना व्यक्ति "हमेशा देर कर देता है" कुछ भी सही करने में ।

नीर पुस्तकालय में अकेला बैठा घंटे भर तक अपने आसुओं को अपने कंधे से पौंछता रहता है, फिर जैसे ही वहां और बच्चे आने लगते हैं तो वह वहां से उठकर विद्यालय खत्म करके चुप चाप अपने घर निकल जाता है । नीर बहुत अकेला व्यक्ति था मित्रों से चर्चा भी उसके विद्यालय तक ही सीमित थी घर में भी मां, पिताजी के इलावा और कोई नहीं था और वह भी अपने कामों में व्यस्त रहते थे तो नीर अपने कमरे में अकेला पड़ा पड़ा या तो पढ़ता रहता था या सोचता रहता था ।

उस दिन तो उसके पास सोचने का एक बहुत ही जटिल विषय था, वह घंटों रोया, फुट फुट कर बेचारा रो भी नहीं सकता था न जाने कब कोई सुनले और फिर क्या से क्या हो जाता । दबी हुई आवाज़ में सिसक सिसक कर रोते हुए उसने पूरा दिन बिता दिया रात्रि में उसने कई बार कोशिश करी की वह नियति से बात करने का प्रयास करे पर किस मुंह से बात करता। फोन उठाता मैसेज लिखता और फिर मिटा देता पूरी रात यही चलता रहा। बोर्ड के एग्जाम नज़दीक थे पढ़ाई से ध्यान भटकता जा रहा था परंतु नीर परेशान होता जा रहा था एक रात वो नियति को फोन करके बहुत रोया भी परंतु अब उससे कुछ नहीं होने वाला था कई प्रयासों के बाद भी कुछ ठीक नहीं हुआ, नीर हार मानकर बैठ चुका था तभी एक रोज़ वह जब रास्ते से जा रहा था तो उसे ज़मीन पर एक छोटी सी पुस्तक पड़ी मिलती है, नाम था "उपनिषदों का सार"।

यूं तो नीर को बचपन से ही पूजा पाठ और अध्यात्म में रुचि रही थी परंतु दर्शन के विषय में उसने कभी विचार नहीं किया था ये पुस्तक जब उसने उठाई वो इसे घर ले आया और पढ़ने का प्रयास किया । यूं तो उपनिषदों को समझना जटिल था परंतु इस पुस्तक में एक सारांश के रूप में वो सब समझाया गया था जहां ब्रह्म वाक्य के रूप में जब नीर ने पढ़ा की "जगत मिथ्या ब्रह्म सत्य" तो ये वाक्य मानों नीर के जीवन का लक्ष्य ही बन बैठा । पुस्तक के ज्ञान के सहारे नीर ने बोर्ड की परीक्षा दी और माता पिता के इच्छा अनुसार अंक भी पाए । नीर परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ और भविष्य के विषय में विचारने लगा परंतु नियति के प्रति प्रेम अभी समाप्त नहीं हुआ था उसे अभी भी आशा थी की शायद सब ठीक हो जाए और पुनः उसे एक मौका मिल जाए जब वो नियति को अपने हृदय की बात सामने से कह पाए ।

ग्यारहवीं में प्रवेश करते समय विषयों को चुनने का समय आता है, यूं तो नीर की रुचि हमेशा से ही सामाजिक मुद्दों में रही थी तो वह मानवतावादी विषयों को ही चुनता है परंतु उसे ये ज्ञात नहीं होता है की नियति ने विज्ञान को प्राथमिकता दी है । पुनः वह दोनों अलग अलग कक्षाओं में पड़ जाते हैं ।

यूं तो दसवीं के बाद नीर के विद्यालय बदलने की चर्चा भी उसके घर पर तेज़ हो जाती है परंतु नीर को ये विचार कतई नहीं भाता है पर नीर को जब ये पता लगता है की नियति ने अपना विद्यालय बदल लिया है और वह दूसरे विद्यालय में नामांकन भर चुकी है तो नीर भी अपने घर पर उड़ रही हवा को तवज्जो देना शुरू कर देता है जिस रोज़ नीर नए विद्यालय का दाखिला करने जा रहा होता है तभी रास्ते में उसे नियति मिल जाती है और पूछने पर पता चलता है की उसके विद्यालय बदलने वाली बात की अफ़वाह तो आदर्श ने फैलाई थी ताकि वह नीर को नियति से अलग कर सके ये पता चलते ही नीर अपने विद्यालय बदलने का विचार छोड़ देता है ।

गौरतलब ये है की नीर पुनः नियति के प्रेम का प्रयास इसलिए भी करने लगा था क्योंकि आदर्श और अनंत के बीच कुछ विवाद हुआ था जिसके कारण नियति और अनंत में आपस में कई मतभेद उत्पन्न होने लगे थे । नीर को किसी से भी कोई मतलब नहीं था उसे बस अपने प्रेम पर विश्वास था। तभी ग्यारवीं के शुरुवात में उसे ये पता चलता है की उसका मित्र अमीश भी नियति को पसंद करता है और उनके बीच भी एक अच्छी वार्तालाप चलती रहती है ।

नीर असमंज में पड़ जाता है की आखिर कार ये चल क्या रहा है, आखिर नियति किसके ज़्यादा नज़दीक है और आखिर किसके प्रेम को वह अपने लिए बेहतर और उपयुक्त मानती है ।

नीर, आदर्श, अनिकेत और अब अमीश, लगता है मानों नीर के जीवन में ये 'अ' नाम के व्यक्तियों ने राहु की भांति ग्रहण लगा दिया हो । अब ये चांडाल चौकड़ी नीर के जीवन में और क्या उथल पुथल मचाएगी ये तो भविष्य ही बताएगा अगर उत्तर मिल गया तो ये बन जायेगी एक कहानी और नहीं मिला तो रह जायेगी एक कविता; "आधी और अधूरी"।

!! नौंवा अध्याय समाप्त !!

एके अनार सौ बीमार

एक विद्यार्थी के लिए बोर्ड्स के बाद मानों जीवन बदल सा जाता है । सिर्फ वो विषय पढ़ने पढ़ते हैं जिनमें उसे रुचि होती है परंतु ये हमेशा आवश्यक नहीं, कई बार हमें पिता की आशाओं के अनुसार भी विषय चुनने पड़ते हैं और जिस समय की ये कहानी रूपी कविता है उस समय तो मानों गणित लेने वाला ज्ञानी और मानवशास्त्र लेने वाला महाअज्ञानी माना जाता था। फिर क्या इसी तथ्य को झूठ साबित करने के लिए नीर ने अपनी इच्छा अनुसार मानवतावादी विषयों को चुन लिया और निकल पड़ा एक नई यात्रा की ओर। नियति और नीर के विषयों में बस एक समान विषय था वो था गणित अब क्या ये गणित नीर और नियति के केमिस्ट्री को संभाल पाएगा या नहीं ये तो आने वाला समय ही बताएगा ।

नीर और नियति दोनों ग्यारवीं में प्रवेश करते हैं और अपनी अपनी कक्षाओं में जाकर बैठ जाते हैं । आज के दिवस ऐसी ही परिस्थिति है मानों सब पहले जैसा हो गया हो, क्या नियति और अनंत का प्रेम विच्छेद हो गया था ? आबो हवा तो यही संकेत दे रही थी । नीर को इस तथ्य पर विश्वास नहीं था गौरतलब है की वो इस विचार को प्रासंगिक होते देखना चाहता था पर अभी तक उसे उसके तथ्य के बारे में ज्ञात नहीं था । यूं तो उसे नियति पर आज भी उतना ही विश्वास था पर बिना उसके चरित्र पर लांछन लगाए उस ये विश्वास था की नियति ने अभी तक किसी के प्रेम को स्वीकृति नहीं दी थी ।

नीर, आदर्श, अनिकेत और अब अमीश ये चारो की नियति ने मानों इनके जीवन के लिए नियति को ही चुन रखा था । चारो अपने अपने प्रयासों में लगे हुए था । अब तक आदर्श की प्रेमिका भी विद्यालय छोड़कर जा चुकी थी तो वह भी अकेला हो गया था इसलिए उसका नियति के प्रति आकर्षण और तीव्र हो गया था ।

अनंत और नियति का आपस में मेल मिलाप भी अब कम होने लगा था, इसका एक कारण नियति और आदर्श का एक दूसरे के प्रति अधिक आकर्षण भी था या कहूं तो वह दोनों आपस में ज़्यादा घुल मिल कर रहते थे । अनंत की शिकायतें बढ़ने लगी थीं और नियति का प्रेम कम होने लगा था, यही उनके एक दूसरे के प्रति प्रेम को कम कर रहा था और अंतिम में दोनों ने किलिस कर एक दूसरे से मुंह मोड़ लिया था और रिश्ते को खत्म कर दिया । उनके रिश्ते को खत्म करने के पीछे एक बहुत ही खराब घटना थी जो शायद आगे चलकर इन सभी रिश्तों के पूरे आयाम को बदलने वाली थी और प्रेम के पवित्र रूप को दूषित करने वाली थी ।

अमीश यूं तो नीर का मित्र था परंतु नियति से प्रेम करता था । नीर को उससे कोई समस्या नहीं थी वह खुले विचारों का व्यक्ति था उसका यह मानना था की नियति जिसको भी पसंद करेगी वो उसके निर्णय से खुश रहेगा, शायद प्रेम का असली अर्थ भी यही होता है । "उपनिषदों का सार" पढ़ने पर नीर इस बात को मानने लगा था कि प्रेम मिलेगा ही मिलेगा इस भाव से अगर हम सोचते रहेंगे तो नि:संदेह ही हम एक न एक दिन अपने प्रेमी से ही ईर्षा कर बैठेंगे और जो की प्रेम की पवित्रता को नष्ट कर देगा । अमीश और नीर के बीच की ये समझदारी ही थी की उनके रिश्ते में वैसी दरार प्रगट नहीं हुई जैसी की आदर्श और अनंत के बीच हुई थी ।

ये चारो अपने अपने प्रयासों में लगे हुए थे मानों ऐसा लग रहा था की एक अनार और सौ बीमार हों । नियति से प्रेम करने वालों की पंक्ति थोड़ी लम्बी थी, कई बार मार पीट का सामना भी करना पड़ा क्योंकि मात्र विद्यालय में ही नहीं कोचिंग पर भी नियति को कई लोग पसंद करते थे । इसी के कारण एक बार तो आदर्श में इतनी गन्दी मार पड़ी थी की बिचारा माह भर तक घर से बाहर नहीं निकल पाया था।

इस मामले में नीर का सभी सम्मान करते थे क्योंकि वह एक उत्कृष्ट व्यक्तित्व का व्यक्ति था इसलिए उसकी लड़ाई और मार किसी के साथ नहीं होती थी वह अधिकतम समय बातचीत से मामले को सुलटाने के प्रयास करता था पर आखिर वो प्रेम कहानी ही क्या जिसमें मार धाड़, लड़ाई झगड़े न हुए हों ।

विद्यालय में पुनः रौनक लौटने लगी थी। नीर और नियति की किलकारियां पुनः गूंजने लगी थी मानों लगता था की उनके प्रेम को पुनः एक नई दिशा मिल गई हो दोनों के बीच पुनः वार्तालाप बढ़ने लगा था पर क्या ये सिर्फ एक दिखावा मात्र था या सच में नियति नीर को पसंद करने लगी थी । व्यक्ति जब हमारे पास होता है तब हमें उसकी कद्र नहीं होती जब वह हमसे दूर चला जाता है तो हम उसके लिए विलाप करने लगते हैं उसके लिए घंटों घंटों भर रोते हैं पर कितना अच्छा हो अगर हम अपने अहम को बगल में रख उस व्यक्ति को जाने से रोक लें जिसे हम सच में प्रेम करते हैं । वो कहते हैं ना की "अभाव में हर वस्तु का मूल्य बढ़ जाता है" वैसा ही जब हमें किसी प्रिय का अभाव दिखाई पड़ता है तो हमें उसका मूल्य समझ आने लगता है ।

नियति के पास इस समय न तो अनंत था और न आदर्श विद्यालय आ रहा था तो उसके पास एक विकल्प शेष था, नीर को वह उसी विकल्प की भांति उपयोग कर रही थी या ये भी हो सकता था की इस अभाव में शायद उसे नीर की सही कद्र का भान होने लगा था । यूं तो नीर का व्यवहार छल रहित था इसलिए वह उसे प्रेम ही समझ रहा था या कहूं तो मित्रता का भाव लिए उसे जी रहा था ।

नीर और नियति के मिलने का एक साधन अंग्रेज़ी विषय की कक्षा थी क्योंकि एक ही विषय ऐसा था जब उनकी कक्षा साथ लगती थी तो उस कक्षा में दोनों अत्यधिक मज़ाक मस्ती और बातें किया करते थे । यूं तो सभी के सामने बहुत बोलने वाला नीर, नियति को देखते ही शर्मा कर शांत बैठ जाता था परंतु शर्म तो प्रेम का गहना होती है, उसी से प्रेम में एक अलग रौनक और निखार दिखाई पड़ता है ।

नौंवी से शुरू हुआ प्रेम ग्यारहवीं में पहुंच चुका था, बहुत सारे उतार चढ़ाव के बाद भी ये कहानी में निश्छल प्रेम बचा हुआ था। हां इन दो वर्षों में अगर कोई बहुत बड़ा अंतर आया था तो वो यह था कि नीर जितना शांत नौंवी में था उसके विपरीत वह ग्यारहवीं तक बहुत खुल गया था। दोस्तों के प्रति वह अच्छा भाव रखता था और नियति के प्रति उसका प्रेम वैसा का वैसा ही था, मानों की बीच में समय में कुछ हुआ ही न हो।

नीर के इस स्वभाव के कारण उसे भविष्य में भी बहुत परेशानियां भुगतनी पड़ी थीं, जितना मैं नीर को जनता हूं उससे मैं ये आंकलन लगा सकता था कि वह अपने प्रेम और मित्रता के भाव को लेकर अत्यंत ही कोमल था। बाहर से कठोर दिखने वाला उसका व्यक्तित्व भीतर से बहुत ही निर्मल था, दरअसल जब भी उसके प्रेम में बीच में कुछ समय के लिए एक रुकावट लगती भी थी तब भी जब वह व्यक्ति वापस उसके जीवन में आता था तो वह उसे वैसे ही स्वीकार करता था जैसा वो गया था, मानों बीच के प्रसंग चाहें फिर वो उसके लिए कितने भी पीड़ादायक क्यों न रहें हों वो भुला देता था, यही उसके लिए प्रेम की सच्ची परिभाषा था, भविष्य में होने वाली घटनाओं में उसके मित्र मनमोहक के प्रसंग से आपको इस बात का अधिक भान होगा।

अनंत और अमीश का योगदान इस कहानी में इतना ही था, वह सावन की पहले बारिश के पड़ने के बाद जो ओस थी उसके जैसा थे, धूप निकलने पर वह विलोमन हो गए थे। नीर और नियति दोनों के प्रेम में एक सुंदर मोड़ आ ही रहा था की आदर्श पुनः विद्यालय लौट आता है और फिर इस कहानी रूपी कविता में एक नए मोड़ की तरफ़ संकेत देने लगता है अब क्या होगा ये नया मोड़ ये तो आने वाला समय ही बताएगा,
अगर उत्तर मिल गया तो बन जायेगी ये एक कहानी और नहीं मिला तो रह जायेगी एक कविता; “आधी और अधूरी”।

!! दसवां अध्याय समाप्त !!

म्यूज़िक क्लास

कहानीकारों के पास मानों अधिक कहानियां बची ही नहीं, सब घिस पीट कर वही प्रेम प्रसंग सुनाते रहते हैं, जिसमें एक प्रेमी होता है एक प्रेमिका होती है और एक तीसरा व्यक्ति जो उनमें दखल देता रहता है, अगर इस कहानी के बारे में भी आपको यही प्रतीत हो रहा है तो आप गलत हैं। सबसे पहले तो ये एक कहानी है भी या नहीं इसपर ही संशय प्रतीत होता है, दूसरा इसमें प्रेमी और प्रेमिका दोनों ही अपनी अपनी श्रेणियों को अभी तक प्राप्त नहीं कर पाएं हैं और तीसरा ये जो तीसरा व्यक्ति है इसका भी वैसा योगदान इस कहानी में दिखाई नहीं पड़ता है। न जाने क्यों हमारा ये आंकलन हमें ठीक प्रतीत नहीं होता, सबसे पहले तो ये कहानी आखिर है किसकी यही समझना कठिन है, आपके लिए कहानी को पढ़ना आसान हो सकता है, समझना शायद थोड़ा कठिन हो, अगर अभी तक भी आपको ये लग रहा है कि आप कहानी को समझ पा रहे हैं तो आप कहानी तक पहुंचे ही नहीं है। अभी तक तो ये कविता की भांति ही चल रही है, जिसके पूरे होने के आसार अभी कम हैं।

आदर्श विद्यालय लौट आया था, ये लौट आना इसलिए एक आवश्यक क्रिया बन गई थी क्योंकि वह लंबे समय के बाद विद्यालय आया था। कुछ निजी परेशानियों के चलते उसने किसी से बात नहीं की थी, सब इस बात को लेकर चिंतित थे कि वह ठीक है कि नहीं, सो उसके लौट आने वाले दिन पर ये लाज़मी था कि वह सबका ध्यान अपनी और आकर्षित कर रहा था, नियति भी उसके पास उस दिन अधिक रूकी थी एवं वह ये भूल गई थी कि उसे नीर को उस दिन गाने की तैयारी करानी थी। नीर भी आदर्श को लेकर चिंतित था, पर नियति का उसके प्रति ध्यान न देना उसकी इस चिंता को उस चिंता पर अधिक महत्व दिलवा रहा था।

व्यक्ति जब भी किसी ऐसी चीज़ को लेकर चिंतित हो जो उसे नुकसान पहुंचा रही तो तो उसे अपनी चिंता को किसी और विषय की ओर मोड देना चाहिए, ताकि उसकी चिंता उसे परेशानी पहुंचाना बंद कर दे और वह चिंता को चिंतन में बदल सके। नीर ने इसी चिंता को चिंतन में बदलने के लिए वास्तविकता को स्वीकार करते हुए अपने कार्य की और अपना ध्यान मोड लिया और वह अकेला ही म्यूजिक कक्षा की और प्रस्थान कर गया।

म्यूज़िक रूम नीर के जीवन में पुस्तकालय के बाद की सबसे प्यारी जगह थी। बात ये नहीं थी कि नीर गाने में बहुत अच्छा था, वह बहुत ही बेसुरा गाता था पर नियति की आवाज़ अच्छी थी और वह हिंदी व अंग्रेज़ी दोनों प्रकार के गाने गा लेती थी। यूं तो नीर कोई गायक नहीं था परंतु उसे बचपन से ही संगीत में काफ़ी रुचि थी उसे संगीत अत्यंत प्रिय था, उसने वाद्ययंत्र सीखने का भी प्रयास किया था पर जिस शहर में वह रहता था वो तानसेन के लिए प्रख्यात होने के बाद भी वहां के लोगों में संगीत को लेकर अधिक रुचि दिखाई नहीं पड़ती थी, इतनी रुचि तो नहीं ही थी कि वह अपने बच्चों को संगीत में भविष्य बनाने के लिए प्रेरित कर पाते।

म्यूज़िक क्लास का माहौल ऐस अतः मानों सरस्वती का मंदिर हो। दरवाज़े पर जूते खोल दिए जाते थे, उसके सामने ही एक टेबल पर एक हारमोनियम रखा था जिसकी स्थिति दीवार पर पड़ी दरार सी थी, उसके ही दाईं और एक तबला और बाईं और एक पियानों रखा हुआ था, अधिकतम वाद्ययंत्र शिक्षक के खुद के थे, हमारे विद्यालय में ये सब वस्तुओं मिल पाना कठिन ही नहीं नामुमकिन प्रतीत होता था, खेर! उस कमरे एक अलमारी भी थी जिसमें कक्षा से जुड़ी बाकी वस्तुएं रखी होती थीं, एवं छोटे यंत्र जैसे बांसुरी इत्यादि रखे हुए थे। शिक्षक वहां पर कम ही मौजूद रहते थे सो विद्यालय की मशहूर जोड़ियां वहां पर समय बिताने के लिए चली जाया करती थीं। संगीत हमेशा से ही प्रेम को प्रासंगिक बनाने की एवं उसे शून्य करने के ताक़त रखता है, नीर का भी ऐसा ही भाव था सो वह नियमित रूप से संगीत की कक्षा में थोड़ा समय बिता किया करता था, वह संगीत की कक्षा ही थी जहां नीर ने पहली बार अपनी डायरी में कुछ लिखा था, वह उस दिन उस कक्षा में अकेला था, न बाकी बच्चे थे और न नियति।

उसका पहला विचार वहीं पनपा था और उसने अपनी रचना की थी, शायद वह रचना असल में कविता जैसी ही रही होगी, संगीत प्रेम को शून्य कर देता है ये तो ठीक बात है, परंतु वह प्रेम को अलंकारों से सुशोभित कर देता है ये दूसरी बात थी, संगीत ने नीर को अलंकारों से सुशोभित कर दिया था, वह सोचने लगा था, उसकी शर्ट के जेब में रखे सात पेन से उसने सात पंक्तियों की एक कविता लिखी थी, उस कविता का शीर्षक समय के गर्भ में है, वह समय आने पर ही पता लगेगा। अगर पता लग गया तो ये हो जाएगी एक कहानी, और नहीं लगा तो रह जाएगी "एक कविता:- आधी और अधूरी"।

सुबह से दोपहर हो गई थी और नीर उस कक्षा से बाहर नहीं आया था, कुछ समय बाद जब नियति को ज्ञात हुआ कि बहुत लंबे समय से उसने नीर को नहीं देखा तो वह व्याकुल हो उठी थी, निःसंदेह ही अगर प्रेम सच्चा हो तो कुछ समय के अंतराल के बाद व्यक्ति का व्याकुल हो उठना लाज़मी था; राजन ने इस प्रसंग पर अपनी एक कविता में कहा था "कि तुम जा रहे हो ये ठीक बात है, दूसरे के घर ठहरोगे तो चलेगा लेकिन बसना मत और जब भी व्याकुल हो तो लौट आना, मैं तुम्हारा घर हूं, तुम अपने घर लौट आना"।

नियति को जब ये भान हुआ कि नीर उसे कहीं दिखाई नहीं दे रहा है तो उसने पूरा विद्यालय ढूंढ लिया पर नीर उसे कहीं नहीं मिला, संगीत कक्ष विद्यालय के भीतरी कोने में स्थित था ताकि उधर से आती ध्वनि से बाकी कक्षाओं के बच्चों को परेशानी न हो। जब नियति को नीर कहीं नहीं मिला तो वह चिंतित थी, पर वो चिंतित क्यों थी? नीर उसका प्रेमी तो था नहीं कि वो चिंतित हो उठती, आखिर मित्र के लिए भी कोई इतना चिंतित थोड़ी होता है, नियति कक्षा ग्यारहवीं के बाहर की दीवार जो विद्यालय के आंगन की तरफ को थी उसपर बैठ जाती है और विचार करने लगती है कि नीर कहां होगा, "आम प्रेम कहानियों के अनुसार अगर ये प्रसंग होता तो निःसंदेह ही नियति नीर के पसंदीदा स्थान को जानती" पर ये कहानी नीर की थी या किसी और की ये समय के गर्भ में था, नियति को नीर का पता नहीं था, वह बस विचार कर रही थी।

वो 12 दिसंबर की रात याद है आपको? छतरी प्रसंग; विचार करते हुए जब नियति उस प्रसंग तक पहुंची तो उसे नीर की एक बात याद आई, नीर ने उसे कहा था कि जब भी वह उसे न मिले तो वह उसे वहां ढूंढे जहां वो नहीं हो सकता हो, वो उसे वहीं मिलेगा; प्रेम में व्यक्ति सीमाएं पार कर ही देता है।

नियति को तभी ये याद आता है कि उसे तो नीर को गाना सिखाना था और वह अपने सर पर हाथ मारती हुई म्यूज़िक रूम की तरफ़ अपने कदम बढ़ा लेती है । म्यूज़िक रूम में नीर खिड़की की तरफ मुंह करके खड़ा दिखाई देता है, जी उस कक्षा की दीवार पर एक खिड़की भी थी जिसका मुख सामने के मैदान की ओर था, जिस मैदान में बंजारापन बिखरा था और वहां से दूसरी तरफ एक छोटा सा जंगल रूपी स्थान था, विद्यालय ने जंगल का स्थान नहीं लिया था, जंगल ने विद्यालय को काटकर अपना स्थान सुनिश्चित किया था।

नीर खिड़की से बाहर झांक ही रहा था कि पीछे से आता हुआ एक स्पर्श नीर के कंधे पर उसे महसूस होता है, नीर नियति के स्पर्श को समझता था, नियति ने उसके हाथ को एक बार पकड़ा था, हाउस वाला प्रसंग याद है आपको, तब! नीर ने जैसा ही स्पर्श महसूस किया वह बिना पीछे मुड़े बोल पड़ा; "नियति?"। जैसे मानों उसे कोई आत्मज्ञान हुआ हो कि ये नियति ही होगी, जैसा नियति को उस "hii" के मैसेज को देखने के बाद हुआ था।

दरअसल ये बात आत्मज्ञान और स्पर्श महसूस कर पाने से अधिक इस बात से अधिक नजदीकियां रखती थीं कि नीर के मुख पर अधिकतम समय नियति का भी नाम रहता था, कभी कभी तो वह अंग्रेज़ी की कक्षा में नियति की अटेंडेंस बोले जाने पर खुद खड़ा हो उपस्थिति लगा दिया करता था, मानों नीर और नियति एक ही हों? पर क्या सचमें नीर और नियति एक ही थे, क्या ये प्रेम कहीं नहीं बस दो अच्छे मित्रों की मित्रता से भरी कहानी थी? क्या मित्रता और प्रेम में कोई अंतर न था?

मेरी मानें तो मित्रता और प्रेम में कोई अंतर होता ही नहीं। नियति के स्पर्शमात्र से मानों नीर के शरीर में अकंपन हो उठा था उसके मन में हल्की सी आवाज़ में बांसुरी की धुन सुनाई दे रही हो ऐसा प्रतीत हो रहा था, वह नियति बोलने के बाद दो पल तक मौन था, मानों बच्चे के मुख पर मां को देखकर जो खुशी दिखाई पड़ती है, वैसी ही खुशी नीर को नियति बोलने पर दिखाई पड़ रही थी। ये संगीत की कक्षा, कक्षा न रहकर स्वयं संगीत बन गई थी जिसमें रची जा रही थी अलंकृत हुई कविता जो कहानी बनने से बस एक क़दम दूर थी।

नियति ने नीर के कंधे पर हाथ रखा और दोनों दीवार की खिड़की से बाहर झांकने लगे थे, ओल्ड स्कूल लव की कहानियों से निकलकर अब ये कहानी जेनज़ी प्रतीत हो रही थी। ये पहली बार था कि दोनों एक दूसरे के इतने नज़दीक थे, छतरी प्रसंग भी इस दृश्य को देख शर्मा रहा था और नीर और नियति दोनों पहली बार एक दूसरे के कंधे पर हाथ डाले खिड़की से बाहर के दृश्य को निहार रहे थे, पर रुकिए; क्या आप इसको प्रेम प्रसंग समझ थे हैं? ये कोई प्रेम प्रसंग थोड़ी था, क्या दो दोस्त एक दूसरे के कंधे में हाथ डाले खड़े नहीं रह सकते? ये तो मेरी अलंकृत भाषा से आपको ऐसा प्रतीत हुआ होगा कि नीर और नियति एक दूसरे के प्रेम में थे, ये तो मित्रों का भाव भी तो हो सकता होगा? तो आप सही हो सकते हैं, शायद ग़लत भी, अब आप सही हैं या गलत ये तो समय ही बताएगा, अगर उत्तर मिल गया तो हो जाएगी ये एक कहानी, और नहीं मिला तो रह जाएगी "एक कविता:- आधी और अधूरी"। समस्या ये न थी कि वह मित्रों की भांति मात्र कंधे में हाथ डाले ही तो खड़े थे, गौर की बात बस ये थी कि वह मौन खड़े थे, ऐसे चित्रण में मौन होना इस बात का संकेत था कि वह अब मित्र नहीं रह गए थे, वह एक दूसरे को मन ही मन सुन पा रहे थे। वह वहां मौन खड़े होने पर भी एक दूसरे से बातें कर रहे थे, उनकी बातें जिन दीवारों के कान थे वह भी सुनने में असमर्थ थीं, दीवार की खिड़की को भी कुछ भनक नहीं हो रही थी, पर जंगल उनको सुन पा रहा था, जंगल को अपने पेड़ों के जाने का दु:ख पता था।

!! ग्यारहवां अध्याय समाप्त !!

खिड़की

कहानीकार एक कहानी को लिखते समय ये ध्यान रखता है कि उससे कुछ निष्कर्ष निकलेगा, वह कहानी सिर्फ़ रस के लिए नहीं निष्कर्ष के लिए भी लिखता है, हर कहानी का अंत होगा ऐसा संभव है, या जहां अंत हो जाएगा वहीं वह कहानी बन जाएगी ऐसा आभास भी प्रतीत होता है। मेरे मित्र नीर की ये प्रेम कहानी है या कविता ये तो वक्त ही बताएगा पर ये सबसे भिन्न थी। जितना मैं नीर को जनता था वो प्रेम को लेकर हठी था, उसे मित्रता निभानी आती थी बस बात इतनी थी कि उसे समझा नहीं जा सकता था, वह व्यक्ति से उस व्यक्ति के इलावा कुछ नहीं चाहता था, शायद यही सबसे बड़ी चाहत थी।

नीर और नियति उस खिड़की के पास खड़े हुए थे, दीवार में बनी खिड़की लोहे की थी बीच में कुछ जंग सी भी लगी हुई थी नीर ने नियति को और नियति ने नीर को कंधे से पकड़ा हुआ था, मित्रता का भाव स्पष्ट दिखाई दे रहा था। सामने मैदान था और उसके पार जंगल, मैदान में बच्चे खेल रहे थे, जंगल में पशु पंछी खेल रहे थे, दोनों ही जगहों पर पशु थे, अंतर सिर्फ खेलों का था।

नीर अपने हाथ में एक बैंड पहनता था, नियति के नाम का...! पर वह बैंड नियति के द्वारा दिया हुआ नहीं था, उस ज़माने में फ्रेंडशिप डे पर बच्चे एक दूसरे को बैंड बांधा करते थे, नीर का ऐसा कोई मित्र न था जो उसे बैंड दे सो वह खुद खरीद कर पहन लिया करता था, नीर ने उसे नियति का बैंड घोषित कर दिया था, नीले रंग पर सफेद धारी थी मानों आसमान उसे बहुत पसंद हो, दोनों को ही आसमान पसंद था, चांद से नीर का पुराना नाता था मानों उसकी मां सचमें पृथ्वी ही हो। उन दोनों का मौन बढ़ता जा रहा था, वह मित्र न होते हुए प्रेमी महसूस होने लगे थे।

मौन में इतना बल होता है इसका ज्ञान मुझे इस प्रसंग के बाद ही पता लगा था, जो कार्य शब्द नहीं कर पाए थे वह उस मौन ने कर दिखाया था, शायद प्रेम प्रासंगिक होता दिखाई दे रहा था, नियति नीर के और नीर नियति के मौन को समझ पा रहे थे, और चूंकि वह मौन को समझ पा रहे थे इतना काफ़ी था ये बताने के लिए कि वह प्रेमी हो गए थे। ये सिर्फ मेरा आंकलन था, वो सच था या गलत ये तो वक्त ही बताएगा, मेरे लिए वह प्रसंग नीर के जीवन को बदलने वाला था, आदर्श का आना नीर के लिए इस बार एक अच्छा संकेत दे रहा था।

नीर और नियति की वार्ता शुरू हो गई थी, जब दो व्यक्ति मौन रहकर भी वार्ता कर पाते हैं तो वह निःसंदेह ही एक हो जाते हैं।
"तुम व्याकुल हो गई थीं?" नीर ने पूछा।
"नहीं, मैं क्यों व्याकुल होऊंगी" नियति ने सब जानते हुए अनजाने भाव से उत्तर दिया।
"तो तुम यहां क्यों आईं" नीर ने कहा।
"वो तो बस ऐसे ही" नियति ने नकारा।
"अरे बताओ न"।
"तुम्हें संगीत सिखाने का बोला था न, इसलिए"।
"अच्छा" नीर ने कहा।
"हां, और मैं अपने वादे की पक्की हूं, इसलिए चली आई" नियति ने शर्म भरी चंचलता से कहा।
"तो फिर सिखाओ संगीत" नीर ने प्रतिउत्तर दिया।
"वही तो सिखा रही हूं"; नियति ने नीर के कंधे से हाथ हटाकर उसके एक हाथ को पकड़ कर अपने ठोडी ने नीचे अपना दूसरा हाथ कर कर अपने ठोडी को खिड़की के चौखट पर रखते हुए कहा! उसने नीर के उस हाथ को ऐसे पकड़ा जैसा उस हाथ से वो गले लगी हुई है।

ये कहने के बाद इस मुद्रा में उसका आना मानों ये दर्शा रहा था कि वह नीर को संगीत नहीं प्रेम करना सिखा रही हो। पुरुषों को प्रेम करना नहीं आता ऐसा नहीं है वरना ये सृष्टि प्रेमावतार किसी पुरुष को नहीं स्त्री को बनती, परंतु पुरुषों का प्रेम दबा हुआ होता है, स्त्री के आने के बाद ही वह प्रेम बाहर आ पता है, एक बार बाहर आने के बाद वह बेशक अलग अलग आयाम पकड़ ले पर पुरुष बिना प्रकृति के मिलन के शिथिल अवस्था में ही है उसकी चेतना मारी हुई है वह स्थूल पड़ा हुआ है, प्रकृति का प्रेम उस पुरुष को सृजन करने की शक्ति देता है जैसी शक्ति इस समय नियति नीर को दे रही थी।

नियति के ये रूप आज तक मैंने नहीं देखा था, नीर स्तब्ध था, उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था, वह प्रकृति के मिलने के बाद भी पुरुष के मौलिक रूप यानी शून्यता को प्राप्त हो गया था, उसकी नशों में अकंपन तक नहीं हो रहा था, जो नियति के स्पर्श करने पर उसे हमेशा होता था, इस बार उसे नियति के स्पर्श से शून्यता महसूस हो रही थी। नियति पहली बार उसके इतने नज़दीक थी, खिड़की पर लगे जंग के कारण नियति को उसकी चुंबन महसूस हो रही थी सो वह अपना पूरा शरीर मानों नीर पर ही लादे हुई थी, नीर को उसका कोई भार नहीं लग रहा था। प्रेम में भार कैसा? जो काम हमारे लिए कठिन होता है वहीं काम हमारे लिए चींटी बराबर हो जाता है अगर उस कार्य को करने का आधार प्रेम हो तो।

एक व्यक्ति नदी के रुख से लेकर पहाड़ को काटने तक की हिम्मत रखता है प्रेम में, विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में प्रेम नहीं होता वहां बस प्रेम की शुरुवात मात्र होती है, वहां का प्रेम बीज है, वह वृक्ष तब बनेगा जब परेशानियां आएंगी, परिस्थितियां अनुकूल नहीं होंगी, आंधी में वही वृक्ष टिक पाते हैं जो जड़ों से प्रेम करते हैं, विपरीत परिस्थितियों में भी जड़ें जिस वृक्ष का साथ नहीं छोड़ती वह वृक्ष आंधी आने पर भी डटा रहता है। नियति का संगीत सिखाने का तरीका नीर को पसंद था, नियति उसे अंग्रेज़ी और हिंदी दोनों प्रकार के गीत सिखा रही थी।

जब वह उसे आलिंगन करती तो दो चार अंग्रेजी के शब्द बोल देती, उसकी चिंता करते समय उसे हिंदी याद आ जाती। नीर को लता ताई के गाने सबसे अधिक पसंद थे, वह आज की पीढ़ी में पैदा होने के बाद भी आज की पीढ़ी जैसा नहीं था, अस्सी के दशक के प्रेम का भाव लिए पैदा हुआ था मेरा मित्र। नियति ने नीर की नियति में एक नई धारा को प्रवाहित कर दिया था वह उस पल को महसूस कर रहा था जो उसने अपने जीवन जीवन में कभी नहीं किया था। वह नियति के इतने स्पर्श से ही नियति को अपना मान चुका था, मुझे उनके मन की एक वार्ता याद आ रही है जो नीर ने मुझे बताई थी।

"नीर, मैं तुमसे कुछ पूछूं?" नियति ने मन में कहा।
"हां बोलो न" नीर ने उत्तर दिया।
"सच सच बताओगे?" नियति ने शंका भरे शब्दों में पूछा।
"हां सच बताऊंगा, पूछो" नीर ने कहा।
"क्या तुम मुझसे प्रेम करते हो?" नियति ने बड़े ही संकोच से पूछा।
"तुम्हें क्या लगता है?" नीर ने पूछा।
"प्रश्न मत पूछो, उत्तर दो" नियति ने हड़काते हुई आवाज़ में कहा।
"जो तुम्हें लगता है मेरा उत्तर वही है" नीर ने कहा।
"मतलब करते हो?" नियति ने प्रश्न किया।
"मैने तो ऐसा नहीं कहा" नीर शर्माते
हुए हंसा।

नियति को ज्ञात था कि वह उससे प्रेम करता है, पर अगर ये उत्तर उसे मिल जाता तो ये कहानी हो जाती उसका ये उत्तर न मिलना इसे बना देता "एक कविता:- आधी और अधूरी"। परंतु ये कहानी बनेगी या कविता ये तो समय ही बताएगा।

नीर और नियति ने अपने मन में इस प्रश्न को प्रासंगिक कर दिया था, परंतु प्रत्यक्ष ये ओ प्रश्न आना अभी बाकी थी। नियति नीर से ऐसे छेड़ रही थी कि मानों वह मित्रता त्याग रही हो, वह सर्प हो गई थी वह चंदन से लिपट जाने के बाद केंचुली को छोड़ने लगी थी वह अब चंदन की सुगंध से अपनी नई केंचुली का निर्माण करना चाहती थी, चंदन इस बात से अनभिज्ञ था उसके लिए वह अभी भी उसी रूप में थी शायद वह इस पल को अभी तक स्वीकृति नहीं दे पा रहा था जिस पल को वह वर्षों से चाह रहा था।

खिड़की के बाहर झांकते हुए भी उसे ये अहसास नहीं हो रहा था कि वह जंगल की ओर देख रहा है, जहां स्वीकृति का कोई मोल नहीं वहां तो बस देना था लेने की इच्छा वहां नहीं दिखाई पड़ रही थी, नीर अपने सबसे ज़रूरी आदर्श को भूल सा रहा था, प्रेम सभी बंधनों और आदर्शों से परे है ऐसा प्रतीत हो रहा था। प्रेम निःसंदेह ही सबको त्यागने और सब पाने की दो जटिलतम क्रियाओं को एक साथ करने की क्षमता रखता है। नीर और नियति प्रेम कर रहे थे, वह मौन थे, उनका मौन होना ही उनका प्रेम था बहुत बोलने वाला व्यक्ति जब मौन हो जाता है तो वह प्रेम करने लगता है; " लोकोक्तियां अर्थ और निष्कर्ष से अधिक अभिप्राय और भावना में निवास करती हैं"।

दीवारों में खिड़की ज़रूरी होती है ताकि दो संसारों को एक साथ देख जा सके, दीवार की खिड़की अहंकार को कम करती है, क्योंकि जब हम खिड़की खोलते हैं तब हमें आभास होता है कि हमारे इस कमरे के बाहर भी एक दुनिया है, कुएं में रह रहे मेंढक के लिए भी एक खिड़की बना दी जाती तो वह यूहीं बदनाम न होता।

खिड़की के उपयोग बहुत सारे हैं, वह दुनिया देखने के इलावा, हवा के आदान प्रदान, बारिश के दृश्यों और घुटन से निजाद का एक अच्छा कार्य करती है। दीवार की खिड़की परिवार हो जाती है, वह कान होने पर भी, सब सुनने पर भी किसी बाहर वाले को कुछ नहीं बताती, वह दो प्रेम करने वालों ने प्रेम में क्या क्या किया नहीं बताती, वह नहीं बताएगी कि नियति और नीर क्या कर रहे हैं।

नीर और नियति बेफिक्र होकर प्रेम कर सकते थे, उन्हें खिड़की पर विश्वास था, प्रेम करने के लिए विश्वास ज़रूरी है, पर विश्वास प्रेमी के साथ साथ उन सभी चीज़ों पर भी करना पड़ेगा जो तुम्हारे प्रेमी से जुड़ी हुईं हैं, जैसे उस समय नियति के साथ जुड़ी हुई थी वो खिड़की।

नीर और नियति खिड़की पर लंबे समय से टीके हुए थे, किसी भी एक स्थान पर उनका एक साथ ये अत्यधिक समय था। खिड़की उनके लिए मानों नए दरवाज़े खोल रही थी, वहां खड़े होकर वह अपने दूसरे ओर के संसार को देख रहे थे, जहां मैदान और जंगल दोनों थे वह अपने प्रेम के उच्चतम लक्ष्य तक को वहां खड़े खड़े भांप रहे थे, जहां मैदान सी परेशानियां थीं जो बंजर पड़ी हुई थीं और उसी ओर खुशी के जंगल थे जहां पशु खेल रहे थे। वह अपना भविष्य उस खिड़की पर लिख चुके थे, उन्हें अब निकलने के लिए किसी दरवाज़े की ज़रूरत नहीं थी, खिड़की उनके लिए वह कार्य कर रही थी।

इस प्रसंग के बाद ये नीर की नहीं नियति की कहानी हो गई थी, या कहूं तो इस कविता का आधार नियति हो चली थी। नियति का नीर के हाथ को किया गया आलिंगन उसके शरीर तक पहुंच रहा था, वह धीरे धीरे उसे जकड़ती जा रही थी, मानों ठंड के मौसम में बारिश हो रही हो। बारिश का होना ठंड का आना था, ठंड से गर्माहट लेने के लिए जैसे जकड़ा जा सकता था वैसे ही वह नीर को पकड़े हुए थे, ये नीर के जीवन का पहला आलिंगन था जो उसे किसी बाहर के व्यक्ति ने दिया था, यूं तो नियति बाहर की नहीं थी पर अभी घर का होने में उसे समय था। सूर्य बादलों से हार कर छुप गया था चंद्रमा को निकलने में समय था, विद्यालय के समाप्ति की घंटी बजने वाली थी कमरे का दरवाज़ा बंद हो चुका था रोशनी का कोई स्त्रोत हमें दिखाई नहीं पड़ रहा था, वह आलिंगन मानों जीवन से सब हारकर सब पा लेने जैसा महसूस हो रहा था, शून्यता को प्राप्त कर रहे थे दो मित्र, रोशनी केवल खिड़की से आ रही थी पूरा अंधकार भी ठीक नहीं था, दरवाज़े बंद होने पर खिड़कियां खुली रहनी चाहिए। नियति मित्रता की केंचुली उतार चंदन रूपी नीर से लिपट गई थी, वह चंदन के लेप में अपने आप को रम चुकी थी, अब वह, वह नहीं रह गई थी जो वह थी, वह, वह बन गई थी जो नीर बनना चाहता था, नीर न बन पाया, नियति बन गई।

नीर इस बात से नाराज़ होगा कि वह नियति नहीं बन पाया या वह इस बात से खुश होगा कि नियति नीर बन गई थी। इसका उत्तर तो समय के गर्भ में है, अगर मिल गया तो ये हो जाएगी कहानी और नहीं मिला तो रह जाएगी "एक कविता:- आधी और अधूरी"।

नीर और नियति का घंटों का ये मौन सब कह चुका था, पर जो कहा जाना चाहिए था वो अभी बाकी थी, मेरे अलंकारों में भले ही वह केंचुली उतर गई थी पर उसका धरातल में उतरना अभी बाकी था। मन की वार्ता अगर मन में न रहकर सामने हो पाती तो अविवाहित न मरते इतने आशिक़, विवाहित होना उनके मन की बातों को मन में ही मार गया। नीर और नियति का मौन उनके प्रेम को प्रासंगिक कर पाएगा कि नहीं ये किसी को नहीं पता, पर उनका मौन उनके भविष्य के लिए ठीक न था। हमें समय पर सब बोल देना चाहिए, समय निकलने पर बात का समय भी निकल जाता है फिर रह जाती है बस आत्मग्लानि, वह आलिंगन मित्रता के भाव से लिप्त भी हो सकता था, नीर को संगीत न सिखा पाने के ग्लानि को मिटाने के लिए शायद उसने उसे गले से लगाया होगा। शायद नीर नियति को संगीत न सीखाने के लिए माफ़ कर देगा, पर क्या वह खुद को संगीत न सीख पाने के लिए माफ़ कर पाएगा?

नियति को समय का भान न हुआ, आज का पूरा दिन खिड़की पर बीत चुका था, संगीत के सारे गुण वह नीर को महसूस करा चुकी थी अब बस संगीत का गाना बाकी था। संगीत गाने के लिए नीर के पास बस 7 मिनिट थे उसके बाद विद्यालय की घंटी बजने वाली थी, संगीत के बीच में अगर कोई आवाज़ हो जाए तो संगीत खराब हो जाता है इसलिए नीर ने उस समय वो संगीत गाना सही नहीं समझा उसको मिले वो सात मिनिट में अगर वो संगीत गा देता तो वह निःसंदेह ही अच्छा गायक बन सकता था, पर उसने वो मौका छोड़ दिया।

खिड़की ने जो मौका उसे दिया था अब वह उसे दुबारा मिल भी पाएगा या नहीं ये किसी को ज्ञात नहीं था, प्रकृति सबको मौका देती है, प्रेम में हद पार करना भी प्रेम का एक अभिन्न अंश है, मीरा ने ज़हर न पिया होता तो कृष्ण उसे न मिलते, सती अगर अग्निकुंड में न गिरी होती तो शिव से उनका मिलना निश्चित न था। खिड़की ने भी आज नीर और नियति को मिलने के लिए सारी हदें पर कर दी थीं, वह अपने आप को पीड़ा देकर भी इस प्रसंग को प्रसिद्ध करना चाहती थी। बेशक नीर और नियति ने उसके योगदान को न समझा हो पर मैं तो एक कवि हूं राजन, मुझे जीवित कहानियों में निर्जीवों का योगदान अधिक याद रहता है, जब नीर मुझे ये प्रसंग सुना रहा था तो मैंने ये ठान लिया था कि इस कहानी में इस खिड़की का योगदान स्वर्णिम अक्षरों से लिखा जाएगा, यही कारण था कि अभी तक कविता के तर्ज़ पर चलने वाली ये कहानी असल में इस अध्याय से शुरू हुई थी।

नियति के लिए वो सात मिनिट आवश्यक थे, मन में पूछा गया प्रश्न लबों पर आने ही वाला था कि घंटी बज जाती है, मैदान के बच्चे अपने अपने बस्ते उठा विद्यालय को छोड़ने लगते हैं, कर्मचारी कक्षा में आते हैं तो खिड़की बंद हो जाती। खिड़की बंद होने पर जंगल दिखाई नहीं पड़ता, जंगल का दिखना आवश्यक था, जंगल नीर का भविष्य था उसकी नियति थी, वह संगीत न गाने के लिए अब पछता रहा था, उसका जंगल उससे दूर हो रहा था, वह अब मैदान से होते हुए विद्यालय को छोड़ देगा।

कुछ वक्त और मिल जाता तो ठीक था, वक्त की कमी ही थी कि वह संगीत पूरा न हो पाया था। अक्सर ऐसा होता है कि, वक्त निकल जाने पर हम वक्त निकाल पाते हैं अगर वक्त पर वक्त निकल लिया होता तो वक्त यूं न निकलता। गौरतलब ये बात हुई होगी समय और प्रकृति के बीच कभी करोड़ों वर्षों पूर्व की जब भी मैं निकलूं तो तुम मुझे थाम लेना, वक्त को थामा नहीं जा सकता, जिया जा सकता है, वक्त किसी के लिए नहीं रुकता उसे खींचा जा सकता है, नियति ये सात मिनिट सात घंटे तक खींचना चाहती थी, वह कुछ देर और वहां रुकना चाहती थी, वह नीर होना चाहती थी।

उन सात मिनटों में जो हुआ वो भावनात्मक था, शब्दों में व्याख्या कर पाना कठिन था, वह दोनों खिड़की से बाहर झांक ही रहे थे कि उन्हें जंगल के एक वृक्ष पर एक पडकुलिया बैठी दिखी, उस क्षेत्र में पाई जाने वाली एक पक्षियों की प्रजाति थी, छोटी छोटी ये चिड़ियां सारा दिन चहचहाई हुई रहती थीं कहा जाता की की उन्हें कोई बोलता हुआ सुन लेता था तो उसकी सभी इच्छाएं पूरी हो जाती थी, नीर के मन ने चिड़िया से बात करनी चाही।

"सुनो?" नीर ने पडकुलिया से कहा।

"पडकुलिया ने मुंह फेर लिया"।

"सुनों न" नीर ने फिर कहा।

"बोलो क्या हुआ" पडकुलिया ने नीर से पूछा।

"एक बार ज़ोर से बोलदो न" नीर ने आग्रह पूर्वक कहा।

"मैं तो नहीं बोलती" पडकुलिया ने नीर को प्रताड़ित दृष्टि से देखा।

"नियति मेरे साथ ही है, मैंने सुना है कि कोई प्रेमी जोड़ा तुम्हें बोलते हुए सुन ले तो उसकी इच्छाएं पूरी हो जाती हैं?" नीर ने पुनः आग्रह के पीछे का व्याख्यान दिया।

"सुना तो मैंने भी ऐसा ही कुछ है" पडकुलिया ने हल्की सी मुस्कान भरी आवाज़ में कहा।

"तो बोलो न";

"मुझे क्या मिलेगा?";

"मैं तुम्हें रोज़ दाना दूंगा";

"वो मुझे ये जंगल दे देता है";

"मैं तुम्हारे लिए घर बना दूंगा";

"वो भी मुझे ये जंगल दे देता है"

"तो फिर तुम्हें क्या चाहिए";

"एक वचन दो, तो बोल दूंगी"; पडकुलिया ने कहा।

"कैसा वचन, मांगों" नीर ने कहा।

"मुझे वचन दो की अपना घर बस जाने पर तुम मेरा घर तोड़ोगे नहीं"।

पडकुलिया के इस वचन आग्रह से नीर चिंतन में चला गया था, वह विचार नहीं कर पा रहा था कि पडकुलिया के कहने का उद्देश्य क्या था उसके इस वचन के पीछे का अर्थ क्या था, वह किस ओर संकेत दे रही थी। इसपर विवेचना करने के अधिकार मैं आप पर छोड़ता हूं। नीर ने संकोच में ही सही पडकुलिया को वह वचन दे दिया, नीर वचन का पक्का था मानों रघुवंश का लहू उसकी रगों में उबाल ले रहा हो, वह अपने को कष्ट होने पर भी अपने वचन को भंग नहीं करता था, मनमोहक के प्रसंग में ये प्रासंगिक होने वाला था। वचन पाकर पडकुलिया बोल उठती है, नियति बहुत खुश थी क्योंकि वह नीर के साथ वो सात मिनिट बिता चुकी थी, पूरी वार्ता के साथ ही वह सात मिनिट भी मौन ही थे, इस मन में हुई बातचीत का निष्कर्ष किसी को ज्ञात नहीं था, मौन ने प्रेम को वशीभूत कर लिया था। पडकुलिया के बोलने के बाद मानों नीर ये मान बैठा था कि अब वह और नियति एक हो गए हैं, खिड़की ने भी ये संकेत दे दिए थे, पर क्या यह सचमें इतना ही था, क्या ये कहानी यहां समाप्त हो रही थी, क्या स्कूल की बेल बजने पर ये कहानी समाप्त हो जाएगी, क्या सचमें ये कहानी हो गई है, या रह गई है "एक कविता:- आधी और अधूरी"।

!! बारहवां अध्याय समाप्त !!

तीसरा पक्ष

अधिकतम समय हम किसी भी चीज़ का एक पक्ष देखते हैं, आज के सोशल मीडिया के ज़माने में ये आम बात है, जिस ज़माने की ये कहानी है तब सोशल मीडिया आज के जितना प्रचलित नहीं था, महामारी ने इसे अधिक प्रचलित बना दिया। हम पक्ष की बात कर रहे थे, व्यक्ति को अक्सर ये रहता है कि वह चीजों का सिर्फ एक पक्ष देखकर उसका आंकलन कर लेता है, बहुत ज्यादा विचार करने वाला व्यक्ति होगा तो वह दो पक्षों तक सीमित रह जाएगा, परंतु इस भारतीय परंपरा में एक ही सत के कई प्रकार होते हैं, जैसे हमारे यहां एक ईश्वर तक पहुंचने के सैकड़ों मार्ग है, व्यक्ति अगर एक दो पक्षों के इलावा किसी तीसरे पक्ष तक भी पहुंच पाता तो भी वह बिना दुख का जीवन जी सकता था, वह अगर बस इतना विचार कर पाता की वह असंख्य नहीं अपितु केवल तीन पक्ष देख पाता तो बहुत से परेशानियों का हल मिल जाता। इस जीवन में आम लोग सिर्फ एक पक्ष देखते हैं, गुणी लोग दो पक्षों तक सीमित रहते हैं, और ज्ञानी तीसरे पक्ष को छू पता है, इसे अधिक पक्षों के जानकार को इस परंपरा में महाज्ञानी या तो ऋषि की उपाधि दो गई है।

नीर और नियति के इस प्रेमगाथा में हम अभी तक दो भावों की प्रधानता को देखते आए हैं, हमने उनके मित्रता के भाव सहित प्रेम के भावों को दो पक्षों में देखने का प्रयास किया है, पर क्या ये कहानी आमजनमानस की कहानी थी? क्या इसके भी बस दो ही पक्ष थे? क्या आमजनमानस की कहानियों के दो ही पक्ष होते हैं? क्या हमारे तथ्यों और तर्कों ने इस कहानी रूपी कविता को मित्रता और प्रेम के दो भावों में संकुचित कर दिया था? या फिर इसका कोई तीसरा पक्ष भी था।

खिड़की बंद हो गई थी, नीर और नियति म्यूज़िक कक्षा से बाहर आ गए थे, स्कूल की छुटी हो गई थी, सभी लोग स्कूल से जा चुके थे, जिन दोस्तों के साथ नीर और नियति अपने अपने घर जाते थे वह उनके न मिलने पर अपने अपने घर चले गए थे। नीर और नियति दोनों साथ में अकेले स्कूल से बाहर निकले थे। स्कूल से पचास मीटर दूर एक चौराहे से दोनों के घर के रास्ते अलग हो जाते थे, यूं तो वह दोनों रास्ते पैरलल यानी समानांतर जाते थे बस बीच में एक दीवार थी जो उन दोनों रास्तों को अलग कर देती थी, दोनों का घर भी विद्यालय से लगभग बराबर की दूरी पर ही था, बस रस्ते दो अलग अलग थे।

रास्ता मात्र पचास मीटर का ही था, उसके बाद वह अलग होने वाले थे, और पूरा दिन साथ बिताने के बाद भी मानों उनका दिल यही कह रहा था "कि अभी न जाओ छोड़कर, की दिल अभी भरा नहीं" पर जाना सबको होता है, समस्या जाने में न थी, सबकी इच्छा से जाने में थी, अगर दो प्रेम करने वाले एक दूसरे की इच्छा से जाते तो प्रेम वहीं का वहीं बना रहता, जब वह उस स्थान पर दुबारा लौटते तो उन्हें वह उसी रूप में मिलता, प्रेम का जाना दुःख नहीं देता, इसका असमय और इच्छारहित होकर जाना अधिक दुख देता है। अभी तक नीर और नियति को उनके खिड़की पर बिताए वह सात मिनिट अपने जीवन के सबसे हसीन पल लग रहे थे, पर वह बदलने वाले थे क्योंकि ये पचास मीटर - पचास किलोमीटर के बराबर होने वाले थे।

नीर और नियति विद्यालय के दरवाज़े को पार कर उस चौराहे पर जाने के लिए निकल चुके थे, बगल से हाइवे की रोड निकल रही थी, इधर उधर कुछ दुकानें थीं और चौराहे पर "स्कूल चले हम" के अभियान को दर्शाते दो मूर्ति रूपी बच्चे खड़े हुए थे। मुश्किल से पचास मीटर का रास्ता था, जिसे नीर और नियति को पर करना था, जब कोई "अपना" साथ होता है तो लंबे से लंबे रस्ते बिना थके पार हो जाते हैं और छोटे से छोटे रास्तों को पार करने में घंटों लग जाते हैं।

नीर नियति की छोटी उंगली में अपने छोटी उंगली डाले एक हाथ बस्ते की बद्दी को पकड़े चल रहा था, मानों की कोई बच्चा अपनी मां के हाथ को पकड़े हो, मित्र और प्रेमी से नियति नीर के लिए मां क्यों होती जा रही थी? प्रेम में व्यक्ति मां हो जाता है, मां होना यहां मातृत्व के भाव को जागृत करने जैसा है जिसमें असंख्य संभावनाएं छुपी हुई हैं, एक पुरुष भी मां हो सकता है, नीर के इलावा मेरा एक और मित्र है "मनमोहक" जिसके लिए मैं मां हो जाता हूं। नियति नीर के लिए मां होती जा रही थी, आखिर क्या होता है ये मां होना।

जब व्यक्ति को किसी से निस्वार्थ प्रेम हो जाता है, जब वह अपनी किसी इच्छा की पूर्ति के लिए उसके साथ नहीं होता, जब वह सिर्फ़ उसके साथ होता है उसे ये आभास होता है कि उसके साथ कोई है, कोई ऐसा आंचल उसकी रक्षा कर रहा है जिसकी वजह से वह निडर होकर कुछ भी कर सकता है, प्रेम का अनंत प्रवाह जहां पीड़ा होने पर भी प्रेम कम नहीं होता, जहां आप रूठने के बाद भी छल कपट से दूर हो जाते हैं, वहां आप मां हो जाते हैं। आज के दिन मानों नीर को नियति मां दिख रही थी, नियति का ऐसा रूप उसने कभी नहीं देखा था, वह उसे प्रेम भी कर रही थी और मित्र की भांति उसके साथ भी थी, शायद उसे इससे कुछ नहीं मिलने वाला था, उसकी आँखें ये बता रही थी कि वह नीर के लिए मां होती जा रही थी। वह नीर पर वो सब उड़ेल देना चाहती थी जो उसके पास है, न जाने क्यों वह आज नीर को संगीत सिखाकर ही भेजना चाहती थी वह पडकुलिया के विषय में चल रही कहावतों को सच करना चाहती थी।

नीर और नियति के संबंध को देख ये आंकलन कर पाना कठिन था कि क्या अभी भी वह बस मित्र ही थे, या उस ज़माने के हिसाब से प्रेमी होने की सारी हदें उन्होंने पर कर दी थीं, इन प्रश्नों का उत्तर न नियति के पास था न नीर के पास फिर उनके मौन अवस्था में पुनः एक वार्ता होती है।

"हम अपने रिश्ते को क्या नाम दें?" नीर ने मन में पूछा।
"नाम ही क्यों देना है" नियति ने उत्तर दिया।
"तो हम क्या हैं" नीर ने नियति से पूछा।
"हम अच्छे मित्र हैं" नियति बोली।
"सिर्फ़ मित्र हैं?" नीर ने प्रश्न पर बल दिया।
"मतलब; पता नहीं" नियति ने संकोच में सोचा।
"क्या तुम मुझसे प्रेम नहीं करती?" नीर ने कहा।
"नहीं ऐसा नहीं है" नियति तेज़ी से बोल उठी।
"तो तुमने ऐसा क्यों कहा कि हम बस एक अच्छे मित्र हैं"; नीर ने कहा।
"मैंने "बस" कब कहा"; नियति ने बोला।
"मैंने कहां हम अच्छे मित्र हैं, दो प्रेमी अच्छे मित्र नहीं हो सकते क्या?" नियति ने पुनः दोहराया।
"तो यानी हम प्रेमी हैं?" नीर ने प्रश्न किया।
"मैंने तो नहीं कहा"; नियति शर्माते हुए हंस पड़ी।

नियति नीर के विषय में समाज के सामने तीसरा पक्ष रखना चाहती थी।

"निशाने पर लगे जाकर उसी को तीर कहते है
ठिकाने जो नही रहती उसे तकदीर कहते है।"

राजन ने जब इन पंक्तियों का सृजन किया था तो उन्होंने कहा था कि किस्मत में सब कुछ नहीं लिखा होता, कुछ कर्म हमें अपने पुरुषार्थ से हासिल करने होते हैं। नीर और नियति दोनों ही सड़क पर चल रहे थे, वह अपना भविष्य एक दूसरे में देख रहे थे, ठीक उस तीर की भांति जिसे अगर ढंग से चलाया जाए तो वह निशाने पर लगता है, परंतु "सिर्फ ढंग से चलाया जाए तब"।

नीर चलते हुए एक छोटे से पत्थर पर पैर रखता है तो वह उसे चुभ उठता है, उसकी चीख से नियति मानों व्याकुल हो उठती है, वो जोर से उसका हाथ पकड़ कर पूछती है "क्या हुआ?";
"अरे कुछ नहीं पत्थर चुभा"।
"मुझे दिखाओ"।
"नहीं नहीं ठीक है, चलो"।
"जितना बोला है उतना करो"।
नियति डांट भरी आवाज़ में नीर को चुप करा देती है, उसके डांट में इतना बल था कि नीर फुटपाथ पर ही बैठ जाता है, नियति उसके पैर से जूता निकल उसका पैर देखने लगती है, प्रेम कथाओं में अक्सर उल्टा होता हुआ दिखाई देता है, यहां नियति नीर के पैर को अपने घुटने ऊपर रख थोड़ा सा मल देती है, नियति यहां न मित्र थी, न प्रेमी थी, वह नीर के लिए यहां मां बन गई थी, जब एक स्त्री प्रेम में मां बन जाती है तो समझ लीजिए कि वह प्रेम प्रासंगिक हो गया है, वह प्रेम नैसर्गिक हो गया है, जिसको न चाहते हुए भी कवियों को देनी पड़ेगी एक अमर प्रेमकथा की उपाधि; नीर और नियति की इस प्रेम कहानी में ये तीसरा पक्ष था।

!! तेरहवां अध्याय समाप्त !!

चौराहा महाज्ञानी है

छोटे फासले कई बार बहुत लंबे दिखाई पड़ते हैं, इन पलों में बिताया गया समय कई बार जीवन की अनमोल सीख दे जाता है। ऐसी सीख जो शायद हम पूरे विद्यालय और महाविद्यालय के जीवन में भी नहीं सीख पाते, किताबें निःसंदेह ही बहुत सारे दृष्टिकोण सिखाती हैं पर उन्हें पढ़ने के बाद कहां उनके ज्ञान का उपयोग करना है ये सब जीवन के संघर्ष ही सिखा पाते हैं। जीवन के संघर्षों से बड़ा कोई ज्ञान नहीं, इसीलिए शायद इस भारतीय परंपरा में अनपढ़ कबीर इस परंपरा के बहुत ज्ञानी व्यक्तियों में से एक हुए। कई बार हम दूसरों के परिश्रम और जीवन से बहुत कुछ सीख जाते हैं, कई बार हम खुद परिश्रम करके सीखते हैं, कई बार प्रकृति हमें हमारी परिस्थितियों के प्रतिकूल रखकर कुछ ज्ञान दे जाती है।

नियति के पैर को मलने के बाद उसपर अपनी फूंक से उसकी चोट को सहलाने के बाद वह दोनों खड़े हो जाते हैं। नीर नियति के कंधे पर हाथ रख खड़ा होता है, नियति के पूछने पर कि वो सही है, उसका उत्तर हां में आता है और वह दोनों पुनः अपनी यात्रा पर निकल जाते हैं, पचास मीटर का फासला आधा तय हो चुका था, बाकी आधा फासला बचा हुआ था उसके बाद वह अलग हो जाते, पूरे एक दिवस के लिए।

नीर और नियति दोनों के पास बहुत सारी बातें होने के बाद भी दोनों ने मौन धारण कर लिया था, प्रेमियों को ये समझना चाहिए कि जब बहुत कुछ बोलने के लिए होने पर भी व्यक्ति अगर मौन धारण किए हुए है तो वह सचमें उससे प्रेम करता है। मैं अपने मित्र के सामने भी प्रेमी हो जाता हूं, मुझे याद है राजन की एक बार मैं जब नीर के मुख से ये प्रसंग सुन रहा था तो वह मौन हो गया था, उसका मौन रहना मुझे बता पा रहा था कि प्रसंग में क्या क्या हुआ होगा।

दो मित्रों और प्रेमियों को एक दूसरे का मौन समझ आना चाहिए, जब उन्हें एक दूसरे का मौन समझ आने लगता है तो वह निःसंदेह ही अच्छे मित्र या अच्छे प्रेमी कहलाने लगते हैं, मौन की समझ प्रेम की गहराई है। नीर और नियति के मन में बहुत सारे प्रश्न थे, वह दोनों अभी अभी दो ऐसे पल बिताकर आए थे जो उस समय के परिपेक्ष में सरल न थे, वह प्रेम और वात्सल्य से भरे हुए थे इसलिए उनके मौन से बहुत कुछ झलक रहा था।

वह पचास मीटर मानों पचास किलोमीटर से प्रतीत होने लगे थे, समय मानों थम सा गया था, शायद समय की बजाय उनका मन थमा हो ये भी हो सकता था। प्रेम में चंचल मन भी थम जाता है, कृष्ण ने गीता में ये संदेश दिया कि मन को कैसे साधा जाए, मन को साधने के लिए अत्यंत आवश्यक है कि हम किसी एक वस्तु पर ध्यान केंद्रित कर उसे लक्ष्य बना लें, प्रेमी अपने प्रेम को वो लक्ष्य बना कर उसपर ध्यान केंद्रित कर देते हैं, अगर प्रेम सच्चा हो तो उनका मन स्थिर हो जाता है, फिर वह भटकते हुए इधर उधर नहीं जाता। मन का भटकाव प्रेम के सच्चे होने का एक और गुण हो सकता है, शायद।

मौन और मन को साधते साधते चौराहा आ गया था! अब नीर और नियति के दो अलग अलग रास्ते थे, उन दोनों को अब अपने अपने रस्ते जाना होगा, दोनों प्रेमी न होने के बाद भी इस प्रकार बिछड़ने से व्याकुल हो उठे थे, विरह की पीड़ा सबको झेलनी पड़ती थी। दोनों चलते चलते रुक जाते हैं, अब दोनों को अपने अपने रस्ते लेने थे, दोनों अपने आप को इस बात के लिए राज़ी कर रहे थे कि अब जाना होगा। पूरा दिवस साथ में बिताने के बाद भी मानों उनका मन न भरा था, प्रेम से किसी का मन नहीं भरता, शायद!

वह दोनों आज के दिवस में आखिरी बार फिर एक बार मन में बात करते हैं।
"तुम पक्का जा रहे हो?" इस बार पहले नियति ने पूछा।
"नहीं जाना चाहता" नीर ने रुदन भरे शब्दों में कहा।
"जाना तो पड़ेगा ही" नियति बोली।
"हां शायद"; नीर।
"सबको एक न एक दिन जाना ही होता है क्या?" नियति ने धितकारते हुए कहा।
"दिक्कत जाने में नहीं है, लौटकर न आने में है"; नीर ने उसको समझाया।

जाना समस्या नहीं था, उन्हें पता था कि उन्हें अलग होना पड़ेगा, ये पीड़ा दुःख भरी पीड़ा नहीं थी, पीड़ाएं अलग अलग प्रकार की होती हैं, एक पीड़ा में दुःख नहीं होता, दूसरे प्रकार की पीड़ाओं में दुख होता है। यहां उनका पुनः मिलना तय था, शायद! यहां कुछ पल का विरह था जिससे उन्हें पार पाना था, दोनों ने मन ही मन अपने आप को समझाया, वह जाने के लिए तैयार हुए, दिक्कत जाने में न थी, दिक्कत लौटकर आने में थी।

नियति थोड़ी अधिक उदास दिखाई पड़ रही थी, उसे शायद आज का दिवस जीवन भर याद रहने वाला था, पहली बार शायद उसने अपने और नीर के जीवन से जुड़ा तीसरा पक्ष देखा था, उसके मुख की निराशा नीर से देखी न जा रही थी, वह अपना दुःख भुलाकर मस्त मौला होने का ढोंग करने लगा था, वह मज़ाक मस्ती के साथ नियति को विदा करना चाहता था, पहली बार उसने राजन की कुछ पंक्तियां नियति को सुनानी चाहिं, नीर ने नियति को खुशी खुशी विदा करने के लिए कहा;

"इश्क़ में क्यों हार जीत देखते हो तुम,
दोस्ती में क्या गुरुर देखते हो तुम,
दिल ये मेरा जानता है राम के दस्तूर को,
उसने भी विरह है झेला आप क्यों मग़रूर हो !!"

राजन की ये पंक्तियां नीर को अत्यंत अच्छी लगती थीं, उसके जीवन के कुछ मूल्यों पर ये खरी उतरती थीं, प्रेम में विरह का अच्छा उदाहरण पेश करते हुए उसने नियति को न चाहते हुए भी "bye" कहने की हिम्मत कर ही दी। उन्होंने एक दूसरे को पहली बार गले लगाया, मानों जैसे दो दोस्त एक दूसरे को दूर देश भेज रहे हों और फिर दोनों अपने अपने रस्ते पर निकल गए।

चौराहा ये सब अपनी आंखों से देख रहा था, चौराहा महाज्ञानी था, वह किसी भी रस्ते के चार पक्ष देख सकता था, वह आते जाते लोगों, गाड़ियों, पशुओं और पक्षियों के जीवन के चार पक्ष देखता था, शायद उसके पास आम जनमानस से अधिक अनुभव और ज्ञान था इसीलिए हमेशा समाज और सरकार ने चौराहों पर लिखने चाहे सबसे ज़रूरी संदेश, जैसे हमारे उस चौराहे पर लिखा था "स्कूल चले हम" अभियान का संदेश। आज उस चौराहे ने देखी थी विरह के पीड़ा, अब वह उस पीड़ा में चौथा पक्ष निकालने का प्रयास करेगा, ताकि वह इस समाज को दे सके कोई अच्छा संदेश, अपने अनुभव और ज्ञान की पोटली से। क्या चौराहा कोई संदेश देगा या नहीं ये तो समय के गर्भ में ही है, अगर इसका उत्तर मिल गया तो हो जाएगी ये एक कहानी और नहीं मिला तो रह जाएगी "एक कविता :- आधी और अधूरी"।

!! चौदहवां अध्याय समाप्त !!

पहला प्रेम

जब पहली बार मन ने किसी को छुआ, वह स्पर्श जैसे वसंत का पहला अंकुर धरती के हृदय से फूट पड़ा हो। आँखों में उतरा वह चेहरा जैसे अमावस की चुप्पी में अचानक उतर आए पूर्णिमा का चाँद - अनकहा, फिर भी सब कह देने वाला। पहला प्रेम फूल का वह पल है जब वह जानता है कि अपनी महक के साथ वह हवा में बिखर जाएगा, फिर भी खिलता है, क्योंकि यही उसका धर्म है। यह नदी का वह क्षण है जब वह पहाड़ से पहली बार ढलान पर फिसलती है, जानते हुए कि अंततः सागर में विलीन हो जाएगी, फिर भी गुनगुनाती है, क्योंकि बहना ही उसका सत्य है। पहला प्रेम हमें सिखाता है- प्रेम पाना नहीं, प्रेम होना है। जैसे सूरज सिर्फ चमकता है, न कि किसी से रोशनी वापस माँगता है। और तब समझ आता है कि पहला प्रेम किसी व्यक्ति का नहीं, बल्कि स्वयं जीवन का पहला स्वाद है - जिसमें मिट्टी, हवा, पानी और अनंत आकाश सब घुल जाते हैं।

नीर और नियति दोनों मन के किसी न किसी हिस्से में ये मान चुके थे कि उन्हें प्रेम हो गया है। नीर का ये पहला प्रेम था, संभवतः नियति का अनंत से प्रेम था या नहीं इस विषय पर कुछ खास जानकारी मेरे पास नहीं थी, इसलिए उसके विषय में मैं इसे पहला प्रेम कहने से बचूंगा। नीर के लिए ये मौका उतना ही खुशी से भरा हुआ था जैसा किसी व्यक्ति के लिए पहले प्रेम के विषय में होना चाहिए, प्रेम हो या कुछ और सबको अपना “ पहला “ बहुत पसंद होता ही है।

जीवन में “पहले” का महत्व अत्यंत व्यापक और गूढ़ है, जो हमारे अस्तित्व, पहचान, संबंध, नैतिकता और परिवर्तन के हर पहलू को छूता है। “पहला” अनुभव या पहला कदम केवल समय की शुरुआत नहीं होता, बल्कि यह हमारे जीवन की दिशा और स्वरूप निर्धारित करता है। जब एक नवजात शिशु पहला शब्द बोलता है, या कोई जीवन में पहली बार सफलता, प्रेम, या दुःख का सामना करता है, तो वे अनुभव स्मृति और पहचान की नींव बनाते हैं जो पूरे जीवन को आकार देते हैं।

अस्तित्ववाद यह कहता है कि व्यक्ति का अस्तित्व उसके सार से पहले होता है, यानी वह अपने पहले निर्णयों, अनुभवों और पहल के माध्यम से स्वयं का अर्थ और पहचान रचता है। हर एक पहला संबंध जैसे पहली मित्रता, पहला प्रेम या पहला विश्वासघात, जीवन के नए अध्याय का उद्घाटन होते हैं, जो हमें परंपराओं और पुराने बंधनों से बाहर निकाल कर विकास की ओर ले जाता है। इसके साथ ही ये “पहले” नैतिकता और ज़िम्मेदारी का भी आधार होते हैं; पहली बार जब हम सच बोलते हैं या दया दिखाते हैं, तब हमारे नैतिक स्वरूप का निर्माण होता है और हम अपने कर्मों के प्रति उत्तरदायी बनते हैं।

“पहले” के साथ चिंता और साहस भी जुड़ा होता है, क्योंकि नया आरंभ हमेशा अज्ञात की ओर एक साहसिक कदम होता है, जो जिज्ञासा और रचनात्मकता को जन्म देता है। यही “पहले” की भावना ज्ञान की शुरुआत का कारण होती है और जीवन को निरंतर सार्थक और गतिशील बनाती है। इसलिए, जीवन में हर नए आरंभ, हर “पहले” को न केवल एक घटना के रूप में देखें, बल्कि इसे अर्थपूर्ण बदलाव और अपनी आत्मा के विस्तार के अवसर के रूप में अपनाएं, जो हमें एक पूर्ण और सृजनशील जीवन के लिए प्रेरित करता है। नीर का ये पहला प्रेम उसके जीवन के लिए परिवर्तन की पहली सीढ़ी बनने वाला था।

नीर के लिए उस चौराहे से आगे बढ़ना मानों उसके घर की बजाय उसके पहले प्रेम के रास्ते की और ले जा रहा था, जहां वह अनुभव करने वाला था कुछ हसीन पल और ढेर सारे वादों में प्रेम का अनुभव।

नीर का घर उस चौराहे से कुछ चार सौ मीटर की दूरी पर ही था, रोज़ तो वह साइकिल से आ जाया करता था पर आज वह साइकिल से नहीं आया था, शायद अच्छा ही था जो नहीं आया था, नीर की एक बड़ी ही खूबसूरत आदत थी, वह हमेशा अपने घर से जब भी पैदल आता था तो घर से लात मारते मारते एक पत्थर सीधा स्कूल तक लेकर आता था और स्कूल से लात मारते मारते वही पत्थर पुनः घर छोड़ देता था।

आज जब उसने वह पत्थर को चौराहे से निकलकर लात मारी तो पहली लात में उसे अहसास हुआ कि जीवन में ठोकरें जरूरी हैं, ठोकरें न पड़े तो जीवन हिलता नहीं है, वह थमा रहता है एक ही जगह, पर अत्यंत आवश्यक ये नहीं कि वह ठोकरों पर ध्यान दे, उसे अपने लक्ष्य पर ध्यान देना चाहिए ताकि जब सभी ठोकरों का निष्कर्ष निकले तो वह अपनी यात्राओं की कठिनाइयों से परे जाकर अपने लक्ष्य यानी अपने घर पर होने का आनंद उठा सके। शायद नीर को उसका पत्थरों का ठोकर मारना आज उसके पहले प्रेम की सीढ़ी पर संघर्षों के आने का संकेत दे रहा था।

पहला प्रेम का अनुभव वैसा था जैसे किसी शांत जलधारा पर अचानक सूरज की किरण पड़ जाए और जल सोने की तरह चमक उठे। नीर और नियति की कहानी में यह अनुभव किसी अधूरी कविता का पहला शब्द है, जो स्वयं में संपूर्ण है, फिर भी आगे लिखे जाने की प्रतीक्षा में है। नीर ने नियति को पहली बार जब देखा था तो उसे लगा जैसे वह अपने ही किसी भूले हुए स्वप्न में प्रवेश कर गया हो। उसकी आँखों में वह गहराई थी जिसमें देखने वाला अपने भीतर उतरने लगता है।

वहीं, नियति के लिए नीर वह पहली बरसात थी, जिसकी सुगंध मन को वर्षों तक भिगोए रखती है। उनके बीच कोई औपचारिक परिचय नहीं था, पर मौन ने उनके लिए हजार भाषाओं का काम किया। यह प्रेम आकस्मिक था, पर उसका असर अनन्त था वह ऐसा लग रहा था मानों जैसे किसी शंख में छिपा हुआ समुद्र का स्वर सा महसूस हो रहा था। यह मिलन उस क्षण का प्रतीक है जब आत्मा स्वयं से बड़ी किसी सत्ता को पहचान लेती है जहाँ “मैं” और “तुम” के बीच की दूरी मिटकर केवल “हम” रह जाता है।

आज का युवा, जो तेज़ रफ़्तार, छोटे संवाद और अस्थायी रिश्तों में उलझा है, वह नीर और नियति की कथा से यह समझ सकता है कि पहला प्रेम कोई जल्दबाज़ी का निर्णय नहीं, बल्कि आत्मा की लंबी यात्रा का पहला मोड़ था। यह मोड़ हमें न केवल किसी और से जोड़ता है, बल्कि हमारी अपनी पहचान को भी एक नया अर्थ देता है। पहला प्रेम वह अनन्त नाद है, जो युगों से एक-सा गूंजता आया है, और हर बार, हर हृदय में, एक नयी कहानी बन जाता है। नीर उस मार्ग पर चलता हुए अपने पहले प्रेम की कई सारी परिभाषाओं को रचता हुआ उस पत्थर को अपने घर तक पहुंचा रहा था, उसके लिए मानों आज उसके मन के सारे युद्ध समाप्त हो गए थे और वह सड़क पर पड़ी पहली बरसात के बाद माटी के खुशबू की भांति महक रहा था और उसी की भांति फूलने भी लगा था, उसके चरित्र में आप एक परिचय जुड़ने वाला था, ये सब मात्र कयास थे या नीर का पहला प्रेम प्रासंगिक होने वाला था ये तो समय ही बताएगा, अगर उससे उत्तर मिल गया तो हो जाएगी ये एक कहानी और नहीं मिला तो रह जाएगी "एक कविता:- आधी और अधूरी"।

भारतीय प्राचीन साहित्य और दर्शन का मूल भाव समझें तो हम पाएंगे कि जीवन का हर अनुभव चाहे वह सुख हो या दुःख, मिलन हो या बिछोह एक गहरे ब्रह्मांडीय क्रम का हिस्सा है। ऋग्वेद से लेकर उपनिषद और कालिदास की काव्यभूमि तक, प्रेम को केवल हृदय की तड़प नहीं, बल्कि आत्मा की यात्रा माना गया है। नीर और नियति की कहानी में यह दृष्टिकोण एक ऐसे काव्यात्मक सेतु की तरह था जो वर्तमान के क्षणों को शाश्वत के साथ जोड़ देता है।

प्राचीन भारतीय दर्शन में ऋतुचक्र और संसार चक्र दोनों का गहरा स्थान है। जैसे वसंत में कली खिलती है और पतझड़ में पत्ते झरते हैं, वैसे ही प्रेम भी अपने समय में अंकुरित होता है, पर उसका अर्थ समय से परे फैलता है। नीर और नियति का मिलन केवल दो व्यक्तियों का संगम नहीं, बल्कि वह ऋतु-संक्रमण था जिसमें आत्माएं एक-दूसरे के साथ अपने स्वधर्म को पहचानती हैं।

भारतीय काव्यशास्त्र का रस-सिद्धांत बताता है कि प्रेम का श्रृंगार रस जब विरह के करुण रस से स्पर्श होता है, तब वह हृदय को सबसे गहराई से छूता है। नीर और नियति के संवाद में यह द्वैत स्वाभाविक रूप से उभरता है एक ओर मिलन की आभा, दूसरी ओर नियति की कठोर रेखाएं। ठीक वैसे ही जैसे गीता में कृष्ण कहते हैं "मामनुस्मर युध्य च" अर्थात कर्म करते हुए भी मेरा स्मरण करो और प्रेम को थामे रखो यही जीवन का धर्म है।

इस कथा में, नीर का प्रेम जल की तरह प्रवाही है। वह बहता है, आकार बदलता है, पर अपनी शुद्धता नहीं खोता। नियति, अपने नाम के अनुरूप, काल की तरह स्थिर और अपरिवर्तनीय है। दोनों का संगम ठीक वैसे है जैसे गंगा और सागर का जहाँ जल का मीठा और खारा मिलकर एक अनंत लहर बनाते हैं। यहां कौन खारा था और कौन मीठा ये आपको ज्ञात करना है।

जब इस प्रेमकथा को प्राचीन भारतीय दृष्टि से गढ़ा जाता है, तो यह केवल कहानी नहीं रहती यह एक आत्मानुभूति बन जाती है। यह हमें याद दिलाती है कि प्रेम कोई संयोग नहीं, बल्कि वह अदृश्य सूत्र है जो जन्म-जन्मांतर के अनुभवों को बाँधता है। उपनिषद का यह वाक्य यहाँ चरितार्थ होता है "तत् त्वम् असि" तुम वही हो, जो मैं हूँ, और हम दोनों उसी अनंत में एक हैं। नीर और नियति की कथा जब ऐसे दर्शन से बुनी जाती है, तो यह हृदय को छूने के साथ-साथ आत्मा को भी जागृत करती है।

यह केवल पढ़ी नहीं जाती यह भीतर कहीं जी जाती है, जैसे कोई पुराना गीत हो, जो समय के पार भी अपनी धुन में हमें बांधे रखता है। नीर इसी गीत को गुनगुनाता हुआ अपने घर के निकट पहुंच जाता है, उसके साथ वह अपना पत्थर भी लेकर जाता है, जिसे उसने लक्ष्य तक पहुंचाने का प्रण लिया था। जैसे पत्थर घर से निकलकर पुनः अपने घर आ गया था वैसे ही नीर आज नियति के साथ बिताए वो पलों और स्मृतियों को अपने घर में कलश प्रवेश करवाने वाला था।

नीर अपने पहले प्रेम को स्वीकृति दे चुका था, वह यह मान चुका था कि उसे प्रेम हो गया है, वह शाश्वत सत्य (जो कि कुछ नहीं था) उसकी भांति नियति को ऐसे रम रहा था जैसे वह उसके लिए ईश्वर हो चली थी, प्रेम में व्यक्ति प्रेमी को ईश्वर मान ही लेता है, फिर ये तो पहला प्रेम था!

!! पंद्रहवां अध्याय समाप्त !!

घर लौटना

कभी–कभी हम उसी आंगन में लौटते हैं जहां बचपन की हंसी बोई थी, पर पेड़ों की छांव अब किसी और ऋतु की है । कभी–कभी हम उसी दरवाज़े से गुजरते हैं जहां वो आंखें खड़ी मिलती थीं, पर अब चौखट पर सिर्फ़ हवा की ठंडी सांस टकराती है। घर लौटना...सिर्फ़ ईंट-पत्थर से बने आकार में प्रवेश करना नहीं होता, यह लौटना होता है उस एहसास में जहां दिल को लगे—"मैं तुम्हारे पास हूं, और तुम मेरे पास।" पर जब वो “तुम” वहां नहीं होते—तो दीवारें अपनी ऊष्मा खो देती हैं,और छत से टपकती खामोशी पूरे घर को अजनबी बना देती है। तब समझ आता है—घर कोई जगह नहीं, वो दिल है जहां प्रेम ठहरता है। और अगर वह दिल दूर हो जाए, तो चाहे कितनी भी बार लौटो, तुम बस लौटते हो...पर घर नहीं पहुंचते।

नीर और नियति दोनों अपने अपने घर पहुंच चुके थे, बस आज घर पहुंचने का अभिप्राय कुछ और था। नियति आज बाकी दिनों से अधिक खुश थी, कारण उसको ज्ञात न था, शायद वह प्रेम को स्वीकृति देने में अभी भी असहज थी इसलिए वह बस खुश थी कारण ढूंढना उसने बंद कर दिया था, कभी कभी हमें खुश रहना चाहिए, बिना कारण ढूंढे। अकारण खुशी जीवन के अनमोल पल होते हैं, शायद वही ऐसा वक्त होता है जब आप अपने लिए खुश हैं, कुछ मिलने पर मिलने वाली खुशी जिसका कोई कारण हो उसकी निर्भरता दूसरे वस्तु या व्यक्ति पर होती है, अकारण खुशी पर किसी की निर्भरता नहीं होती इसलिए उसके पल में चले जाने का कोई अर्थ नहीं बनाया जा सकता। नीर को खुश देख उसकी मां भी अचंभित थी, शायद उन्हें भी अकारण खुशी का कुछ कम अनुभव रहा होगा, वरना वो समझ जातीं।

नीर अपने घर में प्रवेश कर चुका था, उसने उस पत्थर को अपने ठिकाने पर रख दिया था, ताकि वह कल पुनः उसे विद्यालय मार्ग के दर्शन करा सके। नीर विद्यालय से ढाई बजे आता था, और साढ़े तीन बजे उसे अपनी गणित की कोचिंग पहुंचना होता था, इसलिए वह भागंभाग में सभी कार्य करता था।

उसने अपने विद्यालय के कपड़े उतारे, मुंह - हाथ धोया और खाने के लिए बैठ गया, उस समय के अधिकतम बालकों की आदत होती थी कि वह खाते समय या तो "छोटा भीम" देखते थे या "तारक मेहता का उल्टा चश्मा"। एक कार्टून था और दूसरा हास्य धारावाहिक, इस नाटक का नीर के जीवन पर बहुत अधिक प्रभाव था, वह उसे अपने जीवन का अभिन्न अंग मानता था तो जब भी समय मिलता वह उसे देखने बैठ जाता था, खाना खत्म होता है, आज खाने में चने की दाल, चावल, रोटी, मैथी-आलू की सब्ज़ी व सलाद था।

उत्तम भोजन पाने के बाद नींद से लड़ते हुए नीर कोचिंग की ओर निकलने के लिए तैयार हो जाता है और अपनी साइकिल पर बैठ वह गणित की कोचिंग पर पहुंच जाता है, यह साइकिल उसकी दीदी ने उसे उपहार स्वरूप दी थी इसलिए वह उसे बड़ा ही प्रेम करता था, नीर के जन्मदिन पर मिला उसे ये उपहार अत्यंत प्रिय था, यूं तो नीर ने आज तक कभी अपने जन्मदिन को लेकर बहुत उत्सुकता नहीं जताई थी पर जितना मैं उसे जनता था, उसे अपने जन्मदिन अत्यंत प्रिय था।

कोचिंग में पढ़ने के बाद नीर अपने घर पुनः लौट आने के लिए निकल जाता है, नीर के जीवन की यही प्रक्रिया वह रोज़ दोहराता था, घर से स्कूल, स्कूल से घर, घर से कोचिंग और फिर कोचिंग से घर। इसके अलावा उसका कहीं भी जाना मानों वर्जित सा था, घर वालों की इजाज़त भी न थी और उसकी खुद ही इच्छा भी कम ही हुआ करती थी। वह निःसंदेह ही कुछ पल भी देर हो जाता तो घर से फोन आने लगता था, सो वह समय से जाना अधिक स्वीकार करता था।

इतना अच्छा दिवस ऐसे तो नहीं जाने वाला था, नीर विद्यालय और कोचिंग करके आज के दिवस को पूर्ण समझ चुका था, वह घर से कुछ ही दूरी पर था सांझ के 6:45 बज चुके थे, उसने आज दो बैच की क्लास की थी और तीसरे बैच की क्लास वह छोड़ चला था, वरना उसके रोज घर आने का समय लगभग साढ़े आठ बजे का था। जैसे ही वह अपने घर की गली में प्रवेश करता उसे उसका एक मित्र मिल जाता है, अमीश याद है आपको? वह उसके घर की पीछे की गली में ही रहता था, दोनों में अच्छी मित्रता भी थी और वह साथ में प्रेम भाव से भी रहते थे, एक विषय में उनके विचार कुछ अधिक ही मिलते थे....नियति।

अब जब दो दोस्त मिले हैं तो निःसंदेह ही सभी प्रकार की बातों का नमूना पेश किया जाएगा, अमीश बातों ही बातों में कुछ ऐसी बातें बोलता है जो शायद नीर को पसंद न आईं, वह थोड़ा आश्चर्यचकित भी था और असमंजस में भी, उसे समझ न थी कि आखिर उसके साथ प्रकृति ये कैसा व्यूह रच रही थी। अमीश को लगता था मानों नियति सिर्फ़ उससे बड़े प्रेम भाव से बात करती थी और नीर को लगता था मानों वह कुछ अधिक ऊपर का दर्ज़ा रखता था।

राजन मुझे तो दोनों ही बातों में अतिशयोक्ति का संशय प्रतीत हो रहा था। नीर अमीश की बातें सुनता और और कुछ अधिक न बोलने की बजाय अपने मनों में युद्ध शुरू कर दिया, की सत्य क्या है, क्या जो उसने अनुभव किया था वह सत्य था या जो अमीश बोल रहा था वह सत्य था। निःसंदेह ही वह इस विचार को लेकर चिंतित था, उसके दिवस भर की खुशी धीरे धीरे करके पत्थर होती जा रही थी, प्रकृति मानों उसे पत्थर होने के लिए कह रही हो....क्या उसके लिए उसका पत्थर होना अच्छा था?

नीर और अमीश की लंबी वार्तालाप के बाद वह दोनों अपने अपने घर के लिए निकल जाते हैं, नीर घर पहुंच जाता है, दरवाज़े पर पहुंचते ही उसके फोन की घंटी बजती है....

वह फोन देखता है तो उसमें नंबर के ऊपर नाम प्रदर्शित होता है, उसके चेहरे के हाव भाव ऐसे दिखते हैं मानों जंगल से सारे वृक्षों को काट दिया गया हो, वह वीरान सा महसूस कर रहा था.....उसे नियति का फोन आया था। वह फोन उठाने में असमर्थ था, वह अपने घर के दरवाज़े पर पहुंच चुका था, पर फोन आने से पहले वह उदास था अब उसकी उदासी जा चुकी थी, वह बिना किसी भाव के था और सोच रहा था कि शायद, घर पहुंचना हमेशा घर पहुंचना नहीं होता। वह फोन उठाने की बजाय उसे छोड़ देता है और घर के अंदर प्रवेश कर जाता है।

नीर और नियति की कहानी में “घर पहुंचना” केवल एक भौगोलिक या भौतिक स्थान पर लौटना नहीं है, बल्कि एक ऐसे भाव-जगत में प्रवेश करना है, जो आत्मा के भीतर बसा है। यहां “घर” किसी चारदीवारी का नाम नहीं, बल्कि उस ‘सत्य’ का प्रतीक है, जिसे मनुष्य उम्र भर खोजता रहता है अपनी जड़ों की, अपने अर्थ की, और अपने होने की पहचान की खोज।

“घर” दो रूपों में अस्तित्व में आता है एक बाह्य, जो समय और स्थान से बंधा है, और दूसरा आंतरिक, जो अनादि और अनंत है। नीर के लिए घर लौटना सिर्फ बचपन की गलियों में कदम रखना नहीं, बल्कि उन स्मृतियों, टूटे वचनों और अधूरी चाहतों से सामना करना भी है, जिनसे वह भागता रहा था। वहीं नियति के लिए घर पहुंचना एक निरंतर यात्रा है जहां हर ठहराव एक नया प्रश्न खड़ा करता है: क्या घर वही है जहां से हम आते हैं, या वह जहां हमें स्वयं को पहचानने का अवसर मिलता है?

यह विचार प्रेम और वियोग की संरचना में गहराई जोड़ता है। प्रेम में भी “घर पहुंचना” एक भावनात्मक वापसी थी जहां दो आत्माएं एक-दूसरे में अपना आश्रय खोजती हैं। लेकिन नियति के संकेत यह बताते हैं कि कभी-कभी जिस जगह को हम घर समझते हैं, वहां पहुंचने के बाद भी आत्मा अनाथ महसूस कर सकती है। यह विरोधाभास ही इस वाक्य की गहराई है घर पहुंचना, घर पहुंचना नहीं होता।

नीर और नियति की कहानी हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि शायद असली घर कोई स्थान नहीं, बल्कि वह क्षण है जब हम स्वयं से ईमानदारी से मिलते हैं और यह मिलन कभी भी, कहीं भी, किसी भी मोड़ पर हो सकता है। चाहे वह किसी पुराने आंगन में हो, किसी अपरिचित शहर की भीड़ में, या फिर किसी प्रिय की आंखों में ठहरी हुई चुप्पी में। नीर के लिए ये क्षण अमीश के जाने के बाद नियति के कॉल में था।

!! सोलहवां अध्याय समाप्त !!

नेति नेति

रात का समय हो गया था। बाहर दिसंबर की ठंडी हवा चल रही थी, जो खिड़की के पर्दों को हल्का-हल्का हिला रही थी। कमरे में बस टेबल लैंप की पीली रोशनी थी। नीर किताबों के बीच झुका बैठा था उसके सामने उपनिषद का एक पन्ना खुला था, जिस पर मोटे अक्षरों में लिखा था :

"नेति नेति"- यह नहीं, यह भी नहीं।

वह कई देर से शब्दों को देख रहा था, जैसे उनमें कोई आवाज़ छिपी हो जो उससे बात करना चाहती हो। लेकिन ध्यान बार-बार भटक जाता था... नियति की ओर। उसकी आवाज़, उसकी हँसी, उसकी चुप्पी सब कुछ याद आने लगता।

फोन पास में पड़ा था। नीर ने उसे हल्के से उठाया, बस स्क्रीन जलाकर देखा और तभी मानो नियति ने उसके मन की सुन ली हो फोन की स्क्रीन पर उसका नाम चमक उठा।

नीर (विचलित मन से): "नियति..."..?

नियति (आवाज़ में एक हल्की थकान): "नीर... जाग रहे हो?"

नीर: "हाँ... और लगता है, तुम भी किसी सोच में डूबी हो।"

नियति: "हाँ... आज पूरे दिन तुम्हारे कहे एक वाक्य ने मुझे घेर रखा है।"

नियति: ....!

नीर: "कौन-सा?"

नियति: "तुमने कहा था... कि प्रेम को समझने के लिए नेति नेति को समझना पड़ेगा। मैं... आज यही सोचती रही।"

नीर की आँखों में एक धीमी चमक आ गई, उसके मुख पर हल्की सी मुस्कान आई और उसने किताब बंद कर दी।

नीर: "तो फिर... आज की रात हमारी इसी पर हो।"

नियति: "लेकिन नीर, नेति नेति तो आत्मा और ब्रह्म के बारे में है, फिर इसका प्रेम से क्या संबंध?"

नीर: "नियति, प्रेम भी तो वही है, जिसे जितना परिभाषित करो, वह उतना ही हाथ से फिसलता है। जिस तरह आत्मा को न देह कहा जा सकता है, न मन, न बुद्धि, उसी तरह प्रेम को न केवल चाह कह सकते हैं, न केवल साथ, न केवल त्याग। इन सबको हटाना पड़ता है... ये नहीं, ये भी नहीं... और तब जो बचता है, वही प्रेम है।"

नियति (धीरे से): "तो जो बचता है... वही उसका सत्य है?"

नीर:"हाँ।"

नियति: "लेकिन नीर, हम तो प्रेम को स्पर्श, शब्द, और यादों में महसूस करते हैं। अगर ये सब न हों... तो क्या प्रेम रह जाएगा, ये सब हटाने पर क्या बचेगा?"

नीर: "यही तो नेति नेति कहती है ये सब प्रेम के स्वरूप हैं, उपाधियां हैं, लेकिन प्रेम इनसे बंधा नहीं। अगर ये सब छिन जाएँ और फिर भी भीतर वह भाव जीवित रहे तो वही उसका उच्चतम रूप है।"

नीर कुछ पल रुककर बोला...

"सोचो... अगर हम किसी दिन मिलना बंद कर दें, बात करना बंद कर दें, यादें धुंधली हो जाएँ फिर भी भीतर कहीं यह अनुभूति बनी रहे कि हम जुड़े हैं, कितना भी दूर जाने पर हमारे मन में हमेशा एक दूसरे के लिए वो भाव बना रहे, तो वही असली प्रेम है।"

नियति (आँखें नम करते हुए): "मतलब... हमारा होना सिर्फ साथ रहने से नहीं है?"

नीर: "नहीं... साथ होना एक रूप है, लेकिन प्रेम उसका आधार नहीं, उसकी छाया है।"

बाहर से हवा के झोंके के साथ हल्की बारिश की खुशबू आई। नियति खिड़की के पास खड़ी थी, फोन कान से लगाए। ठंड के समय बारिश का आ जाना बड़ा ही सुहावना सा हो गया था। और इनके कहानी रूपी कविता में तो न जाने ये ठंड की बारिश कितनी ज़रूरी थी।

नियति:"तो क्या तुम मुझे मेरे रूप में प्रेम नहीं करते?"; नियति ने मन में पूछा।

नीर (धीमे स्वर में): "अगर मैं तुम्हारे रूप, तुम्हारी आवाज़, तुम्हारी आदतों से प्रेम करता, तो वह बदलते ही खत्म हो जाता। मैं उस भाव से प्रेम करता हूँ जो इन सबसे परे है जिसे न समय छू सकता है, न दूरी।" (नीर ने मन में उत्तर दिया)।

नियति: "तो नेति नेति का मतलब है... हर पहचान हटाना?"

नीर: "हाँ। जैसे नदी को नाम, रंग, और किनारे से मुक्त कर दो तो बस प्रवाह बचता है। प्रेम वही प्रवाह है।"

फोन पर कुछ देर चुप्पी रही। लेकिन यह चुप्पी खाली नहीं थी। उसमें नीर के शब्द गूँज रहे थे, और नियति का मन किसी नए आकाश में उड़ रहा था। कई बार कुछ बातों का मन में रह जाना बोले जाने से बेहतर होता है।

नियति: "नीर... कभी-कभी मैं चाहती हूँ कि तुम आकर कहो ‘हाँ, नियति, मैं तुम्हारा हूँ।’ मुझे पकड़ लो... थाम लो..." (नियति ने मन में कहा)।

नीर (मन में मुस्कुराते हुए): "और तब मैं कहूँगा ये भी प्रेम नहीं, यह भी नहीं, पर चाहूंगा ज़रूर कि ये हो।"

दोनों हँस पड़े। लेकिन इस हँसी के भीतर एक नमी थी, जैसे दोनों जानते हों कि प्रेम को पूरी तरह जीने के लिए उसके बाहरी रूपों से आगे जाना होगा।

नियति: "तो क्या प्रेम में कोई अपेक्षा नहीं होनी चाहिए?"

नीर: "नेति नेति का मतलब यह नहीं कि कुछ चाहो ही मत बल्कि यह कि चाह के पीछे का सत्य देखो। अगर चाह में खोने का डर या अधिकार का मोह है, तो वह प्रेम नहीं, बंधन है। लेकिन अगर चाह सिर्फ अनुभव की इच्छा है, तो वह प्रेम है। मैं तुम्हें चाहता हूं तो निःसंदेह ही मैं नहीं बोलना चाहूंगा, तुम्हें समझ जाऊंगा, तुम मुझे चाहो तो निःसंदेह ही तुम भी कुछ नहीं बोलना चाहोगी तुम समझ जाओगी, प्रेम समझ है।"

नियति: "मतलब... पकड़ नहीं, प्रवाह?"

नीर: "हाँ... और वह प्रवाह हर ‘नहीं’ के बाद भी बचा रहे। यही नेति नेति है जहाँ सब हटाने के बाद भी जो बचा, वही सत्य है।"

नीर ने खिड़की के बाहर देखा बारिश बंद हो गई थी बादलों के पीछे आधा चाँद दिखाई दे रहा था। चांद नीर का पसंदीदा था।

नीर: "देखो नियति... यह चाँद बादलों से ढका है, लेकिन तुम जानती हो कि वह है। प्रेम भी ऐसा है कभी भाव दिखते हैं, कभी छिप जाते हैं लेकिन उनका होना स्थायी है।"

नियति: "तो फिर... हम प्रेम को छूने की जगह महसूस करें?"

नीर: "हाँ, और महसूस करने के लिए परिभाषाएँ छोड़नी होंगी। नेति नेति यही सिखाती है कि जब तक हम प्रेम को नाम, रूप, या रूपक में बाँधते रहेंगे, हम उसके असल स्वरूप से दूर रहेंगे।"

रात गहरी हो गई थी और दोनों की आवाज़ें अब धीमी, लेकिन स्थिर हो रही थीं।

नियति: "नीर, आज तुम्हारे शब्दों ने मेरा देखने का तरीका बदल दिया। अब मैं तुम्हें सिर्फ तुम्हारे रूप में नहीं, बल्कि उस भाव में देखूँगी जो इन सबसे परे है।"

नीर: "और मैं तुम्हें उसी भाव में महसूस करता रहूँगा; चाहे हम साथ हों या न हों, शब्द हों या न हों।" फोन के माध्यम से चन्द्र वार्ता अंतिम चरण में पहुंच चुकी थी।

प्रेम इस संसार का सबसे जटिलतम कार्य और सबसे सरल क्रिया है, वह निःसंदेह ही होने में अधिक विश्वास रखती है करने में कम। अक्सर हम ये विचार करते हैं कि हम जिसे प्यार करते हैं वो व्यक्ति हमारे लिए परिवर्तित हो जाए वो हमारे अनुसार चलने लगे, वो हमारे भावों को समझने लगे, वो हमें सब बताए हमसे सब पूछें इत्यादि इत्यादि, इसमें तनिक भी दोष नहीं है न ही ऐसा कुछ है जो प्रेम में नहीं चाहा जा सकता हो, दो प्रेम करने वालों के लिए ये आम बात है, पर फिर बंधन कहां बना? जहां हम ये ठान लेते हैं यही सत्य है, बस इतना ही है प्रेम में होना वाहन हमें समस्याएं दिखाई देने लगती हैं। तुम मेरे हो जानते अगर तो जाते न ऐसे जैसे जाता है सर्प अपनी केंचुली को छोड़कर लिपट जाने के बाद, चंदन से!

उस रात, नीर और नियति दोनों ने महसूस किया कि प्रेम का उच्चतम रूप न पाने में है, न खोने में, बल्कि उस शून्यता को अपनाने में है जहाँ 'मैं' और 'तुम' भी विलीन हो जाते हैं, और बस एक शुद्ध, अनाम अस्तित्व रह जाता है। वह चंद्र को निहारते निहारते सो जाते हैं। ये वार्ता ही थी जो नीर के जीवन का ध्येय बनने वाली थी, क्या नियति उसे सचमें मिलेगी या वह अपने नेति नेति के सिद्धांत को अपनाकर नियति के साथ न होने पर भी अपने प्रेम को बरकरार रख पाएगा। ये तो समय के गर्भ में ही है, अगर उत्तर मिल गया तो हो जाएगी ये एक कहानी और नहीं मिला तो रह जाएगी "एक कविता:- आधी और अधूरी"।

!! सत्रहवां अध्याय समाप्त !!

महामारी

इसी कश्मकश में ग्यारहवीं कक्षा की अंतिम परीक्षाएं आ जाती हैं। ग्यारहवीं समाप्त होने को थी और नीर और नियति अभी तक इस बात को मान पाने में असमर्थ थे कि वह इस संबंध को कोई नाम दे पाते। एक प्रेमी जोड़े जैसा उनमें सब था, शायद उससे अधिक की यात्रा भी वह कर चुके थे, प्रेम में जब अधिक होता है तो दर्शन होता है, अध्यात्म होता है फिर वह प्रेम मात्र शरीर का अनुबंध नहीं रह जाता वह आत्मा में अमर हो जाता है। नीर और नियति वैचारिक रूप से वहां तक की यात्रा कर चुके थे, कक्षा समाप्त होने पर अब उनके विद्यालय जीवन का बस एक वर्ष बचा था, दसवीं की बेला लौटने वाली थी, जीवन की सबसे आवश्यक कड़ी जुड़ने वाली थी, वह थी बारहवीं कक्षा, उस ज़माने में इसे रोज़गार और बेरोजगार होने की बीच की कड़ी माना जाता था, जहां से आपका भविष्य कैसा होगा इसका निर्धारण किया जाता है, इस वर्ष भी बोर्ड्स नाम का भूत सबको डराने वाला था।

ग्यारहवीं कक्षा की अंतिम परीक्षाएँ नीर और नियति के जीवन में ऐसे उतरीं मानो समय का कोई महत्वपूर्ण मोड़ आ पहुँचा हो, वे दोनों इस कश्मकश में थे कि अपनी भावनाओं को किस नाम से पुकारें, प्रेम कहें, मित्रता का विस्तार मानें या उसे कोई और गूढ़ परिभाषा दें, परंतु भीतर-भीतर वे यह महसूस कर रहे थे कि यह जो संबंध उनके बीच जन्म ले चुका है, वह साधारण नहीं है। यह केवल हँसी-मजाक या किशोरावस्था की क्षणिक उत्तेजना भर नहीं था, इसमें एक ऐसा आकर्षण था जो आत्मा को छूता था, जो उन्हें बार-बार विचार और दर्शन के गहरे सागर में धकेल देता था।

कक्षा के अंत में वे दोनों इस सत्य के साथ खड़े थे कि विद्यालय जीवन का एक बड़ा हिस्सा अब पीछे छूट चुका है और आगे केवल बारहवीं कक्षा ही शेष है, वह बारहवीं जिसे उस दौर में जीवन और भविष्य की निर्णायक कड़ी माना जाता था, जैसे रोजगार और बेरोजगारी, अवसर और निराशा, आशा और शून्यता के बीच एक सेतु। नीर और नियति दोनों जानते थे कि यह आने वाला वर्ष न केवल उनकी शिक्षा और करियर को प्रभावित करेगा बल्कि उनके बीच पनपते हुए इस अनाम रिश्ते की दिशा भी तय करेगा।

मार्च का महीना जैसे एक सामान्य शुरुआत के बाद अचानक भारी हो उठा। वह महीना जो आमतौर पर परीक्षा, रिज़ल्ट और नई कक्षा की हलचल के बीच गुजर जाता था, इस बार एक ऐसे भय के साथ आया जिसने पूरी दुनिया को थमा दिया। चीन से उठकर धीरे-धीरे विश्व के हर कोने में फैल चुका एक वायरस अब भारत के दरवाज़े पर दस्तक दे चुका था। प्रारंभ में किसी को लगा था कि यह केवल अख़बार और टीवी की खबर भर है, परंतु देखते ही देखते यह महामारी का रूप ले बैठा। कोरोना; यही नाम था उस अदृश्य शत्रु का, जिसने एक झटके में सारे शहर, सारे विद्यालय, सारे बाज़ार और सारी सड़कें खाली कर दीं। सरकार ने मार्च के मध्य में घोषणा कर दी कि पूरा देश लॉकडाउन में जाएगा। न कोई कहीं जा सकेगा, न कहीं से आ सकेगा। यह स्थिति मानो किसी ने घड़ी की सुइयों को रोक दिया हो और मनुष्यता को एक कैद में डाल दिया हो।

नीर और नियति के लिए यह एक अजीब झटका था। अब तक जो प्रेम विद्यालय की चहल-पहल में, कॉरिडोर की भीड़ में, कक्षा के बीच साझा नोट्स और मैदान की हँसी में खिलता था, वह अचानक निर्वासन में भेज दिया गया। न कोई मुलाकात, न कोई साझा नजर, न कोई पास बैठना सिर्फ मोबाइल स्क्रीन, कॉल और अधूरे मैसेज। दोनों का संवाद अब शब्दों तक सीमित हो गया था। नीर देर रात नियति से पूछ बैठता, "तुम हो न?" और नियति हल्की थकी हुई आवाज़ में कहती, "हाँ, पर जैसे खुद से भी नहीं हूँ..."

यह उत्तर केवल शब्द नहीं थे, यह उस मानसिक बोझ की झलक थी जो लॉकडाउन ने हर दिल पर डाल दिया था। घर की चारदीवारी अब सुरक्षा भी थी और कैद भी। बाहर की दुनिया मौत के डर से भरी थी और भीतर की दुनिया अकेलेपन की गूँज से।

इस महामारी का मनोवैज्ञानिक प्रभाव उनके जीवन पर गहराई से पड़ा। किशोरावस्था का समय वैसे भी पहचान और आत्म-खोज का समय होता है, और जब उस पर एक वैश्विक त्रासदी का बोझ लाद दिया जाए, तो उसका असर केवल बाहर की गतिविधियों पर नहीं, भीतर की आत्मा पर भी होता है। नीर को लगता कि भविष्य अचानक अनिश्चित हो गया है। बारहवीं की परीक्षा, कॉलेज का सपना, करियर की योजनाएँ सब धुंधले पड़ गए थे। उसे लगता कि जीवन का कोई निश्चित धरातल ही नहीं है। नियति के भीतर भी प्रश्न उठते कि क्या यह दुनिया सचमुच इतनी नाजुक है कि एक अदृश्य कण उसे थमा सकता है? यह भय और असुरक्षा उनके प्रेम को भी चुनौती देती, क्योंकि वे सोचते कि यदि संसार ही स्थिर नहीं है तो उनका संबंध किस आधार पर स्थिर रहेगा। परंतु इन सवालों के बीच एक और अनुभव जन्म ले रहा था वह था प्रेम का रूपांतरण।

नीर और नियति ने देखा कि दुनिया किस तरह बदल रही है। परिवार, जो सामान्य दिनों में केवल मिलन-जुलन की जगह थे, अब कैद में एक-दूसरे का सामना कर रहे थे। कहीं निकटता बढ़ रही थी, कहीं झगड़े गहराए। ग़रीब मज़दूर अपने बच्चों को कंधे पर लेकर सैकड़ों किलोमीटर पैदल चल रहे थे। भूख और बेरोजगारी हर गली में चीख रही थी। टेलीविजन पर आंसुओं से भरी आँखें और थके हुए कदमों के दृश्य देखकर नीर की आत्मा में ग्लानि होती कि वह केवल नियति से अपनी दूरी की पीड़ा पर रो रहा है जबकि वास्तविक त्रासदी कहीं और घट रही है। नियति के मन में करुणा उमड़ती और वह नीर से कहती, "शायद प्रेम केवल एक-दूसरे के लिए तड़पने का नाम नहीं है, यह दूसरों की पीड़ा को भी महसूस करना है।" इस दृष्टि से उनका प्रेम एक व्यक्तिगत अनुभव से सामाजिक चेतना में रूपांतरित होने लगा।

इस महामारी ने उन्हें गहराई से झकझोरा, नीर ने एक दिन नियति से कहा, "तुम्हें नहीं लगता कि यह समय हमें 'नेति-नेति' की तरह सिखा रहा है? जो कुछ निश्चित मानते थे, वह सब मिटता जा रहा है।" नियति ने पल भर चुप रहकर कहा, "हाँ, पर नेति-नेति का अर्थ केवल नकार नहीं है, यह उस सत्य तक ले जाने का मार्ग है जो शाश्वत है। शायद यही प्रेम है, जो किसी महामारी से नष्ट नहीं होता।" इस संवाद ने उनके संबंध को और भी गहरा कर दिया। अब यह प्रेम केवल मिलन और हँसी तक सीमित नहीं था, यह आत्मा का अनुभव बन रहा था।

लॉकडाउन के लंबे दिनों और रातों में दोनों ने अपने-अपने भीतर झाँकना शुरू किया। नीर ने कविता लिखना शुरू किया जिसमें महामारी का भय, अकेलापन और प्रेम की तड़प झलकती। नियति ने डायरी लिखी जिसमें जीवन के प्रश्न थे क्या हम फिर से वैसे ही लौट पाएँगे? वे दोनों अपने लेखन को एक-दूसरे से साझा करते। धीरे-धीरे उन्हें यह समझ आया कि यह समय केवल परीक्षा नहीं बल्कि दीक्षा भी है। यह दीक्षा उन्हें जीवन के गहरे अर्थ समझा रही थी।

पहले उनका प्रेम साझा पलों और पास बैठने की सहजता में प्रकट होता था, अब वह प्रतीक्षा, धैर्य और आत्मिक संवाद में बदल गया। उन्होंने जाना कि प्रेम केवल स्पर्श में नहीं, सुनने में भी है; प्रेम केवल मिलने में नहीं, प्रतीक्षा में भी है; प्रेम केवल साथ चलने में नहीं, साथ सोचने में भी है। यह महामारी, जो उनके लिए एक श्राप की तरह आई थी, प्रेम को एक नए आयाम में ले गई थी।

फिर भी भविष्य का प्रश्न उनके सामने खड़ा था। बारहवीं कक्षा अब और भी कठिन लग रही थी ऑनलाइन कक्षाएँ, अनिश्चित परीक्षाएँ और करियर की चिंता। पर इन सबके बीच एक गहरा प्रश्न था। क्या यह प्रेम विद्यालय की दीवारों से आगे जीवित रहेगा? महामारी ने उन्हें यह सोचने पर मजबूर किया कि प्रेम केवल "अभी" की बात नहीं है। यदि प्रेम ने महामारी का सामना कर लिया है, तो वह जीवन की अन्य चुनौतियों को भी सह लेगा।

पूरा वर्ष घर में ही बीता जा रहा था, उनका विद्यालय जीवन खत्म होता जा रहा था, नीर यह विचार कर रहा था कि जब भी अगली बार वह नियति से मिलेगा वह अपने हृदय की बात उससे प्रत्यक्ष रूप से व्यक्त कर देगा, वह उस एक दिवस का इंतज़ार कर रहा था कि कब ये लॉकडाउन खत्म हो और कब वह इस मन में चल रहे प्रेम को और हृदय में चल रही वार्ता को प्रत्यक्ष रूप से नियति को सुना पाए और उसे ये अहसास दिला पाए कि शायद हां; वह उसे मित्र होने से अधिक मानता है।

उसे लगा था कि बारहवीं की परीक्षाओं तक उसे ये मौका अवश्य ही मिल जाएगा, परंतु वो परीक्षाएं भी स्थगित हो गई, लॉकडाउन कुछ समय के लिए और बढ़ा दिया गया, जैसे तैसे करके उन्होंने बारहवीं को पास कर लिया था, उस पूरी बारहवीं कक्षा में मेरी स्मृति में शायद ही वह कभी एक आदि बार मिले होंगी, विद्यालय के किसी काम से वो भी सभी दोस्तों के साथ।

विद्यालय समाप्त हुआ, नीर और नियति दोनों ही उत्तम नंबरों से पास हुए, नीर ने अपने विद्यालय में उच्चतम अंक प्राप्त किए क्योंकि उसके ग्यारहवीं और बारहवीं दोनों में ही अच्छे अंक थे, तो अंतिम परीक्षाएं न होने पर भी उसके सभी अंक मिलकर और कक्षाओं में उसका प्रदर्शन देखते हुए उसे सबसे अधिक अंक दिए गए, वह बेहद खुश था कि उसे अब अच्छा कॉलेज मिल जाएगा। नियति के अंक भी अच्छे थे और वह भी बहुत खुश थी, दोनों प्रथम श्रेणी से पास हो चुके थे, यूं तो उनका मिलना ग्यारहवीं के बाद हुआ ही नहीं था परंतु फोन से माध्यम से उनकी बात होती रहती थी और चूंकि लॉकडाउन की वजह से घर के सभी सदस्य भी घर पर ही थे तो अधिक बातचीत करना दोनों के लिए ही संभव भी नहीं थी, शायद यही कारण रहा होगा कि धीरे धीरे करके उनकी बातें कम होने लगी थीं, और परीक्षाओं के परिणाम आते आते वह बहुत ही कम संवाद में बचे हुए थे, इसका अर्थ ये न था कि उनके प्रेम में कोई कमी थी उनपर परिस्थितियों की मार अधिक थी और फिर ये तो आधिकारिक रूप से प्रेम की किसी संज्ञा में अभी तक आया भी नहीं था।

स्कूल खत्म होते ही कॉलेज में जाने की होड शुरू हो गई थी, धीरे धीरे चीज़ें खुलने लगी थीं, लॉकडाउन खत्म होने लगा था और सभी चीजें सामान्य अवस्था में आने लगी थी २०२१ अपने अंतिम समय में प्रवेश कर रहा था और ये दो वर्ष कैसे और कब बीत गए थे किसी को कोई आभास न था, इन महीनों में न जाने कितने प्रसंग घटित हुए मैं क्या ही बताऊं, नीर रोज़ मुझे फोन करके अपने जीवन के व्याख्यान सुनाया करता था और मैं उन्हें अपनी स्मृति में संजो लिया करता था।

नीर और नियति दोनों ही अपने भविष्य की चिंता में व्यस्त हो गए थे मानों कुछ हुआ ही न हो, नियति ने ग्वालियर में ही अपने कॉलेज के जीवन को व्यतीत करने का निर्धारण कर लिया था, नीर के मन में विचार कुछ अधिक बड़े थे, वह भविष्य का निर्माण करने में विश्वास रखने वाला बालक था और उसके घर पर भी ये कहीं न कहीं पूर्व निर्धारित हो चुका था कि वह निःसंदेह ही अगर अच्छे नंबर प्राप्त किया तो दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रवेश पाएगा।

दिल्ली विश्वविद्यालय उस समय भारत के उच्चतम विश्वविद्यालयों में से एक था, यूं तो गांव से ग्वालियर आए एक बालक के लिए दिल्ली जैसे शहर की कल्पना करना भी आसान न था, परंतु उसके अथक प्रयासों से उसे दिल्ली विश्वविद्यालय में एडमिशन मिल जाता है और वह दिल्ली जाने की अपनी तैयारी को बुन लेता है, वह भविष्य की रेखाओं को अपनी कलम से अपने हाथों पर उकेरने लगता है। उस समय अपने अपने रास्तों पर नए ढंग से चलने की इच्छा मानो बाकी सभी इच्छाओं के ऊपर सतह बनाती हुई दिखाई पड़ रही थीं। जीवन में कुछ नया मिलने पर पुराने को भूलने का इतिहास सदियों से अपनी प्रासंगिकता को बनाए हुए था। २०२१ के अंतिम त्रैमासिक में दोनों के रस्ते निर्धारित हो गए थे, वह दोनों अपनी अपनी यात्रा पर निकलने को तैयार थे, नियति ग्वालियर में ही रहने वाली थी और नीर दिल्ली का निवासी हो चुका था।

परंतु उनके प्रेम का क्या? जिस प्रेम की कथा को हम अभी तक सुनते आए उसका क्या? दोनों ने अपने रस्ते मानों ऐसे चुन लिए हों कि वो दोनों अनजाने थे। उनके व्यक्तिगत भविष्य का क्या? नीर और नियति महाविद्यालय में तो प्रवेश कर चुके थे परंतु उनकी वो चर्चाओं का अर्थ क्या था जो उन्होंने नेति नेति से होते हुए कोरोना जैसी महामारी के प्रकोप के साए तले की थीं। उन्होंने अपने शैक्षणिक भविष्य को तो चुन लिया था पर उनके प्रेम के भविष्य का क्या? ये सारे प्रश्नों के उत्तर समय के गर्भ में थे, अगर आपको ये उत्तर मिल गए तो हो जाएगी ये एक कहानी और नहीं मिले तो रह जाएगी ये "एक कविता; आधी और अधूरी"।

!! अठारहवां अध्याय समाप्त !!

**"प्रेम एक कार्य नहीं क्रिया है, उसको करना नहीं पड़ता वह हो जाता है।
प्रेम समाज का नहीं दर्शन का विषय है, जिसे सबको पढ़ना चाहिए"**

अक्षित कुमार भदौरिया, दिल्ली विश्वविद्यालय के किरोड़ीमल कॉलेज से इतिहास में स्नातक हैं और वर्तमान में दिल्ली विश्वविद्यालय से ही इतिहास में स्नातकोत्तर कर रहे हैं। मूलतः ग्वालियर, मध्य प्रदेश से आते हैं एवं 2024 में भारत निर्वाचन आयोग की ओर से कॉलेज एम्बेसडर भी रह चुके हैं। वे एक स्वतंत्र शोधकर्ता हैं, जिनका मुख्य विचार इतिहासलेखन में भारतीय दृष्टिकोण को स्थापित करना है। कई शैक्षणिक सम्मेलनों का हिस्सा रह चुके हैं एवं कई पत्रिकाओं में उनके लेख और शोध पत्र प्रकाशित हुए हैं। उन्होंने "शूद्रः एक दिव्य वर्ण" और "काँटे का वृक्ष" नामक दो पुस्तकों के लेखन कार्य भी किया है। उन्होंने हिंदी में 150 से अधिक कविताएँ और कई भजन लिखे हैं और उन्हें भारत के शिक्षा मंत्री द्वारा उनकी रचनाओं के लिए सम्मानित किया गया है। वे दाक्षी आंदोलन के संस्थापक और निदेशक हैं। दाक्षी आंदोलन के माध्यम से उनका विचार भारत की ज्ञान की संस्कृति को पुनः स्थापित करना है ताकि विश्वविद्यालयों में पढ़ रहे छात्र आधुनिकता के साथ भारतीय ज्ञान परंपरा के विचार को भी साथ साथ लेकर चल सकें।

ISBN 978-93-343-8606-6
9 789334 386066